राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

Www.gauravshalibharat.com

गौरवशाली भारत

वर्ष : 11
अंक : 356
पृष्ठ : 08
नई दिल्ली
गुरुवार 07 जूलाई 2022
मूल्य : 1.50/-
नई दिल्ली से प्रकाशित
RNI No .DELHIN/2011/38334

मुख्य अपडेट | पेज 3 प्रदेश पूर्वांचल मोर्चा अध्यक्ष कौशल मिश्रा की अगुवाई में डॉ मुख़र्जी की जयंती पर प्रदेश के सभी जिलों के विभिन्न 14 जगहों पर स्वच्छता | पेज 5 आगरा में सामूहिक आत्महत्या : भावुक सुसाइड नोट लिख पति-पत्नी और बेटी ने खुद को लगाई फांसी | पेज 7 तालिबान ने 21 साल बाद खोद निकाली मुल्ला उमर की कार, अमेरिका से बचने को गाड़कर भागा था

नई दिल्ली में हैदराबाद के श्री विनायक नाट्यमंडली सुरभि थिएटर के 5 नाटकों के समापन समारोह में केंद्रीय पूर्वोत्तर क्षेत्र के संस्कृति, पर्यटन और विकास मंत्री (डीओएनईआर), श्री जी. किशन रेड्डी।

22 राज्यों में भारी बारिश

कुल्लू में बादल फटा, नाले में बाढ़ से कई लोग बहे; दिल्ली में अलर्ट, मुंबई में पानी भरा

एजेंसी

नई दिल्ली/मुंबई। पूरे देश में मानसून आ गया है। ज्यादातर हिस्सों में बारिश जारी है। अगले चार दिन भी भारी बारिश का अनुमान है। इसके चलते पहाड़ों से लेकर तटीय इलाकों तक मुसीबतों का अंबार लग गया है। कुल्लू में बादल फटने से नाला उफान पर आ गया। कई लोगों के बहने की आशंका है। मुंबई-दिल्ली बारिश से बदहाल हो गए हैं। इन बड़े शहरों की रफ्तार धीमी पड़ गई है।

दिल्ली, मुंबई, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, केरल में गरज-चमक के साथ बारिश हो रही है। दिल्ली में ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है।

हिमाचल : कुल्लू में चोज नाला में आई बाढ़, लोगों के बहने की आशंका

कुल्लू जिला में रात से हो रही भारी बारिश के चलते कई जगह नुकसान होने की जानकारी है। मणिकर्ण घाटी के चोज नाला में भारी बारिश के चलते

बाढ़ आ गई है जिससे पार्वती नदी के किनारे बने रेस्टोरेंट और कई घर के बह जाने की जानकारी है। हादसे में 4-5 लोग लापता हो गए हैं, जबकि 2-3 लोगों के बहने की आशंका जताई जा रही है। वहीं, शिमला जिले के रामपुर में भी भारी बरसात के बाद हुए लैंड स्लाइड की वजह से नेशनल हाईवे बंद हो गया।

महाराष्ट्र : मुंबई में हाई टाइड का अलर्ट

पूर्वी मुंबई में 58.6 मिमी, पश्चिमी हिस्से में 78.69 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई। अगले 48 घंटों के लिए मध्यम से भारी बारिश का अनुमान है। कई जगह पानी भर जाने से यातायात प्रभावित हुआ है। कुछ इलाकों में बस और लोकल ट्रेनें प्रभावित हुई हैं। मंगलवार को समुद्र में ऊंची लहरें उठीं। 4 से 6 मीटर ऊंची हाई टाइड का अलर्ट जारी किया गया है। बृहन्मुंबई नगर निगम ने लोगों को समुद्र तट से दूर रहने को कहा है।

राजस्थान : 4 दिन में ही 142 मिमी बारिश

राजस्थान में मानसून तय समय से लेट पहुंचा है, पर ज्यादातर जिलों में बारिश सामान्य से ज्यादा रिकॉर्ड की गई। जयपुर को मानसून ने पहले चार दिन में ही तरबतर कर दिया। यहां बारिश का आंकड़ा 142 मिमी तक पहुंच गया। यह आंकड़ा सामान्य से 74 प्रतिशत ज्यादा है।

मौसम केन्द्र जयपुर के मुताबिक 6 जुलाई को कोटा, झालावाड़, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा में तेज बारिश हो सकती है। 7 और 8 जुलाई को कोटा, बूंदी, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, झालावाड़ और राजसमंद में भारी बारिश का अलर्ट जारी करते हुए इन जिलों के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है।

मध्य प्रदेश : सभी जिलों में मानसून सक्रिय

मध्य प्रदेश के सभी जिलों में मानसून सक्रिय हो चुका है। राजधानी भोपाल में सोमवार रात 12:30 तक 4 इंच बारिश हो चुकी थी। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक ओडिशा में बने सीजन के पहले लो प्रेशर एरिया और मप्र के ऊपर से गुजर रही ट्रफ लाइन से तेज बारिश हो रही है।

प्रदेश में अगले 4 दिन तक इंदौर समेत प्रदेश भर में अति भारी बारिश होती रहेगी।

एमपी के मध्य में लो प्रेशर एरिया बनने से भारी बारिश हो रही है। नए सिस्टम के कारण मध्यप्रदेश मानसून का केंद्र बन गया है। भोपाल में दो दिन बाद अति भारी बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग के अनुसार ग्वालियर, चंबल और बघेलखंड के कुछ हिस्सों को छोड़ दिया जाए, तो अधिकांश इलाकों में भारी बारिश का अनुमान है। इंदौर में मंगलवार को कुछ ही घंटों में 4 इंच बारिश हो गई, तो कई इलाकों में नदी-नाले उफान पर आने से कई मार्ग भी बंद हो गए हैं।

उत्तर प्रदेश : पूरब से पश्चिम तक पहुंचा मानसून

उत्तर प्रदेश में पूर्वांचल से एंट्री करने वाला मानसून अब पश्चिमी उत्तर प्रदेश की तरफ पहुंच गया है। उमस भरी गर्मी के बीच सोमवार का पूरा दिन लखनऊ वासियों का रहा। मौसम विभाग ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश के 12 जिलों में बारिश का अलर्ट जारी किया है।

सुप्रीम कोर्ट में नूपुर शर्मा के खिलाफ पुनः याचिका दाखिल

नयी दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की पूर्व प्रवक्ता नूपुर शर्मा की पैगंबर मोहम्मद पर टिप्पणी को लेकर उनकी गिरफ्तारी की मांग वाली एक और याचिका बुधवार को सुप्रीम कोर्ट में दायर की गई।

न्यायमूर्ति इंदिरा बनर्जी की अध्यक्षता वाली दो न्यायाधीशों की अवकाश पीठ ने तत्काल सुनवाई करने से इनकार करते हुए याचिकाकर्ता अबू सोहेल को मामले को सूचीबद्ध करने के लिए

मेंशनिंग रजिस्ट्रार से संपर्क करने को कहा। याचिकाकर्ता ने अपनी याचिका पर तत्काल सुनवाई की मांग करते हुए कहा कि दिल्ली पुलिस सुश्री शर्मा के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं कर रही है। अधिवक्ता सोहेल ने इसके पहले जून के मध्य में भी भाजपा की पूर्व प्रवक्ता की गिरफ्तारी की मांग करते हुए शीर्ष अदालत में याचिका दाखिल की थी। उसने सुप्रीम कोर्ट से मांग की थी कि सुश्री शर्मा को पैगंबर मोहम्मद साहब के खिलाफ कथित नफरत भरे बयान के लिए अधिकारियों को कार्रवाई करने और गिरफ्तार करने का निर्देश दिया जाए।

घरेलू सिलेंडर के दाम 50 रुपए बढ़े

दिल्ली में 14 किलो वाले सिलेंडर के 1053 रुपए देने होंगे, 48 दिनों में दूसरे बार बढ़े दाम

नई दिल्ली। कॉमर्शियल गैस सिलेंडरों के दाम घटने के बाद अब घरेलू गैस सिलेंडरों की कीमतें 48 दिनों बाद फिर बढ़ाई गई हैं। इंडियन ऑयल के ताजा अपडेट के मुताबिक, नॉन-सब्सिडी वाले 14.2 किलोग्राम के एक सिलेंडर पर अब आपको 50 रुपए ज्यादा देने होंगे। राजधानी दिल्ली में अब 14 किलो के सिलेंडर की कीमत 1003 रुपए से बढ़कर 1053 रुपए हो गई है।

इसके पहले 19 मई को पेट्रोलियम कंपनियों ने घरेलू एलपीजी गैस सिलेंडर के दाम में 3 रुपए 50 पैसे की बढ़ोतरी की थी। वहीं, कॉमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमत में भी 8 रुपए का इजाफा किया गया था।

दिल्ली में 1 जुलाई 2021 को घरेलू गैस सिलेंडर की कीमत 834.50 रुपए थी, जो अब 1053 रुपए पर पहुंच गई है। यानी बीते एक साल में घरेलू गैस सिलेंडर कीमत 218.50 रुपए बढ़ी है। इस पर मिलने वाली सब्सिडी भी खत्म कर दी गई है।

कॉमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमतों में 1 जुलाई को कटौती की गई थी। इससे दिल्ली में 19 किलो वाले कॉमर्शियल सिलेंडर की कीमत 2219 रुपए से घटकर 2021 रुपए हो गई। इसी तरह कोलकाता में 2322 रुपए के मुकाबले अब यह सिलेंडर 2140 रुपए में मिलेगा। मुंबई में कीमत 2171.50 रुपए से घटकर 1981 रुपए और चेन्नई में 2373 से घटकर 2186 रुपए हो गई। इस हिसाब से दिल्ली में गैस सिलेंडर की दरों में 198 रुपए, कोलकाता में 182 रुपए, मुंबई में 190.50 रुपए और चेन्नई में 187 रुपए की कमी आई है। पिछले महीने जून में कॉमर्शियल सिलेंडर की दरों में 135 रुपए की कमी की गई थी। हालांकि, तेल कंपनियों की तरफ से घरेलू गैस सिलेंडर में किसी तरह की राहत नहीं दी गई। दिल्ली में 14.2 किलो वाले गैस सिलेंडर की कीमत 1003 रुपए है।

इन शहरों में 1100 रुपए के पार हुआ सिलेंडर

बिहार : सुपौल (1157.5 रु.), पटना (1151 रु.), भागलपुर (1150.5 रु.) और औरंगाबाद (1149.5 रु.)
मध्य प्रदेश : भिंड (1132 रु.), ग्वालियर (1137 रु.) और मुरैना (1137 रु.)
झारखंड : दुमका (1110.5 रु.) और रांची (1110.57 रु.)
छत्तीसगढ़ : कांकेर (1141 रु.) और रायपुर (1124 रु.)
उत्तर प्रदेश : सोनभद्र (1140 रु.)

पुणे-सतारा राजमार्ग पर मार्च तक बनेगी छह लेन की सुरंग

नयी दिल्ली। सडक परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा है कि पुणे-सतारा राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-4 के खंभातकी घाट पर छह लेन की सुरंग पर तेजी से काम चल रहा है और मार्च तक इस पर निर्माण कार्य पूरा कर लिया जाएगा। गडकरी ने बुधवार को ट्वीट कर यह जानकारी देते हुए बताया कि इस मार्च पर तीन लेन वाली एक जोड़ी यानी कुल छह लेन की सुरंग का निर्माण किया जा रहा है और इस पर तेज गति से काम चल रहा है। उन्होंने कहा कि यह सुरंग इस क्षेत्र को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण सुरंग साबित होगी। बड़ी बात यह है कि सुरंग से यात्रियों को उनके वैल्यू ओवर टाइम और वैल्यू ओवर कॉस्ट बचत के माध्यम से सीधा लाभ मिलेगा।

अरब सागर में कोस्ट गार्ड का रेस्क्यू ऑपरेशन

डूबते जहाज से 22 लोगों को बचाया, तट से 95 समुद्री मील दूर तूफान में घिरे थे

एजेंसी

पोरबंदर। भारतीय तटरक्षक बल (आईसीजी) ने गुजरात के समुद्र में संकटग्रस्त व्यापारिक जहाज एमटी ग्लोबल किंग आई से चालक दल के सभी 22 सदस्यों को रेस्क्यू कर लिया। समुद्र में 93 समुद्री मील की दूरी पर बचाव अभियान चलाने के लिए पोरबंदर से कोस्ट गार्ड के जहाजों और ध्रुव हेलिकॉप्टर को रवाना किया गया था। रेस्क्यू किए गए दल में 1 पाकिस्तानी और 1 श्रीलंकाई नागरिक के साथ 20 भारतीय शामिल हैं। बचाए गए व्यक्तियों को जहाजों और हेलिकॉप्टरों द्वारा पोरबंदर बंदरगाह लाया जा रहा है।

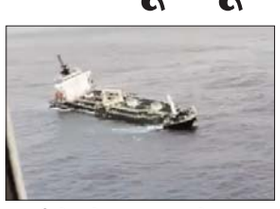

यूएई में खोर फक्कन से रवाना हुआ था जहाज

कोस्ट गार्ड से मिली जानकारी के अनुसार यह जहाज संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में खोर फक्कन से रवाना हुआ था। इसे गुजरात के रास्ते कर्नाटक जाना था। इसी दौरान पोरबंदर तट के पास तूफान की चपेट में आ गया। कोस्ट गार्ड ने कहा, हमें MT ग्लोबल किंग से संकट की चेतावनी मिली थी। इसके बाद हेलीकॉप्टर के जरिए तेजी से बचाव अभियान चलाते हुए सभी 22 क्रू मेंबर्स को बचा लिया गया। सभी चालक दल सुरक्षित और स्वस्थ हैं।

रेस्क्यू में बाधा बनीं तूफानी हवाएं

कोस्ट का कहना है कि ICG ने बचाव कार्य के लिए नए कमीशन किए गए एडवांस लाइट हेलिकॉप्टर ध्रुव हेलिकॉप्टरों को तैनात किया था। तेज हवाओं के चलते सेफ्टी बोट भी पानी में डूब रही थीं। इस दौरान हेलिकॉप्टर से रेस्क्यू में भी काफी परेशानियां आ रही थीं। लेकिन हमारे जवानों ने सभी लोगों को सुरक्षित निकाल लिया।

दिल्ली में आयोजित होगा देश का सबसे बड़ा शॉपिंग फेस्टिवल : केजरीवाल

नयी दिल्ली। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने राजधानी में रोजगार, व्यापार और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए बुधवार को बड़ा एलान करते हुए कहा कि दिल्ली में देश का सबसे बड़ा शॉपिंग फेस्टिवल का आयोजन किया जाएगा। केजरीवाल ने आज संवाददाता सम्मेलन में 'दिल्ली शॉपिंग फेस्टिवल' का आयोजन करने का एलान किया। यह फ़ेस्टिवल 28 जनवरी 2023 से 26 फरवरी 2023 तक 30 दिन के लिए राजधानी में आयोजित किया जाएगा। यह देश का सबसे बड़ा शॉपिंग फेस्टिवल होगा। आज तक इतना बड़ा शॉपिंग फेस्टिवल कभी नहीं हुआ होगा। अभी हम इसकी शुरुआत कर रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि आने वाले कुछ सालों के अंदर इसे हम दुनिया का सबसे बड़ा शॉपिंग फेस्टिवल बनाएंगे। यह फेस्टिवल 30 दिन का होगा। पिछले कई महीनों से हमारी तैयारी चल रही थी। हमारी योजना पूरी हो गई है। अब इस फेस्टिवल को लागू करने की तैयारियां शुरू हो गई है। इसकी उल्टी गिनती शुरू हो गयी है। दिल्ली के लोगों का अनुभव करने, दिल्ली की संस्कृति का अनुभव करने और शॉपिंग करने के लिए देश और दुनिया भर के लोगों को 'दिल्ली शॉपिंग फेस्टिवल' में आमंत्रित किया जाएगा।

बारामूला हाइवे पर आईईडी डिफ्यूज किया, कुलगाम में 2 आतंकियों का सरेंडर

एजेंसी

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर में आज सुरक्षाबलों को एक ही दिन में दो बड़ी कामयाबी मिली है। जहां श्रीनगर बारामूला हाइवे पर आईईडी डिफ्यूज कर दिया गया, वहीं कुलगाम में दो आतंकियों ने अपने माता-पिता के कहने पर सरेंडर कर दिया। आतंकी सरेंडर करके जैसे ही बाहर आए, पुलिस ने उन्हें हिरासत में ले लिया।

बारामूला हाइवे पर मिले आईईड को लेकर वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने

बताया कि सुरक्षाबलों में से आर्मी की राष्ट्रीय रायफल्स की 29वीं बटालियन ने सड़क किनारे रखे आईईड को डिटेक्ट किया। इसके बाद बॉम्ब डिस्पोजल स्क्वॉड ने इसे डिफ्यूज किया। इस दौरान हाईवे का ट्रैफिक रोका गया था, जिसे फिर से खोल दिया गया है।

माता-पिता की अपील पर आतंकियों का सरेंडर

दूसरी तरफ सुरक्षाबलों को जैसे ही हादीगाम इलाके में आतंकियों से छिपे होने की खबर मिली, उन्हें पूरे इलाके के घेर लिया।

इसके बाद दोनों तरफ एनकाउंटर शुरू हो गया। इनके बारे में जब डिटेल खंगाली गई तो पता चला कि ये दोनों इसी इलाके के रहने वाले हैं। इसके बार लगातार इसने सरेंडर करने को कहा गया, लेकिन इन्हें कोई जवाब नहीं दिया।

फिर मौका पाकर इन दोनों के माता-पिता को बुलाया गया। माता-पिता की अपील पर इन्हें आत्मसमर्पण कर दिया। इन दोनों से पास से हथियार और गोला-बारूद बरामद किया गया है।

मुख्यधारा में लौट सकते हैं हथियार उठाने वाले युवा

एक सीनियर पुलिस अधिकारी ने इसे बड़ी कामयाबी बताते हुए कहा कि इससे पता चलता है कि हथियार उठाने वाले युवा मुख्यधारा में वापस आ सकते हैं। कश्मीर जोन पुलिस सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए इस बारे में जानकारी दी।

सुरक्षा पर सवाल

विस्तारा प्लेन का इंजन फेल, स्पाइसजेट में 18 दिन में 8 बार गड़बड़ी; इंडिगो प्लेन में धुआं

तीन एयरलाइंस में पैसेंजर सेफ्टी पर उठते सवाल

कोलकाता। देश में ऑपरेट हो रहीं एयरलाइंस में पैसेंजर सेफ्टी को लेकर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। देश की तीन प्रमुख एयरलाइन विस्तारा, स्पाइसजेट और इंडिगो के प्लेन्स में पिछले दो दिन में लगातार गड़बड़ियां मिली हैं।

विस्तारा : बैंकॉक-दिल्ली फ्लाइट का इंजन फेल

विस्तारा एयरलाइन की बैंकॉक से दिल्ली आ रही फ्लाइट का बुधवार को एक इंजन फेल हो गया। प्लेन ने दिल्ली के इंदिरा गांधी एयरपोर्ट पर एक इंजन के साथ ही लैंडिंग की। विस्तारा की VT-TNJ नंबर की फ्लाइट को एयरबस ए -320 विमान से ऑपरेट

किया जा रहा था। जानकारी के मुताबिक, प्लेन के इंजन के इलेक्ट्रिक सिस्टम में गड़बड़ी होने के बाद पूरा इंजन ही फेल हो गया। हालांकि, इस घटना में किसी पैसेंजर को चोट नहीं पहुंची।

इंडिगो : रायपुर-इंदौर फ्लाइट के केबिन में धुआं

इंडिगो एयरलाइन की रायपुर-इंदौर फ्लाइट में मंगलवार को धुआं नजर आया।

DGCA के अधिकारियों ने जानकारी दी है कि विमान के क्रू ने इंदौर एयरपोर्ट पर लैंडिंग के बाद केबिन में धुआं देखा था। उस समय विमान टेक्सी बे पर था। इंडिगो की यह फ्लाइट एयरबस ए -320 नियो एयरक्राफ्ट से संचालित की जा रही थी।

इस घटना में भी किसी यात्री को नुकसान नहीं हुआ।

स्पाइसजेट : 18 दिन में तकनीकी खराबी के 8 केस

स्पाइस जेट के विमानों में कई दिनों से तकनीकी खामियां सामने आ रही हैं। पिछले 18 दिनों में ही कंपनी के विमानों में तकनीकी खराबी के 8 मामले सामने आ चुके हैं। तीन मामले अकेले मंगलवार के हैं। DGCA ने कंपनी के विमानों में लगातार आ रहीं सुरक्षा खामियों को देखते हुए शो कॉज नोटिस भेजा है। स्पाइस जेट से तीन हफ्ते में जवाब देने को कहा गया है।

बीते 24 घंटों में नए केस में 12 प्रतिशत की बढ़ोतरी; महाराष्ट्र में मिले सबसे ज्यादा नए मामले

नई दिल्ली। देश में बीते 14 दिन से रोजाना कोरोना के 10 हजार से ज्यादा नए मामले आ रहे हैं। मंगलवार को भी 15,733 नए मामले दर्ज किए गए। पिछले दिन के मुकाबले नए केस में 22त्न का इजाफा हुआ है। इसके साथ ही एक्टिव केस यानी इलाज करा रहे मरीजों की संख्या बढ़कर 114,475 हो गई है। पिछले 7 दिनों से एक्टिव केस का आंकड़ा एक लाख से ऊपर है। इसमें कमी नहीं आ रही है। मंगलवार को कोरोना से 28 लोगों की मौत हुई। इसके साथ ही मरने वालों की संख्या बढ़कर 5 लाख 25 हजार 270 पहुंच गया है।

देश के 5 राज्यों में कोरोना के सबसे ज्यादा मामले सामने आ रहे हैं। इनमें केरल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक और पश्चिम बंगाल शामिल हैं। सबसे ज्यादा मामले केरल और महाराष्ट्र से आ रहे हैं। सोमवार को महाराष्ट्र में नए मामले में 50त्न की बढ़ोतरी देखी गई। वहीं, केरल में पिछले दिन के मुकाबले नए मामलों में 20 प्रतिशत की कमी आई है।

सबसे ज्यादा मामले महाराष्ट्र से

नए संक्रमितों की संख्या में केरल को पछाड़ कर महाराष्ट्र टॉप पर आ गया है। पिछले 24 घंटों की बात करें तो यहां 3,098 पॉजिटिव केस मिले, वहीं 4,207 मरीज ठीक हो गए, जबकि 6 संक्रमितों ने अपनी जान गंवा दी। पिछले दिन के मुकाबले महाराष्ट्र में पॉजिटिव केस में 50 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है।

तमिलनाडु में लगातार बढ़ रहे केस

पिछले 24 घंटे में तमिलनाडु में भी नए केस में 13 प्रतिशत की कमी आई है। सोमवार को यहां 2662 नए केस आए, वहीं 1,512 मरीज ठीक हुए। तमिलनाडु में कोरोना से 1 मरीज की मौत हो गई। नए केस में कमी आने के बाद भी यहां पॉजिटिविटी रेट 8 प्रतिशत के ऊपर बना हुआ है। महामारी के मामले में केरल अभी भी कोरोना का हॉट-स्पॉट बना हुआ है। पिछले चार दिन से भले ही नए केस में कमी आई हो, लेकिन राज्य में अभी भी पॉजिटिविटी रेट 16 प्रतिशत से ऊपर बना हुआ है।

शार्ट न्यूज

नकवी के बाद आरसीपी सिंह ने भी दिया मोदी मंत्रिमंडल से इस्तीफा

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी के बाद आरसीपी सिंह ने भी मोदी मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया है। नकवी, आरसीपी सिंह ने राज्यसभा का कार्यकाल पूरा होने से एक दिन पहले पीएम मोदी को अपना इस्तीफा सौंप दिया। बता दें कि इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को हुई केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक के दौरान देश व लोगों की सेवा के लिए केंद्रीय मंत्री राम चंद्र प्रसाद सिंह के योगदान की सराहना की थी। आरसीपी सिंह का राज्यसभा सदस्य के रूप में कार्यकाल सात जुलाई यानी बृहस्पतिवार को समाप्त हो रहा है। आरसीपी सिंह जनता दल यूनाईटेड के कोटे से केंद्र सरकार में मंत्री थे। उन्हें भी जदयू ने अगला कार्यकाल नहीं दिया है। पार्टी के कोटे से मंत्री होने के बावजूद जद (यू) के शीर्ष नेतृत्व द्वारा उन्हें राज्यसभा का टिकट देने से इनकार किए जाने के बाद उनके अगले कदम के बारे में अटकलें लगाई जा रही हैं।

घाटी में मनाया गया उर्स शाह-ए-हमदान

श्रीनगर। हजरत मीर सैयद अली हमदानी का वार्षिक उर्स शाह-ए-हमदान बुधवार को कश्मीर घाटी में धार्मिक उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मुख्य समारोह श्रीनगर शहर के खान-ए-काह-ए-मौला मस्जिद में आयोजित किया गया, जहां पुरुषों और महिलाओं सहित सैकड़ों लोगों ने रात भर की इबादत की । श्रीनगर के खान-ए-कह-ए-मौला में झेलम नदी के तट पर स्थित दरगाह में लोग दोपहर की नमाज़ में भारी संख्या में शामिल हुए। इस दौरान, कश्मीर घाटी की शांति और समृद्धि के लिए विशेष इबादत की गई। उल्लेखनीय है कि मीर सैयद अली हमदानी एक ईरानी विद्वान, कवि एवं एक सूफी मुस्लिम संत थे। उनका जन्म ईरान के हमदान में हुआ था और उन्होंने मध्य और दक्षिण एशिया में इस्लाम का प्रचार किया था। उन्होंने इस्लाम का प्रचार करने के लिए 700 अनुयायियों के साथ कश्मीर घाटी का दौरा किया और कश्मीर में उनका निधन हुआ।

सुरक्षा बलों ने सांबा में तलाश अभियान शुरू किया

जम्मू। केंद्र शासित प्रदेश जम्मू कश्मीर में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर संदिग्ध ड्रोन की आवाजाही के एक दिन बाद बुधवार सुबह सुरक्षा बलों की एक संयुक्त टीम ने सांबा जिले के सीमावर्ती गांवों में तलाश अभियान शुरू किया। पुलिस ने कहा कि जम्मू-कश्मीर पुलिस की विशेष अभियान समूह (एसओजी), केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) और सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की एक संयुक्त टीम ने आज सुबह एसएम पुरा, चमलियाल और उसके आसपास के सीमावर्ती गांवों में तलाश अभियान चलाया। पुलिस ने कहा, मंगलवार को सीमा के करीब एक संदिग्ध ड्रोन की गतिविधि देखी गई, जिसके बाद आज तलाश अभियान शुरू किया गया।' पुलिस ने कहा कि सीमा पर रहने वालों को ड्रोन, इसकी आवाजाही, आवाज और आकार के बारे में भी अवगत कराया गया है। उन्होंने कहा, ग्रामीणों से बोला गया है कि यदि वे हवा में या सीमा पर किसी भी तरह की संदिग्ध गतिविधि देखते हैं तो तुरंत नजदीकी चेक पोस्ट या पुलिस चौकी को सूचित करें। घाटी में जारी श्री अमरनाथ यात्रा के मद्देनजर बहुस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था की गई है।

पंजाब में मील पत्थरों,नेमप्लेट पर पंजाबी भाषा ऊपर होगीकंग

चंडीगढ़। पंजाब के सभी सरकारी कार्यालयों में पंजाबी भाषा का उपयोग सुनिश्चित करने के लिए भगवंत मान सरकार ने बुधवार को राज्य के सभी सरकारी विभागाध्यक्षों को निर्देश दिया है कि वे अपने विभाग में नाम, साइन बोर्ड, नेमप्लेट आदि में पंजाबी भाषा का उपयोग करें एवं पंजाबी को आधिकारिक भाषा के रूप में उपयोग करने के सरकार के निर्देश का सख्ती से पालन करें। आप के मुख्य प्रवक्ता मलविंदर सिंह कंग ने बुधवार को सरकार के इस फैसले की तारीफ करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री भगवंत मान के इस पहल से पंजाबी भाषा को काफी बढ़ावा मिलेगा। राज्य के लोगों की मातृभाषा को बढ़ावा देना सरकार का प्राथमिक और नैतिक कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षा एवं भाषा विभाग ने यह आदेश पंजाब राज्य भाषा अधिनियम-1967 की धारा 4 और पंजाब राजभाषा (संशोधित) अधिनियम-2008 के तहत जारी किया है। आदेश के अनुसार, सभी सरकारी और अर्ध-सरकारी संस्थानों, बोर्डों, निगमों और शैक्षणिक संस्थानों के लिए सभी विभाग के नाम, साइन बोर्ड, सड़क पर बने मील के पत्थर और सड़कों के नाम पंजाबी भाषा की गुरुमुखी लिपि में लिखना अनिवार्य कर दिया गया है। कंग ने कहा कि यदि किसी अन्य भाषा को भी लिखने की आवश्यकता पड़ती है, तो उसे भी नीचे छोटे फॉन्ट में लिखा जाएगा।

भगवंत मान गुरुवार को रचायेंगे दूसरी शादी

चंडीगढ़। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान गुरुवार को चंडीगढ़ में डॉ गुरप्रीत कौर के साथ दूसरी बार शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं। आप के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल शादी समारोह में शामिल होंगे। अड़तालिस वर्षीय मान की शादी उनके घर में एक छोटे से निजी समारोह में होगी जिसमें परिवार के करीबी सदस्य ही शामिल होंगे। श्री केजरीवाल भी शादी समारोह में शामिल होकर दूल्हा-दुल्हन को आशीर्वाद देंगे। उल्लेखनीय है कि श्री मान का छह साल पहले तलाक हो गया था और उनकी पहली पत्नी और दोनों संतानें अमेरिका में रहते हैं। श्री मान के दोनों बच्चे शपथ ग्रहण समारोह में तब आए थे जब उन्होंने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। खबरों के मुताबिक श्री मान की मां हरपाल कौर की इच्छा थी कि उनका पुत्र फिर से घर बसा लें। श्री मान डॉ गुरप्रीत कौर से शादी करेंगे, जो कथित तौर पर मुख्यमंत्री की मां और बहन की पसंद रही हैं। श्री मान ने पहले कहा था कि उन्होंने अपने परिवार पर पंजाब में सेवा को चुना, संगरूर से निर्वाचित प्रतिनिधि होने के नाते, वह अमेरिका में नहीं बस सकते थे, जबकि उनकी पत्नी उनके साथ रहने के लिए भारत नहीं जा सकती थी, इसलिए उन दोनों ने तलाक मांगा था।

नाबालिग के साथ छेडछाड मामले में फरार आरोपी गिरफ्तार

बारां। राजस्थान में बारां जिले के अटरू थाना क्षेत्र में एक नाबालिग लड़की के साथ छेडछाड करने के मामले में पुलिस ने चार माह से फरार आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है जिला पुलिस अधीक्षक कल्याणमल मीना ने बताया कि थाना अटरू पर 27 मार्च को एक नाबालिक लडकी ने अपने पिता के साथ रिपोर्ट पेश कि 26 मार्च शाम को मेरी माँ खेत पर गई हुई थी। रिपोर्ट में कहा कि वह तथा घर पर अकेली कमरे में पढाई कर रही थी कि शाम को करीबन पांच बजे गाँव का दीपक उर्फ ठेकेदार माली घर पर छिपकर आया और उसे अकेली देख हाथ पकड कर जबरदस्ती करने लगा। पीड़िता ने चिल्लाते हुए स्वयं को छुडाने की कोशिश की तो आरोपी घर की दीवार कुदकर साईड से भाग गया। इस पर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर अनुसंधान प्रारम्भ किया। पुलिस ने इस मामले में फरार दीपक उर्फ गोलु उर्फ ठेकेदार को आज गिरफ्तार किया।

राजस्थान को मिलेगा राष्ट्रीय खनिज विकास पुरस्कार

जयपुर। राजस्थान को माइनर मिनरल के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय खनिज विकास पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। खान विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुबोध अग्रवाल ने बताया कि 12 जुलाई को नई दिल्ली के डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर पर आयोजित नेशनल कॉन्क्लेव में केन्द्रीय संसदीय मामलात, कोल एवं माइंस मंत्री द्वारा राजस्थान के माइंस विभाग को द्वितीय पुरस्कार दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि नेशनल कॉन्क्लेव का आयोजन आजादी का अमृत महोत्सव पर किया जा रहा है। डॉ. अग्रवाल ने बताया कि भारत सरकार के खनिज मंत्रालय द्वारा माइनर मिनरल के क्षेत्र में द्वितीय पुरस्कार खनिज खोज, खनिज प्लॉट तैयार कर उनका ऑक्शन और खनन गतिविधियों में उल्लेखनीय कार्यों के लिए दिया जाएगा। वर्ष 2021-22 में वित्तीय वर्ष में 6395 करोड़ 15 लाख का राजस्व संग्रहण का नया रिकार्ड बनाया गया है।

अब शिवसेना के संसदीय दल में भी फूट

भावना गवली को चीफ व्हिप के पद से हटाया; ऐक्शन में उद्धव ठाकरे

मुंबई। शिवसेना में बड़ी बगावत के बाद एकनाथ शिंदे महाराष्ट्र के सीएम बन गए हैं और भाजपा नेता देवेंद्र फडणवीस डिप्टी सीएम की कुर्सी संभाल रहे हैं। इसके बाद भी शिवसेना की अंदरुनी कलह समाप्त नहीं हुई है। विधायकों के बाद अब बड़ी संख्या में सांसदों के भी पार्टी नेतृत्व से बगावत के कयास लग रहे हैं। इस बीच नए घटनाक्रम के तहत पार्टी ने सांसद भावना गवली को लोकसभा में शिवसेना के चीफ व्हिप के पद से हटा दिया है। उनकी जगह पर उद्धव ठाकरे के करीबी कहे जाने वाले राजन विचारे को यह जिम्मेदारी दी गई है। शिवसेना के संसदीय दल के नेता संजय राउत ने संसदीय कार्य मंत्री प्रल्हाद जोशी को लिखे पत्र में पार्टी के इस फैसले की जानकारी दी है।

संजय राउत ने पत्र में लिखा है, आपको यह बताया जाता है कि शिवसेना के संसदीय दल ने राजन विचारे को लोकसभा में भावना गवली के स्थान पर पार्टी का चीफ व्हिप नियुक्त किया है। यह नियुक्ति तत्काल प्रभाव से लागू की जाती है। इस फैसले से विधायक दल में फूट के बाद अब शिवसेना के संसदीय दल में भी टकराव के आसार बढ़ गए हैं। दरअसल एकनाथ शिंदे के विद्रोह के बाद भावना गवली ने शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे को एक पत्र लिखा था। इसमें भावना गवली ने कहा था कि एकनाथ शिंदे की भूमिका सही थी। उसके बाद से ही चर्चा है कि शिवसेना के 12 सांसद एकनाथ शिंदे गुट के साथ जा सकते हैं। इसमें सबसे आगे भावना गवली का नाम है।

गवली समेत 12 सांसद कर सकते हैं उद्धव ठाकरे से बगावत

शायद इसी के चलते शिवसेना ने उन्हें चीफ व्हिप के पद से हटाने का फैसला लिया है। अब देखना होगा कि इस फैसले पर भावना गवली का क्या रिएक्शन आता है। भावना गवली, एकनाथ शिंदे के सांसद बेटे श्रीकांत शिंदे समेत कई लोगों की ओर से बगावत का ऐलान किया जा सकता है। बता दें कि मंगलवार को मुंबई से शिवसेना सांसद राहुल शेवाले ने भी उद्धव ठाकरे को एक पत्र भेजा था। इसमें राहुल शेवाले ने बीजेपी की राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू से समर्थन की गुहार लगाई थी।

राष्ट्रपति चुनाव में सांसदों के क्रॉस वोटिंग करने की आशंका

सांसदों के रवैये से साफ है कि राष्ट्रपति चुनाव में यदि शिवसेना विपक्ष के उम्मीदवार यशवंत सिन्हा का समर्थन करती है तो बगावत दिखेगी और क्रॉस वोटिंग हो सकती है। 16 में से करीब 12 सांसद द्रौपदी मुर्मू के समर्थन में वोट डाल सकते हैं। ऐसा होता है तो फिर यह शिवसेना के संसदीय दल में भी बड़ी टूट की शुरुआत होगी।

बारिश में अचानक गिरी इंजीनियरिंग कॉलेज की दीवार

एजेंसी

मंगलुरु। देश के कई हिस्सों में भारी बारिश का दौर जारी है। इसी कड़ी में कर्नाटक के मंगलुरु में भी भारी बारिश के चलते बाढ़ के हालात बन गए। लोगों के घरों में पानी घुस गया है तो वहीं लोगों की गाड़ियां बीच रास्ते में फंस गईं। इसी बीच मंगलुरु में ही एक इंजीनियरिंग कॉलेज की कंपाउंड की दीवार गिर गई। देखते ही देखते वहां का मलबा रोड पर आ गया और लोग फंस गए।

दरअसल, न्यूज एजेंसी एएनआई ने इस घटना का एक वीडियो शेयर किया है। बताया गया कि मंगलुरु के बाहरी इलाके में स्थित मूडबिद्री में लगातार बारिश के कारण मंगलवार को यह हादसा हुआ है। यह तब हुआ जब इंजीनियरिंग कॉलेज की कंपाउंड की दीवार गिर गई। जैसे ही यह हुआ वहां बगल में ही सड़क पर इसका मलबा फैल गया और इस दौरान तीन कारें भी क्षतिग्रस्त हुई हैं।

हालांकि किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। उधर घटना के बाद बचाव कार्य शुरू कर दिया गया और सड़क को साफ करने का काम शुरू हुआ ताकि यातायात बाधित ना होने पाए।

बता दें कि कर्नाटक के तटीय इलाकों में भारी बारिश से तबाही मची है।

बाढ़ और भूस्खलन के चलते कई मकान ध्वस्त हो गए। विट्टल-कासरगोड मार्ग पर सारडका नाके के पास एक पहाड़ी पर भी भूस्खलन हुआ, जिसके चलते लंबे समय तक यातायात बाधित रहा। दक्षिण कन्नड़ और उडुपी के तटीय जिलों में लगातार मूसलाधार बारिश से कई स्थानों पर भूस्खलन और बाढ़ आ गई।

नासिक में मुस्लिम धर्मगुरु को सिर में मारी गोली, मौके पर हुई मौत

नासिक। महाराष्ट्र में नासिक से एक ऐसा मामला सामने आया है जहां एक मुस्लिम धर्मगुरु की हत्या कर दी गई। यह तब हुआ जब उनके सिर पर हमलावरों ने गोली उतार दी। पुलिस ने इस मामले में बताया है कि चार अज्ञात आरोपियों ने इस घटना को अंजाम दिया है और जल्द ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा। दरअसल, यह घटना नासिक जिले के येवला कस्बे की है। मृतक का नाम ख्वाजा सैयद चिश्ती और वे स्थानीय लोगों के बीच सूफी बाबा के नाम से मशहूर थे। यह भी बताया गया कि 35 साल के सूफी बाबा अफगानिस्तान से ताल्लुक रखते थे। आरोपियों ने चिश्ती बाबा को येवला कस्बे के एमआईडीसी इलाके में स्थित एक खुले मैदान में गोली मारी है। पुलिस ने बताया कि हत्या की वजहों का पता नहीं चला है। हमलावर सूफी बाबा की हत्या करने के बाद उनकी एसयूवी गाड़ी लेकर मौके से भाग गए। हालांकि हमलावरों की एक एसयूवी को जब्त कर लिया गया है लेकिन अभी हमलावर गिरफ्त से बाहर हैं। इस पूरे मामले की जांच शुरू कर दी गई है और सभी एंगल से पड़ताल की जा रही है। इसके अलावा येओला पुलिस थाने में ही हत्या का मामला दर्ज किया गया है। एक पुलिस अधिकारी ने यह भी बताया कि हमलावरों ने सीधे उनके माथे में गोली मार दी, जिसके बाद उनकी मौके पर ही मौत हो गई। वहीं इस पूरे मामले में नासिक के पुलिस अधीक्षक सचिन पाटिल ने बताया कि नासिक ग्रामीण पुलिस ने एक व्यक्ति को हिरासत में लिया है जबकि दो और संदिग्धों की तलाश जारी है।

रामबन में टैक्सी खाई में गिरी, सात घायल

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के रामबन जिले में बुधवार को एक टैक्सी के सड़क से फिसलकर गहरी खाई में गिर जाने से महिलाओं समेत कम से कम सात लोग घायल हो गये। पुलिस ने कहा कि आज सुबह जम्मू से श्रीनगर की ओर जा रही एक टैक्सी बनिहाल के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गई। टैक्सी चालक ने वाहन पर से अपना नियंत्रण खो दिया, जिससे यह दुर्घटना घटी। उन्होंने बताया कि हादसे में सात यात्री घायल हो गए। घायलों के नाम आबिद अहमद डार (चालक), जहांगीर अहमद, फारूक अहमद, हाफिजा बेगम, अलीजा बानो, शकीला बानो और शाजिया बानो है। घायलों में से तीन को रामबन जिला अस्पताल से राजकीय मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल अनंतनाग भेजा गया है।

जम्मू-कश्मीर : सुरक्षाबलों के आगे दो आतंकियों ने किया सरेंडर

मां-बाप की अपील के बाद डाले हथियार

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले में दो स्थानीय आतंकियों ने सरेंडर कर दिया। इन आतंकियों ने अपने माता-पिता की अपील के बाद सुरक्षाबलों के आगे हथियार डाले। दरअसल हादीगाम गांव में सुरक्षाबलों ने आतंक रोधी अभियान शुरू किया था। इसके बाद आतंकवादियों के मां-बाप को वहां लगाया गया और उनसे अपील करवाई गई कि वे हथियार डाल दें। बताया जा रहा है कि ये दोनों हाल ही में आतंकी संगठन के साथ जुड़े थे।

पुलिस ने ट्वीट करके इस बात की जानकारी दी। पुलिस का कहा है कि आतंकियों के पास से गोला-बारूद और हथियार भी बरामद किया गया है। आईजीपी कश्मीर, विजय कुमार ने कहा कि अगर सभी माता-पिता अपने बच्चों से हिंसा का रास्ता छोड़कर सरेंडर करने की अपील करें तो बहुत लोगों का जीवन बचाया जा सकता है। जब दो आतंकियों ने आत्मसमर्पण किया तो उनका भी जीवन बच गया।

पुलिस की मानें तो इस साल जितने आतंकी मारे गए हैं उनमें ज्यादातर लोकल ही हैं। हाल ही में सुरक्षाबलों ने लश्कर आतंकी तालिब हुसैन को गिरफ्तार किया था। वहीं जून के आखिरी में भी कुलगाम में ही दो आतंकियों को मारा गया था जो कि लश्कर-ए-तैयबा से ताल्लुक रखते थे। एक अधिकारी के मुताबिक आतंकियों के बारे में जानकारी मिलने के बाद उनकी घेराबंदी कर ली गई थी। बाद में उनके माता-पिता को बुलाकर उनसे सरेंडर करवाया गया।

चीन जा रही स्पाइसजेट की कार्गो फ्लाइट कोलकाता लौटी

परसों भी हुई थी 3 की इमरजेंसी लैंडिंग

कोलकाता। एविएशन कंपनी स्पाइसजेट विमानों की इमरजेंसी लैंडिंग को लेकर इन दिनों सुर्खियों में है। खबर आ रही है कि खराब मौसम रडार के कारण चीन जाने वाला स्पाइसजेट कार्गो विमान कोलकाता लौटा है। स्पाइसजेट प्रवक्ता ने कहा, 5 जुलाई, 2022 को स्पाइसजेट बोइंग 737 मालवाहक (कार्गो विमान) कोलकाता से चोंगकिंग के लिए जाने वाला था। टेक-ऑफ के बाद मौसम रडार मौसम नहीं दिखा रहा था। पीआईसी ने वापस कोलकाता लौटने का फैसला किया। कोलकाता में विमान सुरक्षित उतरा। आपको बता दें कि तकनीकी दिक्कतों के कारण मंगलवार को तीन विमानों की आपात लैंडिंग करानी पड़ी थी। सुबह दिल्ली से दुबई जा रहे स्पाइसजेट के विमान में ईंधन संकेतक में गड़बड़ी आ गई। उसे पाकिस्तान के कराची एयरपोर्ट पर पर उतारना पड़ा। उस समय विमान में करीब 150 यात्री सवार थे और सभी सुरक्षित हैं। स्पाइस जेट की एक और उड़ान, जो गुजरात के कांडला से मुंबई जा रही थी, उसमें करीब 23 हजार फुट की ऊंचाई पर विंडशील्ड में दरार आ गई। इसकी भी आपात लैंडिंग करानी पड़ी। दिल्ली से पटना आ रही गो-एयर की फ्लाइट में भी तकनीकी खराबी आ गई और पटना में लैंडिंग से 20 मिनट पहले फ्लाइट को दिल्ली वापस लाना पड़ा। विमान में 180 यात्री सवार थे और सभी सुरक्षित हैं।

जांच में खामी नजर नहीं आई

पिछले 17 दिनों में स्पाइसजेट के विमान से संबंधित इस तरह की यह छठी घटना है। डीजीसीए सभी मामलों की बारीकी से जांच कर रहा है। अधिकारियों ने बताया कि दुबई जा रहा बोइंग 737 मैक्स विमान जब हवा में था तब विमान के बाएं टैंक में ईंधन की मात्रा में असामान्य कमी दिखने लगी। इसके कारण विमान को कराची की ओर मोड़ना पड़ा। कराची हवाई अड्डे पर विमान की जांच की गई, तो बाएं टैंक से कोई रिसाव नहीं पाया गया।

वी के जंजुआ की नियुक्ति सराहनीय : सीआईआई

जालंधर। भारतीय उद्योग परिसंघ ने पंजाब के मुख्य सचिव के रूप में श्री वी के जंजुआ की नियुक्ति का स्वागत किया है। सीआईआई पंजाब स्टेट काउंसिल के अध्यक्ष अमित थापर ने बुधवार को कहा कि श्री जंजुआ की मुख्य सचिव के रूप में नियुक्ति ने उद्योग और बड़े व्यापारिक बिरादरी को सही संकेत दिया है कि नयी सरकार ने औद्योगिक विकास के माध्यम से राज्य की अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने के लिए अपना योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि श्री जंजुआ अपने प्रशासनिक कैरियर में लंबे समय से राज्य में उद्योग से जुड़े हुए हैं। वर्ष 2007 में निदेशक, उद्योग और वाणिज्य, पंजाब के रूप में उनका कार्यकाल हो, जहां उन्होंने 2009 की औद्योगिक नीति या पिछले साल राज्य सरकार द्वारा हाल ही में संशोधित श्रम कानूनों के लिए स्थानीय उद्योग की प्रतिक्रिया लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। सीआईआई पंजाब स्टेट काउंसिल के उपाध्यक्ष डॉ पी जे सिंह ने भी नई राज्य सरकार द्वारा श्री वी के जंजुआ को मुख्य सचिव के रूप में नियुक्त करने के कदम की सराहना की है।

रोहित रंजन की याचिका पर सुनवाई के लिए सुप्रीम कोर्ट तैयार, हुई थी गिरफ्तारी

एजेंसी

नई दिल्ली। पत्रकार रोहित रंजन की की तरफ से दायर की गई याचिका पर सुप्रीम कोर्ट सुनवाई के लिए सहमत हो गया है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के वीडियो को गलत तरीके से दिखाने को लेकर दर्ज हुए मामलों के खिलाफ रोहित रंजन ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। रोहित रंजन के वकील ने सुप्रीम कोर्ट में बताया कि नोएडा पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार किया था, जिसके बाद उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया गया। अब छत्तीसगढ़ पुलिस उन्हें गिरफ्तार करना चाहती है।

दरअसल, पत्रकार रोहित रंजन के वकील सिद्धार्थ लूथरा ने बताया जमानत मिलने के बाद छत्तीसगढ़ पुलिस उन्हें गिरफ्तार करना चाहती है। इस मामले में उन्होंने तुरंत सुनवाई की मांग की थी क्योंकि अगर ऐसा नहीं हुआ तो उन्हें बार-बार हिरासत में लिया जाएगा। इसके बाद याचिका पर सुप्रीम कोर्ट सुनवाई के लिए सहमत हो गया है।

वहीं इससे पहले राहुल गांधी के एक बयान को गलत संदर्भ में प्रसारित करने के मामले में रोहित रंजन के घर पर छत्तीसगढ़ पुलिस मंगलवार सुबह पहुंच गई थी। इसके बाद गाजियाबाद से लेकर नोएडा तक हाईवोल्टेज ड्रामा हुआ और दो राज्यों की पुलिस भिड़ती दिखीं। अंत में नोएडा की पुलिस ने रोहित रंजन को हिरासत में ले लिया।

बता दें कि 1 जुलाई को जी न्यूज चैनल पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम डीएनए में रोहित रंजन ने राहुल गांधी के केरल में दिए गए एक बयान को उदयपुर की घटना से जोड़ दिया था। यह सब तब हुआ था जब राहुल गांधी ने वायनाड में अपने संसदीय कार्यालय में तोड़फोड़ करने वाले लोगों को माफ करने की बात कही थी और कहा था कि वे बच्चे हैं। लेकिन टीवी के कार्यक्रम में उनके इस बयान को उदयपुर में कन्हैयालाल के हत्यारों से जोड़ दिया गया था।

इस पर कांग्रेस ने सख्त ऐतराज जताया था, जिसके बाद चैनल की ओर से कार्यक्रम के वीडियो का हिस्सा ट्विटर से डिलीट किया गया था। यही नहीं लाइव शो और ट्विटर समेत सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर माफी भी मांगी गई थी। खुद पत्रकार रोहित रंजन ने भी अगले दिन इस मसले पर कार्यक्रम में माफी मांगी थी और गलती को मानवीय भूल बताया था।

फिल्म अभिनेता राणा जंग बहादुर गिरफ्तार

जालंधर। वाल्मीकि समुदाय की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के एक मामले में पुलिस ने बुधवार को पंजाबी फिल्म अभिनेता राणा जंग बहादुर को गिरफ्तार कर लिया। अभिनेता पर आरोप है कि उन्होंने एक टीवी चैनल के कार्यक्रम में भगवान वाल्मीकि को लेकर गलत शब्दों का प्रयोग करके एक समूह की धार्मिक भावनाएं आहत की हैं। एक दिन पहले ही न्यायालय ने उनकी अग्रिम जमानत की याचिका खारिज की है। जालंधर और होशियारपुर में वाल्मीकि भाईचारे के लगातार विरोध के बाद उन पर नयी बारादरी थाने में मामला दर्ज किया गया था। इस मामले में कुछ दिन पहले ही वाल्मीकि समुदाय के प्रतिनिधियों ने अकाली दल के नेता चंदन ग्रेवाल के नेतृत्व में पुलिस कमिश्नर गुरशरण सिंह संधू से मुलाकात करके राणा जंग बहादुर की गिरफ्तारी की मांग की थी, लेकिन गिरफ्तारी न हो पाने की सूरत में समुदाय के लोगों ने पिछले दिनों भगवान वाल्मीकि चौक पर धरना लगा दिया था। इसके बाद रोष प्रदर्शन करने शुरू कर दिए थे। वाल्मीकि संगठनों ने अभिनेता की गिरफ्तारी न होने पर 11 जुलाई को जालंधर बंद करने की चेतावनी दी थी। गत दिनों वाल्मीकि समुदाय के विभिन्न संगठनों ने बैठक की थी जिसमें फैसला लिया गया था कि यदि बुधवार तक जंग बहादुर की गिरफ्तारी न हुई तो वह सड़कों पर उतर आएंगे।

स्टार्टअप ग्रेट चैलेंज में प्रोत्साहन राशि, मासिक भत्ता दोनों में बढ़ोतरी होगी : धामी

एजेंसी

देहरादून। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बुधवार को घोषणा की कि स्टार्ट अप के तहत 'आइडिया ग्रेट चैलेंज' के रूप में दी जाने वाली प्रोत्साहन राशि को 50 हज़ार रुपए से बढ़ाकर दो लाख तथा स्टार्टअप को एक साल तक दिया जाने वाला मासिक भत्ता 10 हज़ार से बढ़ाकर 15 हज़ार रुपए किया जायेगा।

श्री धामी ने हरिद्वार रोड स्थित एक होटल में उद्योग विभाग द्वारा आयोजित 'स्टार्ट-अप ग्रांड चैलेंज' कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। उन्होंने इस दौरान 10 प्रतिभागियों को सम्मानित भी किया। मुख्यमंत्री ने एससी, एसटी, दिव्यांग और महिलाओं को दिया जाने वाले मासिक भत्ता 15 हज़ार से बढ़ाकर 20 हज़ार रुपए किये जाने की भी घोषणा की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने इन्वेस्ट इंडिया द्वारा तैयार की गई वैलनेस रिपोर्ट का विमोचन भी किया। श्री धामी ने कहा कि प्रदेश सरकार लगातार युवाओं को इनोवेटिव कार्यों एवं उनके विचारों को प्रोत्साहित कर रही है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्ष 2014 से देश के हर क्षेत्र में नवाचार हुए हैं। स्टार्टअप इंडिया, स्किल इंडिया, मेक इन इंडिया जैसे तमाम योजनाओं के जरिए देश में काम करने वाले उद्यमियों को प्रोत्साहन मिला है।

पुडुचेरी में कोरोना संक्रमण के 168 नए मामलों की पुष्टि

पुडुचेरी। केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में पिछले 24 घंटों के दौरान कोरोना वायरस संक्रमण के 168 नए मामले सामने आने के बाद संक्रमितों की कुल संख्या बढ़कर 1,67,091 हो गई। मंगलवार को जबकि प्रदेश में संक्रमण के केवल 91 नए कोरोना मामले आये थे। स्वास्थ्य विभाग के एक बयान के अनुसार मंगलवार को लिए गए 2452 स्वाब परीक्षणों में से 168 नमूने कोरोना वायरस से संक्रमित पाये गये। पुडुचेरी क्षेत्र में 132 नए मामले, कराईकल में 31 और यानम में पांच नए मामले सामने आए हैं। इस दौरान 81 लोगों को उपचार के बाद अस्पतालों से छुट्टी दे दी गयी। फिलहाल प्रदेश में कोरोना के 629 सक्रिय मामले हैं जिनमें से 620 होम आइसोलेशन में हैं और नौ अस्पताल में भर्ती हैं। पुडुचेरी में अब तक 1,67,091 लोग कोरोना से संक्रमित हो चुके हैं, जिनमें से 1,64,500 इस महामारी से निजात पा चुके हैं।

संविधान विवाद में केरल का पार्टी नेतृत्व उचित निर्णय लेगा : येचुरी

तिरुवनंतपुरम। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी(माकपा) महासचिव सीताराम येचुरी ने केरल के मत्स्य पालन एवं संस्कृति मंत्री साजी चेरियन की संविधान विरोधी टिप्पणी पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए बुधवार को कहा कि पार्टी का राज्य नेतृत्व की ओर से उचित निर्णय लिया जाएगा।

श्री येचुरी ने दिल्ली में संवाददाताओं से कहा, केरल के नेताओं से मंगलवार को बात हो चुकी है, इसलिए, अब मैं इस पर कुछ नहीं कहूंगा और राज्य के नेताओं द्वारा उचित निर्णय लिया जाएगा। पार्टी सचिवालय के वरिष्ठ सदस्य एवं मंत्री एम.वी.गोविंदन ने बुधवार को सचिवालय में हुई बैठक के बाद कहा कि सचिवालय की पूर्ण बैठक कल होगी।

श्री चेरियन के विरोध प्रदर्शन तेज होने और केरल विधानसभा में हंगामे के बाद आज सुबह सदन की कार्यवाही पूरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई। माकपा की केरल इकाई की बैठक से निकलने के बाद मीडिया द्वारा पूछे जाने पर श्री चेरियन ने कहा, मुझे इस्तीफा क्यों देना चाहिए?

श्री चेरियन की भारतीय संविधान पर अपमानजनक टिप्पणी के एक दिन बाद कांग्रेस , भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कार्यकर्ताओं ने मंत्री के इस्तीफे की मांग को लेकर हंगामा मचाया।

पथानामथिट्टा जिले में हुई पार्टी की एक बैठक में संविधान पर श्री चेरियन की तीखी टिप्पणी मंगलवार को सार्वजनिक होने के तुरंत बाद कांग्रेस के नेतृत्व वाले विपक्ष और राज्य भाजपा ने भी उनके इस्तीफे की मांग को लेकर बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन शुरू किया।

शार्ट न्यूज

सिंगल यूज प्लास्टिक के बैन को लेकर डीएम की व्यापारियों से बैठक

नई दिल्ली। सिंगल यूज प्लास्टिक के बैन को लेकर डीएम सोनिका सिंह व्यापारियों की एक बैठक बुलाई जिसमें एडीएम नागेंद्र श्रीपति त्रिपाठी, एसडीएम अरविंद राणा, डीपीओ हरीश, फेडरेशन ऑफ सदर बाजार ट्रेडर्स एसोसिएशन के चेयरमैन परमजीत सिंह पम्मा अध्यक्ष राकेश यादव, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुरेंद्र महेंद्रू, महासचिव कमल कुमार सहित पुरानी दिल्ली के अनेक व्यापारी नेतागण उपस्थित सहित कई अधिकारी उपस्थित थे। डीएम सोनिका सिंह ने व्यापारियों को बताया जो 19 वस्तुएं बैन की सूची जारी की गई है। उस पर सरकार सख्ती से कार्रवाई करने जा रही है इसके लिए सभी एसोसिएशन अपने व्यापारियों को सूचित करें किसी भी प्रकार की सिंगल यूज प्लास्टिक ना खरीदारी करें ना ही बेचे क्योंकि इसमें जुर्माने के साथ साथ कानूनी कार्रवाई है जिसमें जेल भी हो सकती है। इस अवसर पर परमजीत सिंह पम्मा व राकेश यादव यादव ने डीएम साहिबा को जानकारी दी के व्यापारियों के पास अभी कोई भी ऐसा विकल्प नहीं है जो इन वस्तुओं के बैन होने के बाद अपना कार्य कर सकें और कई व्यापारियों के पास तो लाखों रुपए का स्टॉक रखा हुआ है उनके लिए यह बड़ी मुश्किल का समय है कि वे यह स्टॉक का क्या करें ? फिर भी फेस्टा व्यापारियों को जागरूक करने के लिए अभियान चलाएगी।

दिल्ली पुलिस का एसआई, मुंशी रिश्वत लेते हुए कैमरे में कैद, वीडियो वायरल होने पर सस्पेंड

नई दिल्ली। दिल्ली में दो पुलिसकर्मी रिश्वत लेते हुए कैमरे में कैद हुए हैं। रिश्वत लेने के बाद भी काम नहीं करने पर वीडियो वायरल कर दिया गया। दोनों आरोपी पुलिसकर्मियों को सस्पेंड कर दिया गया है और पूरे मामले की विजिलेंस जांच का आदेस दिया गया है। वीडियो में सिविल ड्रेस में दिख रहे पुलिसकर्मी विकासपुरी थाने में सब इंस्पेक्टर और हेड कॉन्स्टेबल हैं। वीडियो में इन्हें नोटों की गड्डियां लेते देखा जा सकता है। बताया जा रहा है कि रिश्वत लेने के बाद भी काम नहीं होने के बाद इनका वीडियो वायरल कर दिया गया। डीसीपी घनश्याम बंसल ने कहा कि इस तरह के मामलों को कतई बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है। दोनों पुलिसकर्मियों को तुरंत सस्पेंड कर दिया गया है और विजिलेंस जांच का आदेश दिया गया है।

शिक्षिका से छीना बैग

नोएडा। सूरजपुर राजकीय इंटर कॉलेज की प्रधानाध्यापक बीते सोमवार को ऑफिस के काम से सेक्टर-39 आई थीं। वह शाम को कार से घर जा रही थीं। जब वह फेज-3 थाने के पास पहुंचीं तो बाइक सवार दो युवक आए। उन्होंने शिक्षिका से कहा कि उनकी कार के बोनट पर काला तेल पड़ा है। चालक कार से नीचे उतरकर देखने लगा तभी बदमाश उनसे बैग छीनकर भाग गए। पुलिस ने शिक्षिका की शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर लिया है।

पति को पीट-पीटकर मार डाला

नोएडा। सेक्टर-122 में मंगलवार रात को महिला ने मामूली झगड़ा होने पर अपने पति को पीट पीटकर मार डाला। मृतक के भाई ने अपनी भाभी के खिलाफ सेक्टर-113 थाने में केस दर्ज कराया है। पुलिस ने उसे हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। सेक्टर-122 में चंद्रशेखर अपनी पत्नी अंगूरी देवी के साथ रहता था। दोनों के बीच मंगलवार की रात को किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया। आरोप है कि अंगूरी देवी ने चंद्रशेखर की जमकर पिटाई की। इससे वह घायल हो गया। परिजनों ने उसे उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती करवाया। उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। मृतक के भाई रोहित कुमार ने अपनी भाभी अंगूरी देवी के खिलाफ सेक्टर-113 थाने में गैर इरादतन हत्या का मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस जांच में सामने आया है कि चंद्रशेखर शराब पीने का आदी था। शराब के नशे में वह अपनी पत्नी के साथ मारपीट और झगड़ा करता था। उसके भाई ने बताया कि रात को भी शराब के नशे में चंद्रशेखर और उसकी पत्नी के बीच झगड़ा हुआ था। हालांकि, पुलिस ने विभिन्न पहलुओं पर मामले की जांच शुरू कर दी है।

कार का शीशा तोड़कर चोरी

नोएडा। सेक्टर-75 मार्केट में किसी काम से गए व्यक्ति की कार का शीशा तोड़कर चोरों ने लैपटॉप और अन्य सामान चोरी कर लिया। पीड़ित जब गाड़ी के पास पहुंचा तो चोरी की जानकारी हुई। पीड़ित ने सेक्टर-113 थाना पुलिस से चोरी की शिकायत की है। जानकारी के अनुसार सेक्टर-79 स्थित महागुन सोसाइटी में रहने वाले मृत्युंजय कुमार सोमवार को अपनी कार लेकर सेक्टर-75 स्थित मार्केट में कुछ सामान खरीदने के लिए गए थे। उन्होंने अपनी कार को मार्केट के बाहर खड़ी कर दिया और सामान लेने के लिए चले गए। सामान लेने के कुछ देर बाद वह अपनी कार के पास लौटे तो कार का शीशा टूटा हुआ था। कार में रखा लैपटॉप और अन्य कीमती सामान गायब था। पीड़ित की शिकायत पर सेक्टर-113 थाना पुलिस घटना की जांच कर रही है।

सरकारी जमीन पर बने होटल और ढाबा ढहाए

ग्रेटर नोएडा। यमुना प्राधिकरण ने अतिक्रमण के खिलाफ बुधवार को अभियान चलाया। प्राधिकरण ने मथुरा जिले में अपने अधिसूचित क्षेत्र में पांच हेक्टेयर भूमि पर शराब की दुकान, होटल और ढाबा आदि को गिरा दिया। अतिक्रमण करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। यमुना प्राधिरकण ने मथुरा जिले के मांट तहसील के पानीगांव और टोल प्लाजा के नजदीक अवैध कॉलोनी काटने, ढाबा बनाने आदि की सूचना मिली। प्राधिकरण की अधिसूचित जमीन पर 10 से 12 लोगों ने अवैध रूप से शराब की दुकान और ढाबे खोल दिए थे। प्राधिकरण की टीम ने इनको नोटिस दिया था लेकिन उन्होंने अतिक्रमण नहीं हटाया। इसके बाद प्राधिकरण ने बुधवार को अभियान चलाया। यमुना प्राधिकरण के ओएसडी शैलेंद्र सिंह की अगुवाई में अभियान चलाया गया। मथुरा जिले के बांगर तहसील के मिरताना व पानीगांव में अवैध निर्माण को ध्वस्त किया गया। एक्सप्रेसवे के किनारे अवैध निर्माण करके बने पांच ढाबा व होटल को गिराया गया। यमुना प्राधिकरण के ओएसडी शैलेंद्र सिंह ने बताया कि इस अभियान के दौरान 25 करोड़ रुपये की जमीन अवैध कब्जे से मुक्त कराई गई। यमुना प्राधिकरण ने लोगों से अपील की है प्राधिकरण के अधिसूचित व अधिग्रहीत जमीन पर अवैध कब्जा करके प्लॉट बेचने वालों के झांसे में ना आएं। ऐसे लोग आम जन को ठग रहे हैं। प्राधिकरण की अधिग्रहीत जमीन पर किसी प्रकार का निर्माण व कब्जा करना अपराध है। ऐसे लोगों पर कार्रवाई की जाएगी।

अट्टा मार्केट से 20 लाख के आभूषण चोरी करने वाला ईरानी गिरोह का मास्टरमाइंड गिरफ्तार

नोएडा। पुलिस ने टप्पेबाजी कर अट्टा बाजार में ज्वेलरी की दुकानों से लाखों रुपये के आभूषण चोरी करने वाले ईरानी गिरोह के सरगना को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी से चोरी का करीब आठ लाख रुपये का सोना बरामद किया है। बदमाशों ने 14 जून को सेक्टर-27 स्थित अट्टा मार्केट में बदमाशों ने दिनदहाड़े कामाख्या ज्वेलर्स के नाम से दुकान से 20 लाख रुपये के आभूषण चोरी कर लिए थे। वारदात के बाद आरोपी सरेआम बाजार से आसानी से फरार हो गए थे। दुकान मालिक सुदीप भास्कर ने सेक्टर 20 थाने में अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज कराया था। एडीसीपी रणविजय सिंह ने बताया कि सूचना मिली थी कि कुछ संदिग्ध अट्टा मार्केट में ज्वेलरी की दुकान से सोना चोरी करने आए हैं। मुखबिर ने जानकारी दी कि आरोपी सेक्टर-27 इंदिरा मार्केट में चोरी करने आए हैं। इसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी की पहचान मध्यप्रदेश के भोपाल स्थित मुरली नगर निवासी नजफ अली उर्फ काले ईरानी के रूप में हुई है। पुलिस जांच में खुलासा हुआ है कि नजफ अली ईरानी गिरोह का सरगना है। गिरोह के दो आरोपी मौके से फरार हो गए। इनमें काले ईरानी का बेटा हैदर अली और एक अन्य आरोपी सरताज शामिल है। पुलिस उनकी तलाश में छापेमारी कर रही है।

संस्थापकों को श्रद्धांजलि, पिताओं को दिया सम्मान

नवीन शाहदरा के एसआर कैपिटल पब्लिक स्कूल में हुआ कार्यक्रम का आयोजन

प्रफुल्ल राय गौरवशाली भारत

पूर्वी दिल्ली। उत्तर पूर्वी दिल्ली के माननीय सांसद श्री मनोज तिवारी ने स्थापना दिवस और फादर्स डे समारोह के शुभ अवसर पर नवीन शाहदरा स्थित एसआर कैपिटल पब्लिक स्कूल में मां सरस्वती की प्रतिमा के साथ संस्थापक सदस्यों स्वर्गीय श्री साहिब राम यादव और स्वर्गीय श्रीमती रोशनी देवी की प्रतिमाओं का अनावरण किया। इस अवसर पर फादर्स डे के उपलक्ष्य में उन्होंने स्कूली बच्चों के पिताओं को सम्मानित भी किया। स्कूल ग्रुप के प्रमुख लक्ष्य छाबड़िया ने उनका आभार व्यक्त किया।

सांसद मनोज तिवारी ने अपने अनोखे अंदाज और विनम्रता से लोगों का दिल जीतकर कार्यक्रम की सुर्खियां बटोरी। विशिष्ट अतिथियों में दिल्ली भाजपा के महासचिव और पूर्व मेयर ईडीएमसी , श्री हर्ष मल्होत्रा, रोहताश नगर से भाजपा विधायक श्री जितेंद्र महाजन, निगम पार्षद श्री अजय शर्मा, पूर्व निगम पार्षद श्रीमति स्वाति गुप्ता, सामाजिक कार्यकर्ता श्री अनिल गुप्ता और श्री सुदेश चौधरी शामिल थे। संस्था के माननीय अध्यक्ष डॉ आर के यादव, प्रबंध निदेशक डॉ लक्ष्य छाबरिया, प्राचार्य श्रीमती एसके यादव और उप प्रधानाचार्य श्रीमती स्मृति यादव ने अभिभावकों को संबोधित किया और बच्चों का उत्साहवर्धन किया।

इस पावन अवसर पर विद्यालय की गंगा विहार शाखा के प्रबंधक श्री मुकेश यादव एवं प्रधानाचार्य श्रीमती करुणा यादव की उपस्तिथि ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। विद्यालय ने इस विशेष अवसर पर अनेक प्रतिभाशाली शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का अभिनंदन किया। टिमटिमाती आंखों और दर्शकों की मुस्कान ने सबके बीच खुशियां बिखेर दीं। छात्र-छात्राओं ने एक के बाद एक अपनी मनमोहक नृत्य प्रस्तुतियों से मंच पर धूम मचा दी।

पिताओं ने बैलून गेम, रैंप वॉक आदि गतिविधियों में भाग लिया और कई पुरस्कार जीते। संस्था के माननीय अध्यक्ष डॉ आर के यादव, प्रबंध निदेशक डॉ लक्ष्य छाबड़िया, प्राचार्य श्रीमती एसके यादव और उप प्रधानाचार्य श्रीमती स्मृति यादव ने अभिभावकों को संबोधित किया और बच्चों का उत्साहवर्धन किया।

गरीब विरोधी, नरेंद्र मोदी : श्रीनिवास बी वी

नई दिल्ली। रसोई पर महंगाई का वार जारी है, एक बार फिर रसोई गैस सिलेंडर के दामों में भारी वृद्धि कर दी गई है। रसोई गैस के दामों में की जा रही बार-बार वृद्धि जनता की परेशानी और समस्याओं को बढ़ाती जा रही है। इस पर भारतीय युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री श्रीनिवास बी वी जी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी न खाने देंगे और और न ही पकाने देंगे। भारतीय युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री श्रीनिवास बी वी जी ने कहा कि भाजपा के राज में .1रू 79.36, और LPG- रु 1053/सिलेंडर, यही भाजपाई अच्छे दिनों का बही-खाता है। 2014 के चुनाव प्रचार में पीएम मोदी ने महंगाई को बहुत बड़ा मुद्दा बनाया, पर आज रसोई गैस सिलेंडर हो, पेट्रोल डीजल हो, महंगाई ने आम जनता का तेल निकालकर रख दिया है। पीएम मोदी चीन को तो लाल आँख दिखा नहीं पाए, मगर टमाटर महंगाई के चलते जनता को लाल आँख दिखा रहा है, लोगों की थाली से खाना छिनता जा रहा है। भारतीय युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री श्रीनिवास बी वी जी ने यह भी कहा कि मनमोहन जी के समय कांग्रेस सरकार महंगा खरीदकर जनता को सस्ता बेचती थी। मगर अब अंतरराष्ट्रीय बाजार में सब कुछ सस्ता होने के बावजूद जनता को महंगा बेचा जा रहा है। कभी महंगाई को हराने की बात करने वाले पीएम मोदी का महंगाई प्रेम, आज जगजाहिर है। महंगाई के प्रति इनकी गलत नीतियों की वजह से ही आज अमीर और अमीर हो गए हैं और गरीब और गरीब। उन्होंने केंद्र सरकार से यह मांग कि प्रधानमंत्री देश के लोगो के लोगो का दर्द समझे, बेरोजगारी से आज जनता त्रस्त है, महंगाई ने आम आदमी की कमर तोड दी है, तो सरकार अपने फैसलों पर पुन: विचार करे और जल्द से जल्द बड़े हुए दाम वापस ले।

पुराने विवाद को लेकर दो पक्षों में जमकर चले लाठी-डंडे

ग्रेटर नोएडा। दनकौर के मकनपुर बांगर गांव के नजदीक दो पक्षों में पुराने विवाद को लेकर जमकर लाठी-डंडे और लोहे की रॉड चली। इस घटना में दोनों पक्षों के कई लोग घायल हो गए। घायलों का अस्पताल में इलाज चल रहा है। इस संबंध में दोनों पक्षों ने एक दूसरे के खिलाफ कोतवाली पहुंचकर शिकायत दी है।

मकनपुर बांगर गांव निवासी सुमित ने बताया कि वह अपने गांव के नजदीक स्थित कंपनी में नौकरी करते हैं। जहां उनके पड़ोस के गांव का कादलपुर गांव के रहने वाले कुछ अन्य युवक भी नौकरी करते हैं। कंपनी में काम करते वक्त उनका कादलपुर गांव के इशुभ से कई दिन पहले विवाद हो गया था। वह मंगलवार को किसी काम के लिए अपने घर से दनकौर आ रहे थे। रास्ते में आरोपी पक्ष के इशुभ ने अपने अन्य साथियों के साथ लाठी-डंडे और लोहे की रॉड से उन पर हमला कर दिया।

इस घटना में उसको और उनके एक दोस्त को चोट आई है। वहीं, दूसरे पक्ष के इशुभ का कहना है कि जब वह कंपनी से काम करके अपने घर को लौट रहा था तो आरोपी सुमित ने अपने साथियों के साथ मिलकर उस पर और उसके अन्य साथियों पर हमला कर दिया। लोहे की रॉड से इशुभ और उसके एक दोस्त को चोट आई है। घायल अवस्था में दोनों पक्षों के लोग कोतवाली पहुंचे।

एटीएस ग्रीन सोसाइटी में लगी आग, महिला को रेस्क्यू कर बचाया

नोएडा। सेक्टर-50 स्थित एटीएस ग्रीन सोसाइटी में मंगलवार रात को फ्लैट में भयंकर आग लग गई। देखते ही देखते आग ने ऊपरी मंजिल के एक और फ्लैट को चपेट में ले लिया। इस दौरान एक महिला फ्लैट में फंस गई। मौके पर पहुंचे दमकलकर्मियों ने रेस्क्यू कर महिला को बचाया और आग पर काबू पाया। महिला को उपचार के लिए निजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। एफएसओ एसएन सिंह ने बताया कि सेक्टर-50 में एटीएस ग्रीन सोसाइटी है। यहां के फ्लैट संख्या 105 रशीदा रहती हैं। उनके फ्लैट में रात करीब पौने एक बजे एसी का कम्प्रेशर फटने से आग लग गई। कुछ ही देर में आग ने भयंकर रूप ले लिया।

सांसद यमुना क्रिकेट महोत्सव के दूसरे दिन बुराड़ी बुल्स ने करावलनगर हीरोज को एवं ने को हराकर मैच जीते

लोकसभा सत्र के बाद आज़मगढ़ में करवाएँगे खेल कुम्भ : दिनेश लाल यादव निरहुआ

आनंद राय गौरवशाली भारत

नई दिल्ली। सांसद यमुना क्रिकेट महोत्सव के तहत आज डिस्ट्रिक्ट पार्क नंद नगरी के खेल मैदान पर आज दो टी20 मैचों आयोजन हुआ सुवह करावलनगर हीरोज और बुराड़ी बुल्स तथा शाम को घोंडा लायंस और सीमापुरी स्ट्राइकर्स की टीमों के बीच मैच हुआ इस अवसर पर खिलाड़ियों को हौसला देने के लिए खेल महोत्सव के आयोजक सांसद मनोज तिवारी के साथ भोजपुरी अभिनेता और आजमगढ़ से सांसद दिनेश लाल यादव निरहुआ मैदान पर पहुंचे इस दौरान भाजपा नेता नीलकांत बक्शी जिला अध्यक्ष मास्टर विनोद कुमार महामंत्री मनोज त्यागी गुलाब सिंह राठौर जितेन्द्र कंवर डॉ यूके चौधरी जिला उपाध्यक्ष आशीष तिवारी आनंद त्रिवेदी दिनेश धामा ठाकुर बृजेश सिंह पूर्व निगम पार्षद पुनीत शर्मा कु . रिंकू आशीष पुनिया भाजपा नेता संजीव उपाध्याय वीरेंद्र खंडेलवाल खेल महोत्सव के सहयोगी यमुना कमल क्लब के पदाधिकारियों तेज प्रकाश अश्विनी शर्मा गंगा राम माहौर रामनिवास आर डी शर्मा सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

इस अवसर पर सांसद मनोज तिवारी ने कहा कि लगातार तीसरे इस आयोजन में युवाओं का उत्साह न सिर्फ हमें ऊर्जा प्रदान कर रहा है बल्कि छुपी खेल प्रतिभाओं को मिलने वाले उचित अवसर से मैं संतुष्ट हूं और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के संकल्प को साकार करने मे अपनी भूमिका का शुद्ध अंत:करण से निर्वहन करने की कोशिश कर रहा हूं इन युवाओं में अगर एक भी खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गया तो यह मेरे लिए और मेरे संसदीय क्षेत्र के लिए गौरव की बात होगी और इसका मैं भरपूर प्रयास कर रहा हूं खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ अपने संसदीय क्षेत्र में खेल संसाधनों को विकसित करने का भी मेरा लक्ष्य है जिसे मैं जिम्मेदारी पूर्वक पूरा करूंगा।

प्रदेश पूर्वांचल मोर्चा अध्यक्ष कौशल मिश्रा की अगुवाई में डॉ मुख़र्जी की जयंती पर प्रदेश के सभी जिलों के विभिन्न 14 जगहों पर स्वच्छता अभियान चलाया गया

नई दिल्ली। भाजपा पूर्वांचल मोर्चा द्वारा दिल्ली के सभी जिलों के विभिन्न 14 स्थानों पर अध्यक्ष श्री कौशल मिश्रा की अगुवाई में जनसंघ के संस्थापक डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी की जन्म जयंती के अवसर पर डॉ मुखर्जी की प्रतिमा व चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उनके नाम पर बने स्कूल, पार्क, सड़क व भवन पर स्वच्छता अभियान चलाया गया। मोर्चा कार्यकर्ताओं ने बड़े स्तर पर साफ सफाई की और कूड़े का निपटान किया। चितरंजन पार्क के मुखर्जी सर्वोदय विद्यालय में चलाए स्वच्छता अभियान कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री कौशल मिश्रा ने कहा कि एक देश, एक संविधान के समर्थक, भारत रत्न श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुख़र्जी जी का जीवन देशवासियों के लिए प्रेरणादायक है। डॉ मुखर्जी सच्चे अर्थो में मानवता के उपासक और सिद्धान्तवादी व्यक्ति थे। वे आजीवन अपने सिद्धांतों पर चलते रहे और भारत की अखंडता एवं एकता के लिए कोई समझौता नहीं किया। राजनीति उनके लिए राष्ट्र सेवा का साधन थी।

मीडिया प्रमुख संजय तिवारी ने कहा कि जहां हुए बलिदान मुखर्जी वह कश्मीर हमारा है। देशवासियों के इस सपने को साकार देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया है। इस मौके पर प्रदेश मंत्री श्री एस राहुल, मोर्चा मीडिया प्रमुख श्री संजय तिवारी, नई दिल्ली जिला अध्यक्ष आर एन त्रिपाठी एवं दक्षिणी दिल्ली के अध्यक्ष प्रभास चंद्र और महामंत्री सुरेश सिंह भी मौजूद रहे। सिविक सेंटर में हुए कार्यक्रम में मोर्चा प्रभारी बिपिन बिहारी सिंह ने कहा कि डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जीवन दर्शन अनुकरणीय है।

जहां हुए बलिदान मुखर्जी वह कश्मीर हमारा है का नारा लगाते हुए उन्होंने कहा कि देशवासियों के इस सपने को साकार देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया है। इस मौके पर मोर्चा महामंत्री श्री संतोष ओझा उपस्थित थे।

तीसरी मंजिल से गिरकर नौ वर्षीय बच्ची की मौत

नोएडा। ममूरा गांव में निर्माणाधीन मकान की तीसरी मंजिल से नौ वर्षीय बच्ची गिर गई। उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। इस मामले में बच्ची के पिता ने मकान मालिक और ठेकेदार पर लापरवाही का आरोप लगा केस दर्ज कराया है।

विजय बहादुर ममूरा गांव में विजय रस्तौगी के मकान में तीसरी मंजिल पर किराए पर रहते हैं। उन्होंने पुलिस से शिकायत की है कि मालिक अपने मकान में चौथी मंजिल का निर्माण कार्य करा रहा है।

निर्माण के कारण तीसरी मंजिल पर लगी बालकनी के जाल को हटाया गया था। दो जुलाई को विजय की नौ वर्षीय बेटी वर्षा बालकनी में जाल नहीं होने के कारण तीसरी मंजिल से नीचे गिर गई। इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई।

मेट्रो स्टेशन पर युवती से छेड़छाड़, आरोपी गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली के एक मेट्रो स्टेशन पर एक महिला के कथित यौन उत्पीड़न के मामले में पुलिस ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि आरोपी की पहचान यहां कोटला मुबारकपुर निवासी मानव अग्रवाल के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि वह घटना के बाद नेपाल भाग गया था और उसने हाल ही में अग्रिम जमानत के लिए अर्जी भी दायर की थी।

यह घटना मेट्रो के जोरबाग स्टेशन पर दो जून को हुई थी। पीड़ित महिला ने ट्विटर पर आपबीती साझा की थी। पुलिस उपायुक्त (रेलवे) हरेंद्र के सिंह ने कहा, मीडिया के माध्यम से घटना के बारे में पता चलने के बाद आरोपी चार जून को नेपाल भाग गया था। उसने उस अवधि के दौरान अग्रिम जमानत के लिए भी आवेदन किया था।

पुलिस ने बताया कि आरोपी को दक्षिणी दिल्ली के साकेत इलाके से गिरफ्तार किया गया। पीड़िता ने सिलसिलेवार ट्वीट कर दावा किया था कि दो जून को जब वह मेट्रो की येलो लाइन पर सफर कर रही थी तभी एक अजनबी व्यक्ति ने उससे एक पता पूछा।

महिला ने दावा किया था कि बाद में जब वह मेट्रो ट्रेन से उतरकर, कैब बुक करने के लिए प्लेटफॉर्म पर पहुंची तो आरोपी फिर से उसके पास आया और पते के बारे में अधिक जानकारी लेने लगा। महिला ने दावा किया था कि जब उसने व्यक्ति की मदद का प्रयास किया तो उक्त व्यक्ति अपने गुप्तांग का प्रदर्शन करने लगा।

सड़क हादसों में दो की मौत, एक घायल

नोएडा। शहर में सड़क हादसों में दो लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। इसके अलावा एक युवक हादसे में गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। चौड़ा सादतपुर गांव निवासी मनोज कुमार 20 जून को जीआईपी मॉल के पास से गुजर रहा था। इसी दौरान वाहन चालक ने उन्हे टक्कर मार दी थी। उनकी सोमवार रात अस्पताल में उपचार के दौरान मौत हो गई। सेक्टर-63 स्थित एफएनजी रोड पर सोमवार को अज्ञात व्यक्ति को वाहन चालक ने टक्कर मार दी थी। घायल व्यक्ति को लोगों ने जिला अस्पताल में भर्ती कराया। उसकी मौत रात में उपचार के दौरान हो गई। दलित प्रेरणा स्थल के पास सोमवार को सड़क हादसे में सेक्टर-39 निवासी रविंद्र कुमार गंभीर रूप से घायल हो गए। उनको उपचार के लिए पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

उपराज्यपाल ने एमसीडी स्कूलों के 'स्मार्ट मॉडल' का पायलट प्रोजेक्ट लान्च किया

विवेक राय गौरवशाली भारत

नई दिल्ली। उपराज्यपाल श्री वी.के. सक्सेना ने कल एमसीडी द्वारा संचालित स्कूलों को स्मार्ट मॉडल' स्कूल बनाने के पायलट प्रोजेक्ट का शुभारंभ सी.पी. ब्लॉक, पीतम पुरा, स्थित नगर निगम प्रतिभा स्कूल से किया। नगर निगम स्कूलों में उच्च स्तरीय शिक्षा एवं तकनीकी ढ़ांचे को अपग्रेड करने के उद्देश्य को पूर्ण करने के उद्देश्य से चालू किए जा रहे इस प्रोजेक्ट के बारे में बोलते हुए उपराज्यपाल ने कहा कि नगर निगम के 25 ऐसे स्कूल 15 अगस्त, 2022 तक तैयार कर आजादी के अमृत महोत्सव पर लोकार्पित कर दिया जाएगा। श्री सक्सेना ने यह भी घोषणा की कि गणतंत्र दिवस, 26 जनवरी, 2023 तक 400 अन्य स्कूलों को पूर्णत: नवीनीकृत एवं स्मार्ट तकनीक से सम्पन्न कर तैयार कर लिया जाएगा

ध्यानयोग्य है कि उपराज्यपाल ने दिनांक 18 जून, 2022 को एच ब्लॉक, अशोक विहार स्थित एमसीडी स्कूल के अपने पहले दौरे में पायलट आधार पर मरम्मत/नवीनीकरण हेतु 25 एमसीडी स्कूलों की जल्द से जल्द पहचान करने की घोषणा की थी। 07 हजार वर्गमीटर में बना सीपी ब्लॉक , पीतम पुरा स्थित स्कूल, जहां कल मरम्मत, पेंटिंग एवं साफ सफाई के कार्य का शुभारंभ किया गया था, इस श्रेणी में पहला है।

श्री सक्सेना ने मौके पर उपस्थित अधिकारियों को स्कूल में निर्माण एवं मरम्मत संबंधी कार्य तथा आधुनिक फर्नीचर, तकनीक से लैस ब्लैक बोर्ड, इंटरेक्टिव पैनल एवं अन्य पढ़ाने की वस्तुओं के साथ इस कार्य को 25 जुलाई, 2022 तक पूरा करने के निर्देश दिये ।

उपराज्यपाल के निर्देश पर नगर निगम स्कूलों के मरम्मत/पेंटिंग/सफेदी हेतु 14.85 करोड रूपये आवंटित किए गए हैं तथा 29 सर्वाधिक प्रभावित भवनों की मरम्मत हेतु इंजीनियरिंग विभाग को 4.41 करोड़ रूपये आवंटित किए गए। जिन स्कूलों का मरम्मत/नवीनीकरण और विकास किया जा रहा है, उनमें गैर सरकारी संगठनों और कॉरपोरेट जगत को उनके सीएसआर फंड के तहत सहभागी बनाने का भी प्रयास किया जाएगा।

सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ सम्पन्न यह स्कूल समान रंग और एक ही डिजाइन पैटर्न में होंगे एवं स्मार्ट शिक्षण पद्धति और शिक्षाशास्त्र के माध्यम से शिक्षा को और रोचक बनाया जा सकेगा।

कैग रिपोर्ट ने हमारे आरोप की कर दी है पुष्टि : बिधूड़ी

मुख्यमंत्री केजरीवाल के पास नहीं है दिल्ली के लिए फुरसत

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी ने कहा है कि सीएजी रिपोर्ट में जिस तरह केजरीवाल सरकार की असफलताओं को उजागर किया गया है, उससे हमारा यह आरोप साबित हो जाता है कि आप सरकार हर मोर्चे पर पूरी तरह फेल हो गई है। 88 फीसदी अनधिकृत कॉलोनियों में सरकार सीवर उपलब्ध नहीं करा पाई, मजदूरों के कल्याण के रूप में वसूली गई राशि में से 94 फीसदी का इस्तेमाल ही नहीं किया गया। डीटीसी को 5280 करोड़ रुपए का नुकसान एक साल में ही हो गया। दिल्ली की हाउसिंग प्लानिंग भी पूरी तरह फेल हो गई है।

बिधूडी ने कहा केजरीवाल सरकार किस मुंह से अपने आपको गरीबों की हमदर्द कहती है जबकि सच्चाई यह है कि बिल्डर और अन्य निर्माण कार्यों में लगे मजदूरों के कल्याण के लिए लगाए गए टैक्स के रूप में सरकार ने 3273.64 करोड़ रुपए वसूल किए। इस राशि में से सिर्फ 182.88 करोड़ रुपए मजदूरों के कल्याण पर खर्च हुए। 2019-20 के दौरान सरकार के पास 7,499 करोड़ रुपया सरप्लस पड़ा रहा यानी सरकार ने टैक्स तो वसूल कर लिया लेकिन जनता पर खर्च ही नहीं कर पाई। सीएजी रिपोर्ट में साफतौर पर कहा गया है कि इस सरकार के पास कोई प्लानिंग या योजनाओं को लागू करने की दृष्टि ही नहीं है। जाहिर है कि सरकार सिर्फ प्रचार के बल पर कागजों पर ही योजनाए लागू करती रही है। अनधिकृत कॉलोनियों में सीवर व पानी की सुविधाएं देने के लिए सरकार ने जो योजनाएं बनाई, उनका पैसा दूसरी योजनाओं पर खर्च कर दिया गया। 1797 कॉलोनियों में दिसंबर 2018 तक पीने का पानी मुहैया कराने का टारगेट था लेकिन सरकार केवल 353 कॉलोनियों में ही पानी पहुंचा पाई। आप सरकार टैंकर माफिया को खत्म करने के नाम पर सत्ता में आई लेकिन 38 फीसदी टैंकरों पर जीपीएस ही नहीं पाया गया और 572 कॉलोनियों में अब भी टैंकरों से ही पानी की सप्लाई होती है।

बिधूड़ी ने कहा कि दिल्ली जल बोर्ड और डीटीसी आप सरकार के निकम्मेपन का उदाहरण बन गए हैं। 2019 के अंत तक दिल्ली जल बोर्ड 28 हजार करोड़ से ज्यादा के कर्ज तले डूब चुका था लेकिन सिर्फ 351 करोड़ रुपए का लोन चुंकाया गया।

लोन दिलाने के नाम पर ठगने वाले गिरोह का बदमाश गिरफ्तार

नोएडा। सेक्टर-63 पुलिस ने लोन कराने के नाम पर ठगी करने वाले गिरोह के बदमाश को बुधवार को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उसको अदालत में पेश कर जेल भेज दिया। आरोपी के तीन साथी अब भी फरार हैं। उनकी तलाश में पुलिस छापेमारी कर रही है। जगदीश प्रसाद ने थाने में शिकायत दी थी कि सेक्टर-63 में फर्जी ऑफिस खोलकर कुछ लोग लोन देने के नाम पर ठगी कर रहे हैं। आरोपियों ने उनके साथ भी हजारों रुपये की ठगी की है। पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर गिरोह के कार्यालय पर छापेमारी की। यहां से पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। तीन आरोपी पुलिस को चकमा देकर भाग गए। गिरफ्तार किए गए ठग की पहचान प्रभात चौधरी उर्फ अरुणगिरी के रूप में हुई है। पुलिस ने उससे जालसाजी में इस्तेमाल मोबाइल बरामद किया है। गिरोह के फरार आरोपियों में रोहित उर्फ आलम, मोनू चौधरी और मनोज सिंह हैं। इनकी तलाश में पुलिस छापेमारी कर रही है। पुलिस जांच में सामने आया कि ठग विभिन्न कंपनियों में मोटे वेतन पर नौकरी लगाने का झांसा देकर लोगों के पास कॉल करते थे।

संपादकीय

राजनीति तुष्टिकरण का कड़वा फल है जनविस्फोट

निसंदेह तमाम प्रयासों के बावजूद आज भी भारत जनसंख्या विस्फोट की समस्या से त्रस्त हैं और इस समस्या के चलते ही अभी भी करीब 30 फीसदी लोग गरीबी की रेखा के नीचे का जीवन व्यतीत करने को विवश हैं यानि कह सकते हैं कि जीवन की आधारभूत सुविधाएं भी इन लोगों को उपलब्ध नहीं हैं । आप सोच भी नहीं सकते कि कैसी हालत होगी उन लोगों की जिनके पास न सिर छुपाने को छत हैं, न पोषक और पर्याप्त भोजन । अच्छे कपड़ों व शिक्षा की तो बात ही दूर की कौड़ी है । जनविस्फोट अब संघर्ष का पर्याय बन गया है । जनविस्फोट की वजह से न अमीर को चैन है न गरीब को सुख । दोनों एक दूसरे को अपना दुश्मन मान रहे हैं । सारा विश्व आज वर्ग संघर्ष में उलझा है । समाजवाद व समानता की अवधारणा करीब -करीब मर गई है , आदमी से मशीनें महत्वपूर्ण हो गई हैं । आज के लालच में आने वाले कल की चिंता गायब है यदि समय रहते कुछ नहीं किया गया तो हालात और भी खराब हो सकते हैं ।

अमीर लोगों के विलासिता भरे जीवन के बारे में सुनकर गरीब लोगों के मन में आक्रोश होना बहुत स्वाभाविक है । अगर मनोवैज्ञानिकों की मानें तो एक दिन यही गुस्सा विश्व युद्ध को न्यौता दे सकता है । इस आक्रोश को समय - समय पर कई देशों में जन आंदोलनों व सत्ता पलट के रूप में देखा भी जा चुका है । लगातार हो रहे जनविस्फोट से एक बड़ा ख़तरा सामने दिखता है कि कहीं यें गरीब मिलकर अपने अस्तित्व की रक्षा की ?खातिर भयंकर विनाश को जन्म न दे दें। समय की मांग है कि गंभीरता पूर्वक जनविस्फोट की समस्या से तो निपटा जाए और इसके मूल कारणों की पड़ताल कर उन्हे रोका जाए । जनसंख्या वृद्धि दर में कमी के बावजूद भी हम सारी दुनिया में सबसे ज़्यादा जनसंख्या बढ़ा रहे हैं और आने वाले बरसों में आज के हालात रहने पर चीन भी हमसे पीछे होगा ।

जनविस्फोट सदियों पुरानी ऐसी समस्या है जो अब बेकाबू हो चली है । हालांकि ठंडी जलवायु व ध्रुवों के नज़दीकी क्षेत्रों में आज भी जनसंख्या घनत्व बहुत कम है इसी तरह मरुस्थल व दुर्गम पहाड़ी इलाके आज भी 'मानवसमूह' देखने को तरसते हैं पर गर्म , मानसूनी व मैदानी व उपजाऊ इलाको में जनविस्फोट की भयंकर नदी बह रही है जो उनकी सारी प्रगति को लील रही है ।

जनविस्फोट नकारात्मक व सकारात्मक दोनों ही कारणों से हुआ है । जहां शिक्षा का अभाव , औरत को सेक्स मशीन में तब्दील कर देना , उसकी आर्थिक स्थिति खराब होना , परिवार नियोजन के साधन या उनके सही उपयोग का पता न होना,, संतान उत्पत्ति को भगवान देन मान बैठना , धर्म से जोड़ देना , अपने वर्चस्व की लड़ाई के नाम पर ज्यादा से ज्यादा संतान पैदा करना , वर्ग संघर्ष में संख्याबल से विजय पाने की चाह , अपनी आय कम होने से संतान की कमाई से आगे बढ़ने का लोभ , दूरदृष्टि की कमी ,जागरुकता का अभाव ,रुढियां , वंशबेल को आगे ले जाने का मोह आदि अनेक नकारात्मक कारण हैं तो वहीं बढ़ती सुविधाएं , स्वास्थ्य सेवाएं अच्छी हो जाना, अच्छे इलाज की व्यवस्था होना , जीवन स्तर में वृद्धि होना , भूख , अकाल , कुपोषण , बीमारी , प्राकृतिक आपदाओं से मौतें अपेक्षाकृत कम होना आदि अनेकानेक कारणों ने भी जनसंख्या को तेजी से बढ़ाया है । भारत में तो जनविस्फोट की अब हद हो गई है । कारण कुछ भी व कितने भी हों पर असलियत यही है कि सुरसा के मुख सी बढ़ती आबादी न केवल विकास की गति को मंथर कर रही है अपितु जनसंख्या के एक बड़े भाग का पेट भरने में जी डी पी अधिकांश हिस्सा खर्च हो रहा है । अब सवाल यह है कि इस समस्या का हल क्या हो ? क्या जन्मवृद्धि दर पर रोक से काम बन जाएगा ? या चीन की ही तरह भारत में भी कठोर नीति बने और सब पर एक से ज़्यादा बच्चे को जन्म देने पर प्रतिबंध आयद किया जाए ? पर क्या इतने सारे धर्मो व राजनीतिं के चलते यह संभव है भारत में ? शायद नहीं । मगर यदि देश को विकास की सड़क पर तेजी से दौड़ आना है तो फिर जाति धर्म संप्रदाय क्षेत्र आदि के राजनीतिक लाभों के मोह को छोड़कर देश में तार्किक तरीके से एक निश्चित जनसंख्या वृद्धि नियंत्रण सिद्धांत तो लागू करना ही होगा।

बड़ी चुनौती है नासूर बन चुके प्लास्टिक प्रयोग को नियंत्रित करना

निर्मल रानी

पॉलीथिन और प्लास्टिक का दिनोंदिन बढ़ता जा रहा उपयोग इस समय पूरे देश और देशवासियों के लिये विकराल समस्या का रूप धारण कर चुका है। पहले भी इसे नियंत्रित करने के कई असफल प्रयास हो चुके हैं परन्तु इसका उपयोग कम होना तो दूर और भी बढ़ता ही जा रहा है। तेज़ रफ़्तार ज़िन्दिगी और मानवीय आवश्यकताओं ने तो इनका चलन बढ़ाया ही है साथसाथ प्लास्टिक व पॉलीथिन उद्योग तथा इसके उत्पादन में इस्तेमाल होने वाले कच्चे माल के बड़े व प्रभावशाली उत्पादनकर्ता उद्योगपतियों के ऊँचे रसूख़ के कारण भी इस पर नियंत्रण पाना आसान नहीं है। बहरहाल एक बार फिर भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने पॉलीथिन और सिंगल यूज़ प्लास्टिक को प्रतिबंधित करने का आदेश जारी किया है। मज़े की बात तो यह है कि प्रतिबंधित किये जाने वाली प्लास्टिक व पॉलीथिन सामग्री की जो सूची जारी की गई है उससे कई गुना पॉलीथिन व प्लास्टिक का इस्तेमाल प्रतिबंधित सूची से बाहर रखी गई अनेक वस्तुओं में किया जाता है। 1 जुलाई से जिन प्लास्टिक उत्पाद को प्रतिबंधित किया गया है उनमें पॉलिथीन बैग,प्लास्टिक की प्लेट, कप, गिलास, कांटे, चम्मच, चाकू व ट्रे सहित अन्य कटलरी संबंधित सामग्री के साथ साथ सिगरेट पैकेट के ऊपर की पन्नी, गुब्बारे की प्लास्टिक की छड़ें, प्लास्टिक ईयर बड,मिठाई बॉक्स व निमंत्रण कार्ड पर लगाई जाने वाली प्लास्टिक, थर्मोकॉल का सजावटी सामान, पीवीसी के बैनर व 75 माइक्रॉन तक के पॉलिथीन आदि मुख्य रूप से शामिल हैं। सरकार द्वारा जारी अधिसूचना के मुताबिक़ एक जुलाई से उपरोक्त पलास्टिक व पॉलीथिन सामग्रियों व 75 माइक्रॉन से कम मोटाई वाले पॉलिथीन के निर्माण, विक्रय, वितरण भंडारण, परिवहन व उपयोग प्रतिबंधित हो गया है । जबकि अधिसूचना के अनुसार 31 दिसंबर के बाद 120 माइक्रोन तक के पॉलिथीन पर भी रोक लगा दी जायेगी सरकारी अधिसूचना के अनुसार इन सामग्रियों के उपयोग के निर्धारित मानदंडों का यदि कोई भी व्यक्ति उल्लंघन करेगा वह पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 के तहत निर्धारित दंड का भागीदार होगा। इस अधिनियम का अनुपालन करने में विफल रहने वाले व्यक्ति को पांच साल तक के कारावास या एक लाख रुपये तक के जुर्माने या दोनों की सज़ा सुनाई जा सकती है। और यदि कोई इसके अनुपालन में विफल होगा या इन नियमों का बार बार उल्लंघन करेगा तो हर दिन के हिसाब से उस अवधि के दौरान जब तक कि उल्लंघन जारी रहता है, उल्लंघनकर्ता व्यक्ति पर प्रतिदिन के हिसाब से पांच हज़ार रुपए अतिरिक्त जुर्माना लगाया जा सकता है। पर्यावरण विशेषज्ञों के अनुसार सरकार के इस निर्णय से पर्यावरण को लाभ होगा। क्योंकि सूखे कचरे में पॉलिथीन व सिंगल यूज प्लास्टिक पर्याप्त मात्रा में होता है। जोकि पर्यावरण के लिए अत्यंत हानिकारक होता है। विशेषज्ञों की मानें तो सरकार के इस फैसले से सूखे कचरे में कमी तो ज़रूर आएगी परन्तु इसके सकारात्मक परिणाम के लिए कम से कम दो साल तक प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है। प्लास्टिक व पॉलीथिन जैसे उत्पाद केवल पर्यावरण को ही नुक़्सान नहीं पहुंचाते बल्कि नाली व नालों को बाधित कर गंदे जल प्रवाह को भी रोकते हैं। यहाँ तक कि वर्षा ऋतु में तो यह ख़ास तौर पर शहरी क्षेत्रों में बाढ़ जैसी स्थिति भी पैदा कर देते हैं। आज हमारे देश में प्लास्टिक व पॉलीथिन का इस्तेमाल सबसे अधिक दूध की थैलियों के रूप में तथा पानी की बोतलों की शक्ल में हो रहा है। इनके अतिरिक्त कोल्ड ड्रिंक्स व शराब भी अधिकांशतय: प्लास्टिक बोतलों में ही आने लगी हैं। आज कल और भी नित्य नये नाना प्रकार के जूस व ड्रिंक्स के अनेकानेक उत्पाद प्लास्टिक की बोतलों में ही आने लगे हैं।

एनजीओवाद की कोख से उपजे आन्दोलनजीवियों के खिलाफ और सख्त कदम उठाये जाएं

डॉ. अजय खेमरिया

इस एनजीओवाद के विरुद्ध मोदी सरकार ने बेशक बहुत सख्त कदम उठाए हैं। विदेशी फंड हासिल करने के लिए एफसीआरए में संशोधन किए। इस कानून में संशोधन से पहले वर्ष 2010 से 2019 के बीच विदेशी चंदे की आमद दोगुनी दर से बढ़ी पाई गई।

भारत के दिवंगत सीडीएस जनरल विपिन रावत ने एक बार कहा था कि देश को ढाई मोर्चे पर युद्ध लड़ना पड़ रहा है। ढाई मोर्चे का मतलब था- एक मोर्चा चीन, दूसरा पाकिस्तान और आधा घर के अंदर सिविल सोसाइटी के भेष में सक्रिय माओवादी, नक्सलवादी, एनजीओवादी, एकेडेमिक्स, एक्टिविस्ट, वकील, मीडिया और एक बड़ा वर्ग सेक्यूलर राजनीतिज्ञों का। असंदिग्ध रूप से भारत इस ढाई मोर्चे पर युद्धरत है।

असल में भारत की संसदीय राजनीति और प्रशासन एक संविधानेत्तर आन्दोलनजीवी फ़ौज से भी जूझ रही है। लेफ्ट लिबरल विचारधारा ने जिस अभिजन वर्ग को अपने प्रभाव में ले रखा है उसने भारत विरोधी एजेंडे पर काम करते हुए शासन, राजनीति और समाज के एक वर्ग की अधिमान्यता भी हासिल कर रखी है। कभी कृषि विशेषज्ञ, कभी राजनीतिक विश्लेषक, कभी मानवाधिकार कार्यकर्ता, कभी फैक्ट चेकर, कभी विधिवेत्ता, हर भेष में हमें यह नजर आते हैं। हर उस बदलाव का विरोध करना इनका मूल धर्म है जो भारत में सामाजिक बदलाव की बुनियाद रखता है।

भारत का आत्मगौरव भाव, बहुसंख्यक चेतना, उसकी अस्मिता, सँस्कृति और लोकपरंपरा अल्पसंख्यकवाद के आगे इनके लिए नफरत और हिकारत के विषय हैं। झूठ और सफेद झूठ की सीमा तक नैरेटिव गढ़ना इनका एकमेव एजेंडा है। दुर्भाग्य से स्वाधीनता के बाद इस गिरोहबंदी को सत्ता प्राधिकार से भरपूर संरक्षण और अंध समर्थन प्राप्त रहा है। तीस्ता के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने जो कुछ कहा है उसे स्वयंभू राष्ट्रीय चरित्र की मीडिया में कहां और कितनी जगह मिली है? इसका तथ्यान्वेषण करें तो गृह मंत्री अमित शाह की बात प्रमाणित होती है जिसमें वे भारत विरोधी त्रिगुट के हिस्से के तौर पर मीडिया को शामिल करते हैं। सच्चाई यह है कि तीस्ता इस गठजोड की प्रतिनिधि भर हैं। देश में ऐसे एनजीओ और उनके सरपरस्त भरे पड़े हैं। यूपीए सरकार के समय ताकतवर सामाजिक कार्यकर्ता रहे पूर्व ब्यूरोक्रेट हर्ष मन्दर इस समय देश से फरार चल रहे हैं। उनके जलवे किसी से छिपे नहीं हैं। राष्ट्रीय सलाहकार परिषद में बैठकर हर्ष मन्दर ने देश भर में अपना नेटवर्क खड़ा किया। बगैर अनुमति के बीसियों चिल्ड्रन होम खोलकर उनमें रहने वाले अनाथ बच्चों को नागरिकता संशोधन कानून के विरुद्ध धरनों में बिठाया गया। एनसीपीसीआर (राष्ट्रीय बाल

आयोग) की जांच में अवैध धनशोधन प्रमाणित हुआ। बच्चों के कन्वर्जन से लेकर अराजकता की सीमा तक मानस बनाने के मामले सामने आ चुके हैं। फोर्ड फाउंडेशन, एमनेस्टी इंटरनेशनल, ग्रीन पीस, डॉन वास्को, मिरेकल, एक्शन एड, केन असिस्ट, उदयन केयर, वर्ल्ड विजन, बोन्दी मुक्ति संगठन, हम, जकात, सबरंग, हासमी ट्रस्ट, सद्भावना, कंपेशन इंटरनेशनल, यंग मैन्स, पीएफआई, नव सर्जन ट्रस्ट, पीपुल्स वाच, अनहद, कबीर, लायर्स कलेक्टिव जैसे सैंकड़ो एनजीओ हैं जिनके विरुद्ध पिछले आठ सालों में ऐसी गंभीर शिकायतें सरकार के पास आई हैं जो भारत में अराजकता निर्मित करने के मंसूबों को प्रमाणित करती हैं।

सच्चाई यह है कि देश में एनजीओवाद की जमीन पर ही सेक्युलर राजनीति खड़ी रही है। इसका बौद्धिक दायरा मीडिया से लेकर राजनीतिक दलों के नीति निर्माण, विश्विद्यालय और प्रशासन तक स्वयंसिद्ध है। सोनिया गांधी की अध्यक्षता में यूपीए की केंद्र सरकार को गवर्न करने वाली राष्ट्रीय सलाहकार परिषद असल में एनजीओवाद के चरम प्रभाव का उदाहरण ही था। इस परिषद में अरुणा राय, हर्ष मन्दर, ज्या द्रेज, दीप जोशी, मिराई चटर्जी, अनु आगा, फराह नकवी, एके शिवकुमार जैसे चेहरे शामिल थे जो अपने लेफ्ट लिबरल एजेंडे के लिए जाने जाते हैं। बुनियादी रूप से यह समझने की आवश्यकता है कि एनजीओ एक राजनीतिक ताकत हैं जिसका उद्देश्य भारत में उस विदेशी एजेंडे को बरकरार रखना है जिसके अंतर्गत यहां समाज में अल्पसंख्यकवाद, माओवाद, नक्सलवाद और आतंकवाद को तुष्टिकरण की आड़ में तार्किक और न्यायिक साबित किया जाता रहे। इनका उद्देश्य यह भी है कि भारत के अभ्युदय या सशक्तिकरण की संभावनाओं को सिविल सोसायटी की आड़ में हमेशा कमजोर बनाया रखा जाए। झूठ और मिथ्या भय के नाम पर समाज में अराजकता की सीमा तक जाकर अपने नियोजित एजेंडे को लागू करना एनजीओवाद का मूल धर्म है। इसके लिए भारत से बाहर फंडिंग की एक पूरी आर्थिकी सत्तर साल से सक्रिय है। देश के अंदर सेक्युलर राजनीति ने इसे अपने सीने से कंगारू के बच्चों की तरह चिपका कर सदैव संरक्षण प्रदान किया।

इस एनजीओवाद के विरुद्ध मोदी सरकार ने बेशक बहुत सख्त कदम उठाए हैं। विदेशी फंड हासिल करने के लिए एफसीआरए में संशोधन किए। इस कानून में संशोधन से पहले वर्ष 2010 से 2019 के बीच विदेशी चंदे की आमद दोगुनी दर से बढ़ी पाई गई। 2016-17 और 2018-19 में विदेशों से 58 हजार करोड़ भारतीय एनजीओ के खातों में दर्ज हुआ। अकेले अमेरिका से यह आंकड़ा तीन खरब और फ्रांस से दो अरब दर्ज है। करीब 22500 एनजीओ ऐसे रहे हैं जो इस कानून में संशोधन से पहले इस्लामिक देशों, कनाडा, फ्रांस, अमेरिका, कतर, टर्की, जापान और चीन जैसे देशों से चंदा हांसिल करते रहे हैं। सरकार ने करीब 21 हज़ार ऐसे एनजीओ के लाइसेंस निरस्त किये हैं, इसके बावजूद देश में पंजीकृत 33 लाख एनजीओ में से महज 10 फीसद ही अपना हिसाब किताब सरकार के साथ साझा करते रहे हैं। समझा जा सकता है कि देश में एनजीओ का नेटवर्क किस सशक्त संरक्षण के साथ खड़ा हुआ है। प्रधानमंत्री जिन आन्दोलनजीवियों की ओर इशारा करते हैं असल में वह एनजीओवाद का ही एक संस्करण भर है।

तीस्ता अकेली भर नहीं हैं इस खेल की खिलाड़ी, असल में इसी एनजीओवाद से निकल कर आम आदमी पार्टी की ओर से संसदीय व्यवस्था को कब्जाने का एक उदाहरण भी है जो भविष्य के खतरनाक संकेत भी है। अरविंद केजरीवाल भी मूलत: इसी फ़ौज के एक चतुर खिलाड़ी हैं। जिस समय अरुणा राय सोनिया गांधी के साथ मिलकर राष्ट्रीय सलाहकार परिषद में काम कर रही थीं उसी दौर में अरविंद केजरीवाल अरुणा के साथ मिलकर सरकारी सेवा में रहते हुए परिवर्तन नामक एनजीओ को खड़ा कर रहे थे। 2006 में ही उन्हें फोर्ड फाउंडेशन और रॉकफेलर ब्रदर्स फंड ने रेमन मैग्सेसे पुरुस्कार दिलवा दिया। उभरते नेतृत्व के नाम पर केजरीवाल को यह पुरस्कार किस काम के लिए मिला, इसे आज उनकी राजनीतिक स्थिति के साथ आसानी से समझा जा सकता है। यानी एक पूरा वैश्विक इकोसिस्टम है जो एनजीओ के माध्यम से भारत में संसदीय राजनीति को न केवल प्रभावित करता है बल्कि उसमें अपने प्यादे भी फिट कर रहा है। रैमन से मिले धन से अरविंद ने पब्लिक कॉज रिसर्च फाउंडेशन एनजीओ बनाया। इसी बीच मनीष सिसोदिया के एनजीओ कबीर के साथ मिलकर अरविंद ने लेफ्ट लिबरल एजेंडे पर काम शुरू कर दिया। रिपोर्टों के मुताबिक कबीर एनजीओ का गठन अगस्त 2005 में हुआ लेकिन फोर्ड फाउंडेशन ने उसे जुलाई 2005 से ही फंड देना शुरू कर दिया था। कथित रूप से कबीर को 2005 में 1 लाख 72 हजार डॉलर एवं 2008 में 1 लाख 97 हज़ार अमेरिकी डॉलर की सहायता मिली। कबीर और परिवर्तन को नीदरलैंड की एनजीओ हिवोस से भी 2008 और 2012 के मध्य 13 लाख यूरो की सहायता मिलने की रिपोर्टें हैं।

योगी सरकार ने पहले सौ दिनों में बेहतरीन कामकाज की नई मिसाल कायम की है

अजय कुमार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की लोकप्रियता का ग्राफ लगातार बढ़ता जा रहा है। उनके फैसलों और कामकाज की शैली की देश ही नहीं विदेश तक में चर्चा हो रही है। योगी के दूसरे कार्यकाल में भी पुराने तेवर बरकरार हैं। उनकी सरकार बिना किसी भय और पक्षपात के आगे बढ़ रही है। वैसे तो किसी भी सरकार के कामकाज की समीक्षा करने के लिए कम से कम 6 महीने का समय जरूरी समझा जाता है लेकिन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपनी सरकार के 100 दिन पूरे होने के उपलक्ष्य में अपना रिपोर्ट कार्ड जारी किया तो यह रिपोर्ट कार्ड विपक्ष को भले ही अच्छा ना लगा हो लेकिन योगी के समर्थक उन्हें हंड्रेड परसेंट नंबर दे रहे हैं। योगी सरकार का 100 दिन का रिपोर्ट कार्ड इसलिए ज्यादा मायने रखता है क्योंकि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शपथ ग्रहण के साथ ही अपनी सरकार के 100 दिनों के लिए विकास का लक्ष्य निर्धारित कर दिया था। बहरहाल, एक तरफ योगी विकास का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहे थे तो दूसरी तरफ इन 100 दिनों में उनके सामने कई चुनौतियां और चुनाव भी आए। लोकसभा के उपचुनाव और विधान परिषद के चुनाव हुए तो बीजेपी नेत्री नूपुर शर्मा के विवादित बयान के बाद कुछ लोगों ने प्रदेश का अमन चैन बिगाड़ने की काफी कोशिश की। लोकसभा के उपचुनाव में योगी ने रामपुर-आजमगढ़ की लोकसभा सीटें बीजेपी की झोली में डालीं। यह कारनामा कोई छोटा नहीं था। विधान परिषद चुनाव में भी बीजेपी ने शानदार प्रदर्शन किया। योगी के 100 दिन के कार्यकाल में ही बीजेपी नेत्री नूपुर के विवादित बयान के विरोध में कानपुर, प्रयागराज में हिंसा हुई, वहीं अन्य जिलों में भी माहौल गरमाया गया। योगी ने दंगाइयों के मंसूबों पर पानी फेरने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। दंगाइयों के खिलाफ बुलडोजर की भी कार्रवाई की गई। इससे पहले धार्मिक स्थलों से शांतिपूर्वक लाउडस्पीकर हटाने का भी कार्य किया, योगी से पहले की सरकारें कोर्ट के बार-बार आदेश के बाद भी यह काम नहीं कर पाई थीं। इसी तरह से कुछ खास मौकों पर सड़क पर नमाज पढ़ने की आदत पर भी लगाम लगाई गई है।

दूसरी बार जब योगी मुख्यमंत्री बने तो उन्होंने पूरे दमखम के साथ दिखाया कि उनका कोई विकल्प अभी उत्तर प्रदेश में नहीं है। कानून व्यवस्था को बनाए रखने के लिए कड़े फैसले लेने से वे हिचक नहीं रहे हैं। 2017 में जब योगी ने पहली बार मुख्यमंत्री की कुर्सी संभाली थी तो उनके पास प्रशासनिक अनुभव की काफी कमी थी।

इसी वजह से शुरुआत के एक दो साल तक काफी हद तक उनके फैसलों में प्रशासनिक अधिकारियों का दखल दिखता रहा था। अब वे पके-पकाए नेता बन चुके हैं। नौकरशाही उनको अपने इशारे पर नहीं नचा पा रही है। बात विकास की करें तो योगी ने दूसरे कार्यकाल की शुरुआत के साथ ही सभी मंत्रियों को 100 दिनों की कार्ययोजना का खाका खींच कर दे दिया था। जिस पर काफी काम भी हुआ। यह और बात है कि अभी यह कार्य पूरी तरह से जमीन पर दिखाई नहीं दे रहे हैं। इसी के साथ योगी कानून व्यवस्था को लेकर बनी बुलडोजर बाबा की छवि को बरकरार रखने में कामयाब रहे। दंगों और अन्य मामलों पर रोक के लिए भी कड़े कदम उठाए हैं। सरकारी विभागों में खाली पड़े पदों पर नियुक्तियों की प्रक्रिया को शुरू कराया गया है। हर परिवार के एक व्यक्ति को नौकरी के दायरे में लाने की योजना के लिए सर्वे शुरू कराया गया है। इसके अलावा चुनावी वादों के तहत टैबलेट और स्मार्टफोन वितरण की प्रक्रिया शुरू की गई है। सीएम योगी ने क्षेत्र की समस्याओं से सरकार के सीधे जुड़ने को लेकर तमाम मंत्रियों को क्षेत्र में जाकर रहने और वहां पर बात करने का जिम्मा सौंपा है। बांग्लादेश से विस्थापित 63 हिंदू परिवारों के पुनर्वास के लिए कानपुर देहात में भूमि के पट्टे का आवंटन किया गया है।

डिजिटल इंडिया अभियान का निरंतर आगाज़

एक ज़माना था जब हमारे पूर्वज अपने जीवन में दिनचर्या के कार्यों की शुरुआत सुबह चार पांच बजे से करते थे!! दैनिक जरूरतों की सामग्री गांव से मीलों दूर पैदल चल कर लाते थे और अपने व्यापार, व्यवस्था, सेवा पर जाने भी मीलों दूर पैदल जाते थे!! देश में हो रही घटनाओं की जानकारी का पता चलने में कुछ दिन लग जाते थे!! जंगलों से लकड़ियां, तालाब कूओं से पानी लाने से लेकर गेहूं पीसनें से लेकर तीन ईटें लगाकर चूल्हे पर रोटी पकानें तक का सफर महिलाओं ने बहुत बंदिशों में रहकर किया इस तरह की चर्चाओं में हम कई किताबें लिख सकते हैं परंतु एक बात हमें मानना पड़ेगा कि हमारे पूर्वजों ने आज के डिजिटल इंडिया युग की दूर-दूर तक का कल्पना भी नहीं की होगी कि हम चांद पर भी मकान बना सकने पर, काम कर रहे हैं बस!! बाकी एक काम रह गया है कि मनुष्य योनि में जीवन कैसे आता है और ऐसा क्या निकल जाता है कि मनुष्य निर्जीव हो जाता है? मेरा मानना है कि यह रहस्य मानवीय जीव ज्ञात नहीं कर सकता याने कुदरत की अनमोल प्रक्रिया का भेद नहीं जान सकता। हालांकि डिजिटल प्रौद्योगिकी के बल पर आज हमने सबकुछ प्राप्त कर लिया है और आगे भी करते रहेंगे क्योंकि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है आज हम इस आर्टिकल के माध्यम से डिजिटल इंडिया अभियान, डिजिटल इंडिया सप्ताह के माध्यम से चर्चा करेंगे।

साथियों बात अगर हम डिजिटल इंडिया अभियान की करें तो, मीडिया के अनुसार, इलेक्ट्रॉनिक्स, सूचना और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत, केंद्र सरकार ने 1 जुलाई 2015 को डिजिटल इंडिया अभियान की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम के माध्यम से ऑनलाइन सरकारी सेवाएं प्रदान करना था। इसे पूरे देश में बुनियादी ढांचे में वृद्धि और इंटरनेट कनेक्शन में सुधार को देखते हुए लागू किया गया था।

साथियों डिजिटल इंडिया अभियान विभिन्न उद्देश्यों के उपयोग के लिए प्रत्येक नागरिक को एक डिजिटल बुनियादी ढांचा प्रदान करता है। यह प्रत्येक नागरिक के डिजिटल सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के साथ-साथ मांग पर शासन और सेवाओं पर ध्यान केंद्रित करता है। इसके लिए आदर्श वाक्य कहता है,शक्ति को सशक्त बनाना। पहल कई प्रचलित योजनाओं को फिर से डिजाइन करने पर भी विचार करती है जो एक सिंक्रनाइज़ तरीके से निष्पादित हो सकती हैं।

डिजिटल इंडिया अभियान में ग्रामीण क्षेत्रों में हाई-स्पीड इंटरनेट शामिल है। यह सागरमाला, स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया, भारतमाला, भारतनेट जैसी विभिन्न सरकारी योजनाओं के लाभार्थी के रूप में कार्य करता है। यह कई विचारों और विचारों को एक प्रमुख लक्ष्य के हिस्से के रूप में लेने के साथ एक अच्छी व्यापक दृष्टि में मिला देता है। साथियों बात अगर हम माननीय पीएम द्वारा दिनांक 4 जुलाई 2022 को डिजिटल इंडिया सप्ताह समारोह में जिसका विषय नवभारत प्रौद्योगिकी प्रेरणा था। कार्यक्रम में संबोधन की करें तो पीआईबी के अनुसार उन्होंने भी कहा, समय के साथ जो देश आधुनिक तकनीक को नहीं अपनाता, समय उसे पीछे छोड़कर आगे निकल जाता है। तीसरी औद्योगिक क्रांति के समय भारत इसका भुक्तभोगी रहा है। लेकिन आज हम गर्व से कह सकते हैं कि भारत चौथी औद्योगिक क्रांति, इंडस्ट्री 4.0 में दुनिया को दिशा दे रहा है।% इसमें भी एक तरह से पथ प्रदर्शक की भूमिका निभाने के लिए उन्होंने गुजरात की प्रशंसा की। आज का कार्यक्रम 21वीं सदी में भारत के निरंतर आधुनिकीकरण की एक झलक प्रस्तुत करता है। डिजिटल इंडिया के माध्यम से भारत ने उदाहरण पेश किया है कि प्रौद्योगिकी का सही इस्तेमाल पूरी मानवता के लिए कितना क्रांतिकारी है। उन्होंन कहा कि जन्म प्रमाणपत्र, बिल जमा करने, राशन, प्रवेश, रिजल्ट और बैंकों के लिए भी लाइन लगती थी, इतनी सारी लाइनों का समाधान भारत ने ऑनलाइन होकर कर दिया है। उन्होंने कहा कि आज वरिष्ठ नागरिकों के जीवन प्रमाण पत्र, आरक्षण, बैंकिंग आदि सेवाएं डिजिटल होने से वे सुलभ, तेज और सस्ती हो गई हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया का 40 प्रतिशत डिजिटल लेनदेन भारत में होता है। प्रधानमंत्री ने कहा, %हमारे डिजिटल समाधानों में स्केल है, ये सुरक्षित हैं और इनमें लोकतांत्रिक मूल्य हैं।उन्होंने बताया, आज भारत अगले तीन से चार वर्षों में इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग को 300 अरब डॉलर से ऊपर ले जाने के लक्ष्य पर काम कर रहा है। भारत अब चिप लेने वाले से चिप देने वाला बनना चाहता है। सेमीकंडक्टर का उत्पादन बढ़ाने के लिए भारत में निवेश तेजी से बढ़ रहा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि डिजिटल इंडिया अभियान अपने आप में नए आयाम जोड़ता रहेगा और देश के नागरिकों की सेवा करता रहेगा। उन्होंने बताया कि आने वाले 4-5 वर्षों में इंडस्ट्री 4.0 के लिए 14-15 लाख युवाओं के स्किलिंग, अपस्किल और रीस्किलिंग पर फोकस किया जाएगा। उन्होंने कहा, अंतरिक्ष हो, मैपिंग, ड्रोन, गेमिंग और एनिमेशन हो, ऐसे कई सेक्टर हैं जो डिजिटल तकनीक के भविष्य को विस्तार देने जा रहे हैं, उन्हें नवाचार के लिए खोल दिया गया है। इंन-स्पेस और नई ड्रोन नीति जैसे प्रावधान इस दशक में आने वाले वर्षों में भारत की तकनीक क्षमता को नई ऊर्जा देंगे। विस्तार डिजिटल टेक्नोलॉजी-

(1)डिजिटल इंडिया भाषिणी नागरिकों को उनकी अपनी भाषा में डिजिटल पहल से जोड़कर सशक्त बनाएगी। (2)इंडियास्टैक डॉट ग्लोबल - आधार, यूपीआई, डिजिलॉकर, कोविन टीकाकरण प्लेटफॉर्म, गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (जीईएम), दीक्षा प्लेटफॉर्म और आयुष्मान भारत डिजिटल हेल्थ मिशन जैसी इंडिया स्टैक के तहत चल रहीं प्रमुख परियोजनाओं का वैश्विक भंडार है। वैश्विक सार्वजनिक डिजिटल भंडार की भारत की पेशकश जनसंख्या के पैमाने पर डिजिटल परिवर्तन परियोजनाओं के निर्माण में देश को अग्रणी के रूप में स्थापित करने में मदद करेगा और यह अन्य देशों के लिए बहुत मददगार साबित होगा, जो ऐसी तकनीकी समाधानों की तलाश में हैं।

आके कान्हा फिर से बंशी बजा दे

आके कान्हा फिर से बंशी बजा दे
कलयुगी गोपियों को फिर से नचा दे
आके कान्हा तू फिर से बंशी बजा दे

कर रहे भष्ट्राचार और भष्ट्राचारियों
को तू सजा दे बढ़ रहे अत्याचार और
अत्याचारियों को मिटा दे आके
कान्हा फिर तू फिर से बंशी बजा दे

बात बात पे होती है गंगा, यमुना की
सफाई की बात रे
हुई न आज 70 बरसो में साफ रे
फिर से तू आके इसे निर्मल करवा दे
आके कान्हा फिर से बंशी बजा दे

लाज तू इस कलयुगी द्रोपदी का
बचा दे लचरे और लाचार हुए
कानून व्यवस्था का सुधार करवा दे
आके कान्हा फिर से बंशी बजा दे

फिर से तू वही धुन तू सुना दे
आर्यावर्त के लोगो को फिर से झुमा
दे वेरी हो गए लोग एक दूसरे के
उसको आके प्रेम का पाठ पढ़ा दे
आके कान्हा फिर से बंशी बजा दे

अब तो मोहे लगी तोह पे ही आस रे
दुनिया का एकमात्र तू ही विशवाश
रे आके इस युग कलयुग का उद्धार
करवा दे आके कान्हा फिर से बंशी
बजा दे.....

शार्ट न्यूज

नशे में टल्ली होकर गिरता-पड़ता मऊ कोर्ट पहुंचा यूपी पुलिस का सिपाही, कैदियों ने संभाला

मऊ। उत्तर प्रदेश के मऊ में एक सिपाही महोदय की कैदियों की कोर्ट में पेशी कराने की ड्यूटी लगी। कायदे से तो उन्हें कैदियों को पकड़कर कोर्ट ले जाना चाहिए था लेकिन उल्टा कैदी ही सिहापी को पकड़कर कोर्ट ले गए। आप कहेंगे कैसे ? तो ऐसे कि सिपाही महोदय हो गए टल्ली। इतने टल्ली कि आज मैं ऊपर.. आसमां नीचे टाइप. देसी भाषा में बोलें तो बिलकुल पीकर भंड... ना जगह का होश ना वर्दी की लाज। सिपाही महोदय नशे में चूर कभी यहां गिरें कभी वहां गिरें। ऊपर से जो उन्हें उठाने लगे उसे गंदी-गंदी गालियां देने लगे। जैसे-तैसे कैदियों ने सिपाही को उठाया और अपनी कोर्ट की पेशी कराई। सोशल मीडिया का जमाना है तो किसी ने वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर डाल दिया जो वायरल हो गया। वीडियो में कई बार तो साथी पुलिसवाले उसे संभालते हुए दिख रहे हैं तो कभी कैदी ही हुजूर को पकड़ रहे हैं। सिपाही कभी सड़क पर गिरता है तो कभी कुर्सी पर बैठने की कोशिश में कुर्सी समेत पलट जाता है। इस वीडियो को सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद यूपी पुलिस की जमकर किरकिरी हो रही है। देखना होगा कि यूपी पुलिस अपने शराबी सिपाही पर क्या कार्रवाई करती है जिसे ना वर्दी की लाज है ना कोर्ट का सम्मान। जिसपर कानून व्यवस्था बनाने की जिम्मेदारी है वो खुद अदालत परिसर में खड़ा होकर उत्पात मचा रहा है।

लखनऊ से 17 शहरों के बीच रोडवेज बसें अगस्त से, यात्रियों को मिलेगी राहत

लखनऊ। लखनऊ से 17 उन इलाकों के बीच रोडवेज बसें चलाने की तैयारी है जहां बसों की संख्या कम है। परिवहन निगम ऐसे रूटों पर और अनुबंधित बसें चलाने के लिए 27 बसों के टेंडर जारी कर दिया है। इससे यात्रियों को बसों का इंतजार करने से छुटकारा मिलेगा। निजी बस आपरेटर 15 जुलाई तक टेंडर में हिस्सा ले सकेंगे। इसके 15 दिनों के भीतर बसों के अनुबंध पर हस्ताक्षर होने के बाद एक अगस्त से चिन्हित रूटों पर साधारण बसों की सेवाएं शुरू हो जाएगी। जिसमें लखनऊ से बाराबंकी, रायबरेली, फतेहपुर, अयोध्या रूट के अलावा उन्नाव के तीन नए रूटों पर भी बसों की सुविधा यात्रियों को मिलेगी।

भड़काऊ भाषण और फर्जी खबरों को रोकने के लिये गंभीर उपाय करे सरकारः मायावती

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री एवं बहुजन समाज पार्टी की अध्यक्ष मायवती ने खबरिया चैनलों पर भड़काऊ भाषण एवं फर्जी खबरों के प्रकाशन और प्रसारण को गंभीर चिंता का विषय बताते हुए कहा है कि इस तरह की घटनाओं से आम जनजीवन प्रभावित होता है। इसके मद्देनजर सरकार को ऐसी घटनाओं को रोकने के लिये संजीदा उपाय करने चाहिये। मायावती ने बुधवार को ट्वीट कर कहा, फेक न्यूज, हेट स्पीच, भड़काऊ भाषण आदि को लेकर ताबड़तोड़ पुलिस कार्रवाई देश भर में काफी गंभीर रूप धारण कर चुकी है, जिसके तहत यूपी व छत्तीसगढ़ पुलिस के बीच कल एक टीवी पत्रकार की गिरफ्तारी को लेकर हुआ टकराव मीडिया की सुर्खियों में है व जिसकी जबरदस्त चर्चा एवं चिन्ता की लहर भी। उन्होंने कहा, इस प्रकार के दु:खद घटनाक्रमों से कानून का राज नष्ट होकर आमजन-जीवन भी प्रभावित होता है, जिसके प्रति सभी सरकारों को तटस्थ व गंभीर होकर कार्य करना चाहिए तभी यहाँ लोगों को तनाव व हिंसक वातावरण से मुक्ति मिल पाएगी। विकास के लिए अराजकता पर अंकुश व कानून का आयरन राज जरूरी।

बॉयफ्रेंड के खिलाफ लिखाया रेप का फर्जी मुकदमा

आगरा। आगरा पुलिस ने रेप का झूठा मुकदमा लिखा कर वसूली करने वाले गैंग का खुलासा किया है। पुलिस ने गैंग में शामिल छात्रा और तीन वकील को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से 3 लाख 75 हजार रुपए बरामद किए है। हालांकि गैंग में शामिल एक और महिला वकील और पुरुष वकील की पुलिस तलाश कर रही है। एसपी सिटी विकास कुमार ने बताया कि 24 जून को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाली छात्रा ने रेप का मुकदमा दर्ज कराया था। छात्रा ने साथ में पढ़ने वाले राहुल और उसके परिजनों पर जान से मारने की धमकी देने की बात भी कही थी। मामले में आरोपियों के खिलाफ विभिन्न आईपीसी की धाराओं में केस दर्ज किया गया था। पुलिस ने बताया कि कुल पांच लाख में मामला तय हुआ था। जिसमें छात्रा को 2 लाख मिलने थे। बाकी 2 लाख रुपए वकीलों को घूस के तौर पर मिलना था, साथ ही एक लाख रुपए फीस के रूप में तय की थी। छात्रा ने पुलिस को बताया कि राहुल ने अपने जन्मदिन की बात कह कर बस अड्डे के पास बुलाया था। इसके बाद वह पास के एक होटल में ले जाकर रेप किया था। घटना के दौरान राहुल ने कई अश्लील तस्वीरें भी फोन से खींची थी।

231 अवैध निर्माण पर चला बुलडोजर

मेरठ। मेरठ बागपत रोड पर बुधवार को ग्रीन बेल्ट पर हुए 231 अवैध निर्माण पर बुलडोजर से ध्वस्तीकरण की कार्रवाई हुई। विकास प्राधिकरण की टीम ने मौके पर पहुंचकर अवैध निर्माण को ढहाने का काम किया। एमडीए की टीम बुधवार को बागपत रोड पर बने ग्रीन बेल्ट को खाली कराने पहुंची। ग्रीन बेल्ट पर 231 अवैध निर्माणों पर आज प्राधिकरण का बुलडोजर चला है। मौके पर भारी पुलिस बल कई थानों की फोर्स भी मौजूद रही। किसी भी शहर या डेवलपमेंट प्रोजेक्टर में छोड़ी गई ग्रीन बेल्ट पर किसी भी प्रकार का निर्माण गलत होता है। प्रशासन या जनता जो भी ग्रीन बेल्ट पर कंस्ट्रक्शन कराए उसे अवैध माना जाएगा। शहर के सौंदर्यीकरण या विकास प्रोजेक्ट के तहत जिस विभाग की जमीन है वो विभाग ग्रीन बेल्ट को तब्दील कर वहां निर्माण कर सकता है। लेकिन बागपत रोड की इस ग्रीन बेल्ट पर एमडीए की आंखों के सामने कब्जा होता चला गया। एमडीए को भनक भी नहीं लगी। चुपचाप ग्रीन बेल्ट पर कब्जा हुआ और फिर वहां अवैध निर्माण भी बसते चलते गए।

इटवा में सात जुलाई तक मनाया जाएगा वन महोत्सव

इटवा (सिद्धार्थनगर)। आचार्य नरेंद्र देव कृषि और प्रौद्योगिक कृषि विश्वविद्यालय कुमारगंज के तत्वाधान में कृषि विज्ञान केंद्र सोहना की तरफ से पहली से 7 जुलाई तक वन महोत्सव कार्यक्रम मनाया जा रहा है। जिसकी कड़ी में विभिन्न गांवों में न केवल पौधारोपण किया गया, बल्कि किसानों में विभिन्न प्रजाति के पौधे भी वितरित किए गए। जागरूकता कार्यक्रम में किसानों को पौधारोपण के महत्व पर जानकारी देते हुए सभी से पौधे लगाने और इसके संरक्षण पर ध्यान देने हेतु आह्वान किया गया। कृषि विज्ञान केंद्र अंतर्गत कृषकों के प्रक्षेत्र ग्राम हसुड़ी औसानपुर, मनोहरपुर सोहना केवीके फार्म पर पर वन महोत्सव कार्यक्रम मनाया गया। जिसकी कड़ी में कदम, आम, शीशम, जामुन, अमरूद सफेदा जैसे वृक्षों का रोपण किया गया। किसानों को बताया गया कि हमारे जीवन में इनका क्या महत्व है। हरियाली को बढ़ावा देने के लिए सभी से अधिक से पेड़ लगाने पर जोर दिया गया। कार्यक्रम के दौरान दस गांवों के 95 किसानों में 2000 पौधे वितरित किए गए। सभी से आह्वान किया गया कि वे पौधों को लगाएं और इसकी देखरेख करें, जिससे पौधारोपण के उद्देश्य की पूर्ति हो सके।

बुलंदशहर के छात्र को जापान में 42 लाख का पैकेज

अनूपशहर, बुलंदशहर। ये हैं बुलंदशहर के प्रियांशु गुप्ता। IIT गुवाहाटी से M.Sc. करने के बाद इनका सिलेक्शन जापान की एक सॉफ्टवेयर मोबाइल कंपनी राकूतेन में हुआ है। वहां सालाना 42 लाख रुपए का पैकेज है। 42 लाख का ये पैकेज प्रियांशु और उनके परिवार के लिए किसी सपने से कम नहीं है। क्योंकि, प्रियांशु के यहां तक पहुंचने में बड़ा संघर्ष करना पड़ा है। इसमें पिता के खोने के दर्द से लेकर मां का एक्सीडेंट और मूकबधिर बहन की मेहनत शामिल है।

कानपुर डबल मर्डर में बेहयाई

बेटी ने मां-बाप का गला रेता, फिर प्रेमी से शारीरिक संबंध भी बनाए

कानपुर। कानपुर में हुए डबल मर्डर में लगातार सनसनीखेज खुलासे हो रहे हैं। वारदात के कुछ घंटे बाद ही पुलिस ने पति-पत्नी की हत्या में बेटी को गिरफ्तार कर पूरे मामले का खुलासा कर दिया था। अब बेटी से पूछताछ में ऐसी बातें पता चल रही हैं जो बेहद शर्मसार करने वाली भी हैं। अपने प्रेमी के साथ मां-पिता की हत्या के बाद बेटी ने उसके साथ शारीरिक संबंध भी बनाए थे। बेटी की बेहयाई के किस्से सुनकर पुलिस अधिकारियों के भी होश उड़ गए हैं। बेटी ने माता-पिता की हत्या की साजिश करीब डेढ़ महीने पहले बनाई थी। आर्मी में तैनात प्रेमी ने भाई से हत्या करने को कहा था। दोनों सगे भाइयों से युवती के शारीरिक संबंध थे।

कानपुर डबल मर्डरः बेटी ही निकली कातिल, कुछ घंटे में खुलासा

कानपुर के बर्रा 2 यादव मार्केट के पास सोमवार देर रात फील्ड गन फैक्ट्री से सुपरवाइजर की पोस्ट से रिटायर्ड मुन्ना लाल गुप्ता (61) व उनकी पत्नी राज देवी (55) की गला रेत कर हत्या कर दी गई थी। घटना के समय घर में बेटा अनूप उत्तम (30) और बेटी (25) कोमल थी। पुलिस ने सीसीटीवी और मोबाइल कॉल डिटेल की पड़ताल से कुछ घंटे में ही वारदात का खुलासा करते हुए कोमल को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार होते ही कोमल टूट गई और सभी राज एक के बाद एक खोलते चली गई।

पूछता में कोमल से पता चला कि कई महीनों से पूरे परिवार की हत्या की साजिश रच रही थी। डेढ़ महीने पहले उसने हत्या के प्लान को अंतिम रूप दिया था। इसके लिए किसी शातिर अपराधी की तरह दो ए और प्लान बी बनाए गए थे। पुलिस की पूछताछ में उसने यह कबूल किया है।

मां-बाप की हत्या में बेटी के दो-दो प्रेमी एंगल से पुलिस चकराई

माता-पिता के कत्ल के बाद उसने अपने मोबाइल की सारी कॉल लॉग डिलीट कर दी थी। दो दिन के भीतर उसने अपने प्रेमी रोहित से 17 घंटे बातचीत की थी। घटना को दोनों प्लान ए और प्लान बी कहकर संबोधित करते थे।

पुलिस अफसरों के मुताबिक उसने बताया कि उसे संपत्ति चाहिए थी मगर कुछ समय से घर में विवाद के कारण उसे ऐसा लगा कि उसके हिस्से की सारी प्रॉपर्टी भी भाई अनूप को दे दी जाएगी। ऐसे में उसने तीनों को मारने की योजना बनाई थी। तीनों को कीटनाशक मिला जूस पिलाया लेकिन भाई ने थोड़ा पिया और अपने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद करके सो गया। इससे उसकी जान बच गई।

क्या था प्लान ए

कोमल ने बताया कि प्लान ए में तय किया था कि तीनों को खाने-पीने की वस्तुओं में कीटनाशक मिलाकर पिला देगी। तीनों की मौत के बाद वह सारी संपत्ति की अकेली वारिस बचती। कोमल ने पुलिस को बताया कि उसका प्लान ए तब भी खराब होता दिख गया था जब भाई अनूप ने थोड़ा ही जूस पीया था।

यह था प्लान बी

कोमल ने बताया कि उसे यह लगा कि जितना कीटनाशक उसने डाला है उससे यकीन था कि थोड़ी खुराक में भी तीनों मर जाते। उसके मुताबिक राजदेवी ने पूरा ग्लास जूस का पी लिया था। तब उसने रोहित को कॉल करके बुलाया। माता-पिता की हत्या के बाद उसने कहानी यह बनाने का प्रयास किया कि अनूप ने दोनों को मारा और खुद जहर खाकर जान दे दी मगर जब वह ऊपर गई और दरवाजा खटखटाया तो अंदर से अनूप की आवाज आई। उसका प्लान पूरी तरह फेल हो गया। तब उसने भाई को माता-पिता की मौत की जानकारी दी और उसके छोटे साले द्वारा घटना को अंजाम दिए जाने की बात बता दी।

सीडीआर ने खोली सच्चाई

पुलिस ने कोमल के दो दिन की कॉल डिटेल रिपोर्ट निकलवाई जिसमें पता चला कि दो दिन में 17 घंटे उसने रोहित से बात की। घटना के बाद कोमल ने ट्रूकॉलर डाटा, कॉल लॉग, व्हाट्सएप चैट और व्हाट्स एप कॉल का डाटा डिलीट कर दिया था मगर सीडीआर के जरिए पुलिस ने उससे सारी जानकारियां हासिल कर लीं।

बहराइच में बेखौफ भू-माफिया, रोड खोदकर किया कब्जा, बना लिया मकान

बहराइच। भू माफियाओं के अवैध अतिक्रमण पर योगी सरकार का बुलडोजर चल रहा है। इसके बावजूद बहराइच के मोतीपुर में बैखोफ लोग सार्वजनिक रास्ते का खड़ंजा उजाड़ कर पक्का भवन निर्माण कर रास्ता बंद कर दिया है। इसकी शिकायत खंड विकास अधिकारी व एसएचओ से होने पर कोई असर नहीं पड़ा है। भवन निर्माण बैखोफ चल रहा है। मोतीपुर थाने के पौंण्डा के कंजीबाग में खड़ंजा उजाड़ कर भवन निर्माण की शिकायत एक जुलाई को ही खंड विकास अधिकारी व मोतीपुर एसएचओ के पास पहुंची थी। इसकी भनक लगते ही भवन निर्माण करा रहे बरजोर ने कारीगरों व मजदूरों की संख्या चौगुनी कर छत तक भवन निर्माण कर लिया है। अब भवन पर छत पड़ना बाकी है। खंड विकास अधिकारी व एसएचओ ने निर्माण कार्य रोके जाने में कोई रुचि नहीं ली है। जबकि ग्रामीणों का आवागमन ठप हो गया है।

अचानक बेकाबू होकर गड्ढे में गिरी कार, 3 की मौत, 1 घायल

एजेंसी

सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर बांसी कोतवाली क्षेत्र के मलंग बाबा स्थान के पास अचानक बेकाबू हुई एक कार गड्ढे में गिर गई। इससे कार के परखचे उड़ गए और उसमें सवार चार लोगों में से तीन की मौत पर ही मौत हो गई। एक गंभीर रूप से घायल हो गया। जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

मंगलवार रात करीब साढ़े दस बजे बांसी कोतवाली क्षेत्र के सोनखर गांव निवासी चार युवक एक कार पर सवार होकर बांसी की ओर जा रहे थे। इस दौरान मलंग बाबा स्थान के पास पहुंचे ही थे कि तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर पलटने के बाद गड्ढे में चली गई। कार के परखचे उड़ गए।

कार सवार धर्मपाल (18) पुत्र पारस, विपिन (16) पुत्र राम प्रसाद, विशाल (18) पुत्र रमेश निवासी सोनखर बांसी की मौके पर ही मौत हो गई। सन्नू (20) पुत्र विजय कुमार गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को जिला अस्पताल में भर्ती करा दिया गया है।

एक ही गांव के तीन युवकों की मौत से परिवारीजनों के साथ पूरे गांव में कोहराम मच गया है। घटना की सूचना पाकर एएसपी सुरेश चंद्र रावत मौके पर पहुंच गए थे।

झांसी : कड़े सुरक्षा इंतजामों के बीच 15 परीक्षा केंद्रों पर संपन्न हुई बीएड परीक्षा

झांसी। उत्तर प्रदेश संयुक्त प्रवेश परीक्षा बीएड की लिखित परीक्षा वीरांगना नगरी झांसी के 15 परीक्षा केंद्रों पर दो पारियों में शांतिपूर्ण तरीके से बुधवार को संपन्न हुई। जनपद में नकल विहीन परीक्षा सुनिश्चित कराने के लिए कड़े सुरक्षा इंतजाम किये गये थे । इस बीच जिलाधिकारी रविंद्र कुमार एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शिवहरि मीणा ने बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के परीक्षा केंद्रों का भ्रमण करते हुए सारी व्यवस्थाओं को देखा। आज परीक्षा 15 केंद्रों पर संपादित हुई। इस दौरान सम्बन्धित सेक्टर मजिस्ट्रेट एवं स्टैटिक मजिस्ट्रेट पुलिस फोर्स के साथ परीक्षा केन्द्रों का लगातार भ्रमण करते रहे। परीक्षा केन्द्रों में सीसीटीवी कैमरे वॉइस रिकॉर्डर के साथ लगातार सुचारू रूप से काम करते रहे। परीक्षा केंद्र पर मोबाइल फोन, एंड्राइड फोन व अन्य इलेक्ट्रॉनिक गजट परीक्षा केंद्र के अंदर पूर्णत: प्रतिबंधित रहा।

भारत में घुसने की कोशिश करता इतावली नागरिक गिरफ्तार

2 साल से बिना वीजा छिपकर रह रहा था नेपाल में

गिरफ्तार किया गया इटालियन नागरिक अभी तक अवैध तरीके से नेपाल में रह रहा था। सोमवार की शाम भारत की सीमा में दाखिल होते समय एसएसबी टीम ने उसे गिरफ्तार किया था। इमीग्रेशन की जांच-पड़ताल के बाद पकड़े गए फेडरिक नगरी के खिलाफ 14 विदेशी अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया गया है।

अनुज कुमार सिंह, सीओ, नौतनवा

एजेंसी

महराजगंज। भारत-नेपाल सीमा के सोनौली क्षेत्र के डंडा हेड के रास्ते भारत में दाखिल होने की कोशिश कर रहे एक इतालवी नागरिक को एसएसबी ने सोमवार को गिरफ्तार कर लिया। वह वीजा समाप्त होने के बाद भी दो साल से नेपाल में छिपकर रह रहा था। सुरक्षा एजेंसियों की पूछताछ के बाद मंगलवार सुबह उसके खिलाफ 14 विदेशी अधिनियम के तहत केस दर्ज कर उसे जेल भेज दिया।

सोमवार की शाम एसएसबी जवान सीमा क्षेत्र में पैट्रोलिंग कर रहे थे। इस बीच डंडा हेड से एक विदेशी नागरिक को नेपाल से भारतीय सीमा में अवैध ढंग से प्रवेश करते देख जवानों ने उसे पकड़ लिया। पूछताछ में उसने खुद को इटली का नागरिक बताया। देर रात तक जांच-पड़ताल और पूछताछ के बाद सुरक्षा एजेंसियों ने उसे सोनौली पुलिस के हवाले कर दिया। 28 फरवरी 2020 को वह भारत आया था और फिर म्यांमार चला गया। उसके वीजा की अवधि 27 अगस्त 2020 तक के लिए वैध थी। लेकिन कोरोना की वजह से वहीं रुका रहा। म्यांमार के वर्मा शहर से वह नेपाल में दाखिल हुआ और तभी से वहीं रह रहा था।

आगरा में सामूहिक आत्महत्या : भावुक सुसाइड नोट लिख पति-पत्नी और बेटी ने खुद को लगाई फांसी

आगरा। यूपी के आगरा में सामूहिक आत्महत्या का मामला सामने आया है। सिकंदराबाद थाना क्षेत्र की आवास विकास कॉलोनी के सेक्टर-10 के एक घर में पति-पत्नी और बेटी के शव फंदे से लटकते मिले। पुलिस को मौके पर मिले एक सुसाइड नोट में बड़े भावुक ढंग से यह आत्मघाती कदम उठाने की वजह बताई गई है। बताया गया है कि परिवार का मुखिया लंबे समय से बेरोजगार था। सामूहिक रूप से जान देने के इस फैसले में पत्नी और बेटी ने अपनी सहमति सुसाइड नोट में जताई है। जबकि इस पूरे घटनाक्रम से डरे-सहमे छोटे बेटे घर के निचले तल पर जाकर परिवार के अन्य सदस्यों को बताया कि उसके माता-पिता और बहन ने शायद जान दे दी है।

बच्चे की सूचना पर घरवालों ने जब पहली मंजिल पर जाकर देखा तो वहां कमरे में तीनों के शव फंदे से लटकते मिले। सूचना पर पहुंची पुलिस ने तीनों के शव नीचे उतारकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। सोनू शर्मा और उनका परिवार घर की पहली मंजिल पर रहता था जहां अपने कमरे में उन्होंने यह आत्मघाती कदम उठाया।

इंस्पेक्टर सिकंदरा आनंद कुमार शाही ने बताया कि घर के भूतल पर सोनू शर्मा के पिता और भाई का परिवार रहता है। प्रथम तल पर सोनू शर्मा उनकी पत्नी गीता और बेटी सृष्टि रहते थे। बुधवार सुबह सोनू और उनकी बेटी नीचे उतर के नहीं आए तब परिवार के लोगों में ऊपर जाकर देखा। खिड़की से देखा तो तीनों फंदे से लटके हुए थे। पुलिस मौके पर पहुंच गई और तीनों के शव नीचे उतार लिए गए हैं। सोनू के पिता का ट्रांसपोर्ट नगर में ट्रकों की बॉडी मेकिंग का काम है। सोनू शर्मा इस समय बेरोजगार थे। इंस्पेक्टर सिकंदरा ने बताया कि कमरे की तलाशी ली जा रही है। खुदकुशी का कारण पता करने का प्रयास किया जा रहा है।

बच्चा बोला-कमरे में नहीं जाऊंगा...

बताया जा रहा है कि पूरा परिवार एक ही कमरे में साथ सोया था। सुबह करीब सात बजे सोनू का बेटा श्याम नीचे आया और खेलने लग गया। जब उसके एक परिचित ने उससे कुछ सामान मंगाया तो उसने घर में जाने से इंकार कर दिया। उसने बताया कि मैं ऊपर नहीं जाऊंगा, मम्मी-पापा और बहन लटके पड़े हैं। मुझे डर लग रहा है। इसके बाद लोगों को घटना की जानकारी हुई।

सोनू के जीजा विजय कश्यप और अन्य लोग घर में पहुंचे। देखा तो तीनों के शव फंदे से लटके हुए थे। लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने शवों को फंदे से नीचे उतारा।

डा मुखर्जी ने राष्ट्र निर्माण के लिये की थी जनसंघ की स्थापना : स्वतंत्रदेव

देवरिया। उत्तर प्रदेश के जलशक्ति मंत्री और भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) के प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह ने बुधवार को कहा कि जनसंघ के संस्थापक डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने देश के गरीबों के कल्याण और राष्ट्र निर्माण के लिये इस संगठन की स्थापना की थी, इससे प्रेरित होकर ही देश व प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की मजबूत सरकारें गरीबों के लिये काम कर रही हैं। डा मुखर्जी की 121वीं जयन्ती के अवसर पर सिहं ने उनके जीवन पर आधारित पुस्तक 'डा.श्यामा प्रसाद मुखर्जी-व्यक्तित्व एवं कृतित्व' का विमोचन करने के बाद कहा कि डा. मुखर्जी देश में समता मूलक समाज और गरीबों के कल्याण के लिये जीवन प्रयन्त काम करते रहे। उन्होंने कहा कि डा मुखर्जी के संघर्ष की ही देन है कि देश और प्रदेशों में भाजपा की मजबूत सरकारें जनहित एवं गरीब कल्याण के लिये समर्पित हैं। सिंह ने कहा कि आज की तारीख में भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है। यह पार्टी अपने निष्ठावान कार्यकर्ताओं के बल पर कार्य कर रही है। भाजपा परिवारवाद की पार्टी न होकर देश के कल्याण और देश के विकास की पहचान बन चुकी है। उन्होंने कहा कि आज देश के प्रधानमंत्री मोदी और प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में देश व प्रदेश में विकास, सुशासन, गरीब कल्याण और महिला सुरक्षा के लिये नये-नये आयाम लिखे जा रहे हैं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि जनसंघ की निरंतर व्यापक होती राष्ट्रवाद की विचारधारा से घबराकर एक बार नेहरू ने जनसंघ को कुचलने की धमकी दी थी।

बुंदेलखंड को मिलेगा विकास का एक्सप्रेस-वे, मोदी करेंगे उद्घाटन

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में विकास के मामले में पिछड़ेपन के शिकार रहे बुंदेलखंड क्षेत्र को राज्य की योगी सरकार ने तरक्की के एक्सप्रेस वे की सौगात देने का दावा करते हुए कहा है कि 12 जुलाई को इस एक्सप्रेस वे के उद्घाटन के बाद इस इलाके में विकास की रफ्तार दोहरी हो जायेगी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अगले सप्ताह 12 जुलाई को राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मौजूदगी में प्रदेश को एक और एक्सप्रेस-वे की सौगात देते हुए बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे का लोकार्पण करेंगे। राज्य सरकार की ओर से बुधवार को मिली जानकारी के अनुसार बुंदेलखंड एक्सप्रेस -वे के मार्ग पर पड़ने वाले जालौन जिले के कैथेरी गांव में प्रधानमंत्री मोदी इस एक्सप्रेस-वे का लोकार्पण करेंगे।

बुंदेलखंड एक्सप्रेस -वे 28 महीने में बनकर तैयार हुआ है। चार लेन वाले बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे का भविष्य में 6 लेन तक विस्तार हो सकता है। यह एक्सप्रेस वे प्रदेश के चित्रकूट, बांदा, हमीरपुर, महोबा, जालौन, औरैया और इटावा जिलों से होकर गुजरेगा। एक्सप्रेस-वे पर प्रवेश और निकासी के लिए कुल 13 स्थानों पर इंटरचेंज की सुविधा है। इसके आसपास सर्विस रोड का भी निर्माण किया जा रहा है। इसमें ट्रैफिक सुरक्षा के लिए एडवांस ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम की व्यवस्था की जा रही है।

इस बारे में दी गयी आधिकारिक जानकारी के अनुसार इस एक्सप्रेस-वे पर लगभग 07 लाख वृक्ष लगाये जा रहे हैं। इस एक्सप्रेस-वे के निर्माण के दौरान 04 रेलवे ओवर ब्रिज और 14 बड़े रेलपुलों का निर्माण हुआ है। इस पर 06 टोल प्लाजा, 7 रैंप प्लाजा, 293 लघु सेतु, 19 फ्लाई ओवर और 224 अंडरपास का निर्माण हुआ है।

लखनऊ में सिपाही ने व्यापारी का किया किडनैप

लखनऊ। लखनऊ में सिपाही ने व्यापारी का किडनैप कर लिया। आरोप है कि सिपाही काफी दिनों से व्यापारी से रंगदारी मांग रहा था। नहीं देने पर 2 जुलाई, यानी रविवार को साथियों के साथ मिलकर उठा लिया। इसके बाद कमरे में पीटा और कपड़े उतार करंट लगाकर टॉर्चर किया। फिर अगले दिन सुबह 12 घंटे बाद छोड़ा। ACP इंद्रप्रताप सिंह ने बताया कि पीड़ित ने तहरीर दी है। सिपाही सहित 12 पर आज एफआईआर दर्ज की गई है। एक को अरेस्ट कर लिया है। सिपाही पर विभागीय कार्रवाई चल रही है। अन्य की तलाश की जा रही है। सीतापुर के रामपुर बहादुरपुर निवासी मोहन विश्वकर्मा लखनऊ में पुराने फोर-व्हीलर खरीदने और बेचने का काम करते हैं। उनके मुताबिक, 2 जुलाई की रात भतीजी का एक्सीडेंट होने पर ट्रामा सेंटर आए थे।

राजस्व संग्रह बढ़ाने के लिये फील्ड अफसरों से हर 15 दिन में सीएम योगी करेंगे संवाद

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राज्य सरकार का राजस्व संग्रह बढ़ाने के लिये जरुरी उपाय अपनाने के दिशानिर्देश देते हुए कहा है कि वह स्वयं फील्ड स्तर के अधिकारियों से 15 दिन के नियमित अंतराल पर सीधा संवाद करेंगे।

योगी ने बुधवार को वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) तथा अन्य राजस्व वसूली की समीक्षा बैठक में कहा कि वह राजस्व संग्रह में वृद्धि के लिये स्वयं प्रत्येक 15 दिनों के अंतराल पर फील्ड स्तर के अधिकारियों से संवाद कर समीक्षा करेंगे। मुख्यमंत्री कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार योगी ने बैठक में कहा कि समेकित प्रयासों से प्रदेश में जीएसटी संग्रह में सतत बढोतरी हो रही है। वर्ष 2021-22 में 98,107 करोड़ रुपये का राजस्व संग्रह हुआ। इसे और बेहतर करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि 2022-23 की पहली तिमाही में हुआ रिकॉर्ड राजस्व संग्रह अब तक के प्रयासों को सही दिशा होने की पुष्टि करते हैं। वर्ष 2022-23 के लिए 1.50 लाख करोड़ रुपये के लक्ष्य के साथ मिशन मोड में नियोजित प्रयास किये जाएं।

योगी ने कहा कि जीएसटी उपभोग पर आधारित कर प्रणाली है। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद एवं प्रति व्यक्ति आय तथा देश की जीडीपी की वृद्धि दर के दृष्टिगत ही राजस्व प्राप्ति होती है। अत: उपभोग में वृद्धि के लिए नियोजित प्रयासों की जरूरत है। प्रदेश में इसके लिए अनुकूल माहौल है। मोदी ने कहा कि डीलर बेस में वृद्धि के लिए राज्य कर विभाग द्वारा किये गए प्रयासों के अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं। सतत प्रयासों से वर्तमान में जीएसटी पंजीकृत व्यापारियों की संख्या 17.44 लाख हो गई है, जो कि देश में सर्वाधिक है। उन्होंने निर्देश दिया कि इसे अगले एक साल में 30 लाख तक करने के ठोस प्रयास किए जायें।

योगी ने यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि सरकारी विभागों द्वारा कांट्रेक्टर को भुगतान करते समय टीडीएस टीसीएस की कटौती करके जमा किये जाने वाले विवरण, जीएसटीआर-7 के आधार पर कार्यदायी संस्था का पता लगाकर रिटर्न व देय कर जमा कराया जाए। जीएसटीआर-7 एवं 3बी के अंतर के आधार टैक्स जमा कराया जाए।

कर राजस्व की चोरी को राष्ट्रीय क्षति बताते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि कर चोरी रोकने के लिए सभी जिलों में एक टास्क फोर्स गठित की जाए। ऐसे लोगों को चिन्हित करते हुए इसके खिलाफ छापेमारी की जाए।

वॉचो एप पर पेश की गयी 34 कोरियाई वेब-सीरीज

नयी दिल्ली। भारत के ओटीटी प्लेटफॉर्म वॉचो ने बुधवार को अपने प्लेटफॉर्म पर हिन्दी में डब की गयी 34 कोरियाई वेब सीरीज को पेश की। कंपनी ने एक बयान में कहा कि रोजाना कोरियाई ड्रामा के लक्ष्य के साथ वॉचो अपने विशाल कोरियाई लाइब्रेरी से हर दिन तीन घंटे की कोरियाई सामग्री जारी करेगी। यह कार्यक्रम नाटकीय, एक्शन और प्रेम से लेकर विज्ञान आधारित होंगे। प्लेटफॉर्म पर कुल 650 से अधिक घंटों की कोरियाई सामग्री को धीरे-धीरे जारी किया जाएगा, जिसमें हर दिन नए एपिसोड को प्लेटफॉर्म पर चलाया जाएगा। डिश टीवी इंडिया लिमिटेड के डिश टीवी एवं वॉचो के मार्केटिंग के कॉरपोरेट हेड सुखप्रीत सिंह ने कहा,कोरियाई सामग्री ने हाल फिलहाल के दिनों में भारत की चर्चित मुख्यधारा में बड़ी ही प्रमुखता से अपनी जगह बनाई है। जिस तरह वॉचो के सब्सक्राइबर्स की संख्या बढ़ती जा रही है और इस बढ़ती मांग को पूरा करना जरूरी हो गया है। अपने दर्शकों के लिये हिन्दी में डब किए गए कोरियन सामग्री को पेश करते हुए बेहद खुशी का अनुभव हो रहा है। इससे टियर 2 और टियर 3 बाजारों में भी दर्शकों तक पहुंचने में मदद मिल रही है।

लॉजिंग सेवा प्रदाता एक्सॉट ने किया ओकवुड का अधिग्रहण

नयी दिल्ली। निवेश कंपनी कैपिटालैंड इन्वेस्टमेंट लिमिटेड (सीएलआई) की पूर्ण स्वामित्व वाली लॉजिंग(अपार्टमेंट सेवा) कारोबार करने वाली कंपनी द एस्कॉट लिमिटेड (एस्कॉट) ने वैश्विक स्तर पर पूर्ण सुविधाओं से लैस अपार्टमेंट की सेवा देने वाली कंपनी ओकवुड वर्ल्डवाइड (ओकवुड) का अधिग्रहण करने की घोषणा की है। ओकवुड मैपलट्री इन्वेस्टमेंट्स पीटीई लिमिटेड समूह की इकाई है। कंपनी ने बुधवार को जारी एक विज्ञप्ति में कहा कि इस अधिग्रहण से अस्कोट के पास वैश्विक स्तर पर 81 संपत्तियां और उनमें ठहरने की लगभग 15,000 इकाइयां जुड़ जाएंगी। बयान में कहा गया है कि यह सौदा इस वर्ष तीसरी तिमाही में हो जाएगा और ओकवुड के नियंत्रण में चल रही 8,500 लॉजिंग इकाइयां द एस्कॉट लिमिटेड के कारोबार में तुरंत योगदान करने लगेंगी। बयान में कहा गया है कि ओकवुड के अधिग्रहण से एस्कॉट के पर 39 देशों के 200 से अधिक शहरों में ठहरने के लगभग 900 भवन हो जाएंगे जिनमें कुल अपार्टमेंट की संख्या 150,000 से अधिक है। इससे कंपनी दक्षिण कोरिया में चेओंगजू , चीन में झांगजियाकौ और क्रिंगदाओ, बंगलादेश में ढाका के साथ-साथ अमेरिका में वाशिंगटन में सेवाएं दे सकेंगी।सीएलआई के मुख्य कार्यकारी अधिकारी केविन गोह ने कहा, ओकवुड का यह अधिग्रहण लॉजिंग बाजार में बड़ी भूमिका निभाने के लिए अस्कोट की वृहद योजना का हिस्सा है। हम वफादार ग्राहकों और संपत्ति के मालिकों के हमारे विस्तारित नेटवर्क को अधिक मूल्य प्रदान करने के लिए एस्कॉट की व्यापक विशेषज्ञता का लाभ उठाने में सक्षम होंगे।

कोयला उत्पादन जून 2022 में 32.57 प्रतिशत बढ़कर 6.76 करोड़ टन

एजेंसी

नयी दिल्ली। देश का कोयला उत्पादन जून 2022 में 32.57 प्रतिशत बढ़कर 6.76 करोड़ टन रहा जो पिछले वर्ष 5.10 करोड़ टन था।

कोयला मंत्रालय ने बुधवार को एक बयान में कहा कि इस वर्ष जून के दौरान कोल इंडिया लिमिटेड 28.87 प्रतिशत वृद्धि के साथ 5.15 करोड़ टन कोयले का उत्पादन किया। सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लिमिटेड (एससीसीएल) ने 5.50 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ 55.6 लाख टन और कोयला उत्पादन करने वाली अन्य कंपनियों ने 83.53 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 1.05 करोड़ टन का उत्पादन किया।

देश की शीर्ष 37 कोयला खदानों में से 22 खानों ने 100 प्रतिशत से अधिक उत्पादन किया और अन्य नौ खानों का उत्पादन 80-100 प्रतिशत के बीच रहा।

मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार इस महीने में कोयले का उठाव 7.55 करोड़ टन रहा जो जून 2021 के मुकाबले 6.25 करोड़ टन से 20.69 प्रतिशत अधिक है। इस दौरान सीआईएल और कोयला उत्पादन करने वाली अन्य कंपनियों ने क्रमश: 5.90 करोड़ टन और 1.11 करोड़ टन कोयला भेजकर 15.20 प्रतिशत और 88.23 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। एससीसीएल ने जून 2022 में 0.46 प्रतिशत की नकारात्मक वृद्धि दर्ज की।

बिजली की मांग में वृद्धि के कारण जून 2022 में बिजलीघरों को 30.77 प्रतिशत वृद्धि के साथ 6.49 करोड़ टन कोयला भेजा गया। जून 2021 में यह आंकड़ा 4.96 करोड़ टन था।

कोयला आधारित बिजली उत्पादन में जून 2021 की तुलना में जून 2022 में 26.58 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी। जबकि आलोच्य महीने में कुल बिजली उत्पादन जून 2021 की तुलना में 17.73 प्रतिशत अधिक रहा।

कोयला आधारित बिजली उत्पादन मई 2022 में 98.61 अरब यूनिट के मुकाबले जून 2022 के महीने में 95.88 अरब यूनिट रहा जिसमें 2.77 प्रतिशत की नकारात्मक वृद्धि दर्ज की गयी। कुल बिजली उत्पादन भी जून 2022 में घटकर 139 अरब यूनिट रहा जो मई 2022 में 140.06 अरब यूनिट रहा। इसमें भी 0.76 प्रतिशत की नकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई।

रिलायंस रिटेल बनी अमेरिकी फैशन ब्रांड गैप की फ्रेंचाइजी

मुंबई। भारत के सबसे बड़े रिटेलर रिलायंस रिटेल लिमिटेड ने प्रतिष्ठित अमेरिकी फैशन ब्रांड गैप को भारतीय खुदरा बाजार में लाने के लिए गैप इंक के साथ दीर्घकालिक साझेदारी की बुधवार को घोषणा की।

रिलायंस रिटेल की ओर से जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार कंपनी ने गैप के साथ विलंबी अवधि का फ्रेंचाइजी समझौता किया है। इसके तहत रिलायंस रिटेल भारत में सभी चैनलों में गैप के सामानों के लिए आधिकारिक खुदरा विक्रेता बन गयी है। रिलायंस रिटेल ने कहा है कि वह विशेष ब्रांड स्टोर, मल्टी-ब्रांड स्टोर एक्सप्रेशन और डिजिटल कॉमर्स प्लेटफॉर्म के मिश्रण के माध्यम से भारतीय उपभोक्ताओं के लिए गैप की नवीनतम फैशन पेशकश पेश करेगी।

गैप की स्थापना 1969 में सैन फ्रांसिस्को में की गयी थी।

रिलायंस रिटेल लिमिटेड (फैशन एंड लाइफस्टाइल) के मुख्य अधिशासी अधिकारी अखिलेश प्रसाद ने कहा,रिलायंस रिटेल अपने ग्राहकों के लिए नवीनतम और सर्वश्रेष्ठ विकल्प प्रस्तुत करते हुए गर्व करती है।हमें अपने फैशन और लाइफस्टाइल पोर्टफोलियो में प्रतिष्ठित अमेरिकी ब्रांड, गैप को जोड़ने की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है।

बयान में गैप इंक ग्लोबल लाइसेंसिंग और थोक कारोबार के प्रबंध निदेशक एड्रिएन गेरनांड ने कहा, हम प्रमुख अंतरराष्ट्रीय बाजारों में गैप व्यवसाय को बढ़ाने के लिए तत्पर हैं।

वर्ष 2022 की पहली छमाही में मकानों की रिकॉर्ड बिक्री : नाइट फ्रैंक

मुंबई। अचल संपत्ति बाजार पर परामर्श देने वाली कंपनी नाइट फ्रैंक इंडिया ने बुधवार को बताया कि वर्ष 2022 की पहली छमाही में देश के प्रमुख बाजारों में आवासीय इकाइयों की बिक्री नौ वर्ष के उच्चतम स्तर पर रही और पिछले इसी वर्ष की अवधि की तुलना में इसमें 60 प्रतिशत की वृद्धि दर्जी की गयी। नाइट फ्रैंक इंडिया ने अचल संपत्ति बाजार पर आज अपनी अर्द्धवार्षिक रिपोर्ट-इंडिया रियल एस्टेट रजिडेंशियल एंड ऑफिस मार्केट का 17वां संस्करण पेश किया। इस रिपोर्ट में जनवरी से जून 2022 की अवधि में आवासीय इकाइयों तथा ऑफिस की जगह की बिक्री का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। रिपोर्ट में बताया गया कि वर्ष 2022 की पहली छमाही में देश के शीर्ष आठ शहरों में घरों की बिक्री 1,58,705 तक पहुंच गई जो वर्ष 2021 की समान अवधि में बिक्री 99,416 मकानों की थी।

हिंदुस्तान पावर एक्सचेंज ने परिचालन किया शुरू

नयी दिल्ली। पीटीसी इंडिया लिमिटेड, बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज(बीएसई) और आईसीआईसीआई बैंक द्वारा प्रोन्नत किये गए हिंदुस्तान पावर एक्सचेंज लिमिटेड (एचपीएक्स) ने बुधवार को केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग से सभी आवश्यक स्वीकृति प्राप्त करने के बाद परिचालन शुरू कर दिया।

नवीनतम तकनीक और नवीन सुविधाओं वाला यह एक्सचेंज ट्रेडों के निष्पादन में गति, पारदर्शिता और बेहतर मूल्य खोज का वादा करता है। एक्सचेंज शुरू में आकस्मिक अनुबंध, हरित आकस्मिकता अनुबंध और नवीकरणीय ऊर्जा प्रमाणपत्रों में ट्रेडिंग पेश करेगा। यह लगातार अपने उत्पाद पोर्टफोलियो में वृद्धि करेगा और बिजली बाजार के विभिन्न क्षेत्रों की मांग को पूरा करने के लिए कान्ट्रैक्ट्स की एक बड़ी श्रृंखला प्रदान करेगा।

एचपीएक्स के सीओओ अखिलेश अवस्थी ने कहा,खरीदारों और विक्रेताओं द्वारा पिछले कुछ समय से तीसरे पावर एक्सचेंज की आवश्यकता महसूस की जा रही है ताकि अनुकूलित मूल्य की खोज और बिजली खरीद में बेहतर कार्य कुशलता का निर्माण हो सके। एचपीएक्स एक सहज प्लेटफॉर्म होगा जिसे उसी तकनीक पर बनाया गया है, जो बीएसई को दुनिया का सबसे तेज एक्सचेंज बनाता है। एक्सचेंज का मैचिंग इंजन दुनिया के सर्वश्रेष्ठ टेक्नॉलजी प्रोवाइडर्स में से एक से खरीदा जाता है, जो यूरोप में पावर एक्सचेंजों के लिए भी तकनीक प्रस्तुत करता है। हम अपने प्रोन्नत के अनुभव से भी लाभान्वित होंगे, जो अपने अपने क्षेत्रों के महारथी हैं। उन्होंने कहा कि भारत की लगभग 90 प्रतिशत बिजली का कारोबार बिजली उत्पादन कंपनियों और राज्य उपयोगिताओं के बीच 20 साल या उससे अधिक समय तक चलने वाले द्विपक्षीय अनुबंध के माध्यम से होता है।

शेयर बाजार में भारी उछाल , सेंसेक्स और एनएसई हरे निशान पर बंद

मुंबई ।

मुम्बई शेयर बाजार बुधवार को तेजी के साथ बंद हुआ। बाजार में यह उछाल दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही भारी खरीददारी से आया है। सुबह से ही बाजार की बढ़त के साथ शुरुआत हुई जो समय के साथ और बेहतर होती गयी। कारोबार के दौरान सभी क्षेत्रों में तेजी दर्ज की गयी हालांकि ऑटो, फॉर्मा व उपभोक्ता क्षेत्र (एफएमसीजी) सहित अन्य क्षेत्रों पावर व धातु क्षेत्र का प्रदर्शन खराब रहा है। वहीं कारोबार के अंत में तीस शेयरों वाला सेंसेक्स 616.62 अंक करीब 1.16 फीसदी की बढ़त के साथ ही 53,750.97 के स्तर पर बंद हुआ जबकि पचास शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 178.95 अंक तकरीबन 1.13 फीसदी ऊपर आकर 15,989.80 के स्तर पर बंद हुआ। निफ्टी के 50 शेयरों में ब्रिटानिया, बजाज फाइनेंस, बजाज फिनसर्व और हिन्दुस्तान यूनिलीवर के शेयर लाभ में रहे जबकि ओएनजीसी, पावर ग्रिड हिंडाल्को, एनटीपीसी और एचडीएफसी लाइफ के शेयर गिरे हैं। इससे पहले गत दिवस बाजार गिरावट के साथ बंद हुआ था। बुधवार को बाजार में तेजी का कारण एफएमसीजी कंपनियों के शेयरों में उछाला रहा। इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय बाजार में क्रूड पाम तेल की वायदा कीमत में गिरावट को भी एक कारण माना जा रहा है। यह गिरावट इंडोनेशिया से पाम तेल का निर्यात दोबारा शुरू होने और वैश्विक खपत में कमी आने की रिपोर्ट के कारण आई है। घरेलू एफएमसीजी कंपनियों के लिए पाम तेल सबसे जरूरी उत्पाद माना जाता है। इसकी कीमतों में तेजी से गिरावट आने से इन कंपनियों की कमाई बढ़ने की उम्मीद से बाजार को बल मिला है।

बजाज हिंदुस्तान शुगर कंपनी दिवालिया होने की कगार पर

किसानों के सैकड़ों करोड़ रुपए डूबे

नई दिल्ली , भारत की सबसे बड़ी शक्कर फैक्ट्री बजाज हिंदुस्तान आर्थिक रूप से दिवालिया होने की कगार पर पहुंच गई है।इस शक्कर फैक्ट्री पर 4814 करोड रुपए का बैंको का लोन बकाया है। बैंकों ने कंपनी के लोन को एनपीए घोषित कर दिया है। वही गन्ना किसानों का भी करोड़ों रुपया इस कंपनी के ऊपर बकाया है। कंपनी ने लोन स्ट्रक्चरिंग करने का प्रस्ताव बैंकों को भेजा है। सूत्रों के अनुसार कंपनी दिवालिया होने की कगार पर है। बैंकों के अलावा किसानों की और अन्य देनदारी भी कंपनी पिछले कई वर्षों से चुका नहीं पा रही है।

सोने की कीमतों में तेजी

नई दिल्ली । धरेलू बाजार में बुधवार को सोने की कीमतें बढ़ी हैं। वायदा बाजार में बुधवार को सोना 83 रुपये बढ़कर 51,385 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया। वहीं मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज में सोना 83 रुपये करीब 0.16 फीसदी ऊपर आकर 51,385 रुपये प्रति 10 ग्राम पहुंच गया था। इसमें 10,240 लॉट के लिये कारोबार हुआ। बाजार विश्लेषकों के अनुसार कारोबारियों के ताजा सौदों की खरीददारी से सोने की वायदा कीमतों में तेजी रही। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखा जाये तो न्यूयार्क में सोना 0.22 फीसदी बढ़कर 1,767.70 रुपये प्रति औंस पहुंच गया।

मोबाइल कंपनी वीवो पर 45000 करोड़ की मनीलांड्रिंग ?

नई दिल्ली । चीन की मोबाइल निर्माता कंपनी वीवो पर मनी लांड्रिंग का शिकंजा कस गया है। ईडी को प्राप्त शिकायत के अनुसार लगभग 47000 की राशि कंपनी ने अवैध रूप से चीन को भेजी है। जिसमें बड़ी मात्रा में टैक्स चोरी की गई है। ईडी ने देशभर में कंपनी के विभिन्न कार्यालयों में छापे डालकर दस्तावेज और नगदी जप्त की है। अप्रैल माह में बेंगलुरु ऑफिस से ईडी ने बड़े पैमाने पर नगद राशि जप्त की थी। दस्तावेजों की जांच करने के बाद अब बड़े पैमाने पर कार्यवाही की जा रही है। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार मनी लांड्रिंग का अभी तक का यह सबसे बड़ा मामला है।

स्काडा ने जून में 6,023 यूनिट्स की भारतीय बाजार में बिक्री की

नई दिल्ली । स्कोडा ऑटो इंडियाने जून 2022 में कुल 6,023 यूनिट्स की भारतीय बाजार में बिक्री की। जबकि, मार्च 2022 में कंपनी ने कुल 5,608 इकाइयों की बिक्री की थी। पिछले साल जून 2021 में स्कोडा के 734 यूनिट्स बिके थे। पिछले साल के मुकाबले कंपनी की बिक्री में 721 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। हालांकि, पिछले साल जून महीने में कोविड की दूसरी लहर के कारण देश भर में गाड़ियों की बिक्री में भारी गिरावट दर्ज की गई थी। स्कोडा के ब्रांड निदेशक ज़ैक हॉलिस ने कहा` कि हमारे दोनों इंडिया 2.0 उत्पादों ने बेहद चुनौतीपूर्ण पृष्ठभूमि में बाजार में प्रवेश किया है। एक वैश्विक महामारी, रुक-रुक कर लॉकडाउन, आर्थिक उथल-पुथल, भू-राजनीतिक अस्थिरता, और अब एक निरंतर अर्धचालक कमी आपूर्ति श्रृंखला को परेशान कर रही है। इसलिए, हम सभी स्कोडा ऑटो इंडिया के लिए बिक्री के नए रिकॉर्ड तोड़ना और स्थापित करना जारी रखना एक अविश्वसनीय उपलब्धि है। यह हमारी सभी टीमों के चौतरफा काम का नतीजा है। ज़ैक हॉलिस ने कहा कि हमारे डीलर पार्टनर भी बड़ी भूमिका निभा रहे हैं, जिन्होंने शानदार काम किया है।

खाने के तेल की कीमतों में आ सकती है गिरावट

नई दिल्ली । खाने के तेलों की कीमतों को नियंत्रण में रखने के लिए अब सरकार की ओर से कवायद शुरू कर दी गई है। उम्मीद है कि सरकार के इस कवायद के बाद खाने का तेल सस्ता हो सकता है। इस संबंध में खाद्य सचिव ने बुधवार को खाद्य तेल कंपनियों और तेल आयातकों के साथ बैठक बुलाई है। माना जा रहा है कि सरकार इस बैठक में खाद्य तेल के कारोबार से जुड़ी कंपनियों को खाद्य तेलों की कीमतें घटाने के लिए कह सकती है। सरकार की ओर से इस बैठक में शामिल होने के लिए खाद्य तेलों के आयातक और उत्पादक दोनों की तरह की कंपनियों को कहा गया है। सूत्रों के अनुसार बुधवार को होने वाली बैठक में देश में खाद्य तेलों की कीमतों की समीक्षा की जाएगी। गौरतलब है कि हाल के दिनों में अंतरराष्ट्रीय बाजार में खाने के तेलों की कीमतों में अच्छी-खासी गिरावट देखने को मिली है। इसके बावजूद, देश में खाद्य तेलों की कीमतों में तेजी बनी हुई है। इसी को देखते हुए सरकार की ओर से पहल कर खाद्य तेल के आयतकों और उत्पादकों को बातचीत करने के लिए बुलाया गया है।

झुनझुनवाला के पोर्टफोलियो में शामिल टाटा मोटर्स के स्टॉक पर एक्सपर्ट बुलिश

मुंबई ।

शेयर बाजार के दिग्गज निवेशक राकेश झुनझुनवाला के पोर्टफोलियो में शामिल टाटा मोटर्स के स्टॉक पर एक्सपर्ट बुलिश हैं। टाटा मोटर्स ने जून 2022 में पैसेंजर वाहनों की रिकॉर्ड मासिक बिक्री की है। जून में टाटा मोटर्स ने 45,197 वाहनों की बिक्री हैं। मार्च के मुकाबले टाटा मोटर्स के शेयर अब 1.50 फीसदी डिस्काउंट पर हैं। वहीं इस अवधि में निफ्टी ऑटो इंडेक्स 16 फीसदी चढ़ा है। बाजार जानकारों को उम्मीद है कि टाटा मोटर्स की आय वर्ष 2022 की दूसरी छमाही में शानदार होगी। रिपोर्ट के अनुसार, सेबी रजिस्टर्ड जानकार का कहना है, कि निफ्टी ऑटो में मार्च से अब तक 16 प्रतिशत का उछाल देखने को मिला है, जबकि टाटा मोटर्स के शेयर इस दौरान 1.5 प्रतिशत नीचे आ गए हैं। मौजूदा वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में कंपनी के बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद की जा रही है। जानकार का कहना है कि सेमीकंडक्टर की सप्लाई बेहतर होने से टाटा मोटर्स के शेयर में तेजी देखने को मिल सकती है। टाटा मोटर्स के शेयर बुधवार को 0.87 फीसदी की तेजी के साथ दिन में तीन बजे 415.60 रुपये के स्तर पर ट्रेड कर रहा था।पिछले पांच कारोबारी सत्रों में इस शेयर में 1.89 फीसदी की तेजी आ चुकी है। वहीं एक महीने में यह शेयर 4.65 फीसदी गिर चुका है। पिछले छह महीनों में इस शेयर में करीब 15 फीसदी गिर चुका है। एक साल में यह शेयर अपने निवेशकों को 31 फीसदी रिटर्न दे चुका है। एक अन्य जानकार का कहना हैं, कि इलेक्ट्रिक वाहनों के मामले में टाटा मोटर्स को दूसरी कंपनियों के मुकाबले बढ़त हासिल है। कंपनी के मैनेजमेंट में बदलाव के बाद से ही कंपनी का पूरी तरह मेकओवर हो गया है। यही नहीं कंपनी अब मार्केट हिस्सेदारी में भी बढ़ोतरी करती नजर आ रही है। ग्राहकों की सुरक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता का फायदा भी कंपनी को हो रहा है।

मांग से अधिक आपूर्ति की चिंता, अंतरराष्ट्रीय बाजार में फिर बढ़ी कच्चे तेल की कीमतें

नई दिल्ली ।

मंदी और घटती मांग की चिंताओं के बीच बुधवार को अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में बढ़ोतरी देखी गई है। मंगलवार को गिरावट के बाद अंतरारष्ट्रीय वायदा बाजार में कच्चे तेल का दाम बुधवार को लगभग 3 फीसदी चढ़ गया। पिछले सत्र में भारी गिरावट के बाद होने वाली इस वृद्धि को अप्रत्याशित माना जा रहा है। दरअसल, मंदी के बारे में चिंताओं के बीच एक नई चिंता ने जन्म लिया है और वह तेल की आपूर्ति का। रूस-यूक्रेन युद्ध से लंबा खिंचने से इन चिंताओं को खारिज भी नहीं किया जा सकता। वहीं नॉर्वे ने भी अपने उत्पादन में कटौती की घोषणा की है। कच्चे तेल के दाम में मार्च के बाद मंगलवार को 9.5 फीसदी की सबसे बड़ी गिरावट के बाद बुधवार को शुरुआती कारोबार में ब्रेंट क्रूड का वायदा तकरीबन 3 डॉलर या 2.9 फीसद बढ़कर 105.85 डॉलर प्रति बैरल हो गया। इसके पहले यह 103.69 डॉलर प्रति बैरल पर था। वहीं अप्रैल के अंत के बाद पहली बार यूएस वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट क्रूड 2.46 डॉलर या 2.4 फीसदी ऊपर जाकर 101.95 डॉलर प्रति बैरल हो गया। मीडया रिपोर्ट्स के अनुसार, क्रूड ऑयल मार्केट के विश्लेषक इसे 'रीसेट' की स्थिति मान रहे हैं। उनका कहना है कि यहां से बाजार के ऊपर जाने की संभावना अधिक है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि कच्चे तेल के व्यापार में शामिल खिलाड़ी अपने नुकसान के 'शॉर्ट कवरिंग' और नए सौदों के लिए तेजी से आगे आ रहे हैं। ऐसा माना जा रहा है कि कच्चे तेल के बाजार में बिकवाली का दौर अब जल्द ही खत्म हो सकता है। ओपेक के महासचिव मोहम्मद बरकिंडो ने कहा कि कई सालों से कम निवेश के कारण तेल उद्योग गहरे संकट में है और अगर ईरान और वेनेजुएला से अतिरिक्त आपूर्ति की अनुमति दी गई तो नुकसान को कम किया जा सकता है। उधर रूस के पूर्व राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव ने यह भी चेतावनी दी कि जापान के एक कथित प्रस्ताव से रूसी तेल की कीमत मौजूदा स्तर से लगभग आधी हो जाएगी, जिससे बाजार में तेल काफी कम हो जाएगा और कीमतें 300-400 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर हो जाएंगी। नॉर्वे द्वारा तेल उत्पादन में कटौती की घोषणा के चलते भी कच्चे तेल की कीमतों में उछाल आ रहा है।

भारत की पेट्रोल और डीजल की बिक्री जून में फसल के मौसम की शुरुआत, गर्मी और अन्य आर्थिक गतिविधियों के कारण बढ़ी। जून में डीजल की बिक्री 35.2 प्रतिशत बढ़कर 7.38 मिलियन टन हो गई। मई के दौरान डीजल की खपत 6.7 मिलियन टन थी। फिलहाल तो सरकार पर महंगाई और मुद्रास्फीति को काबू में रखने का दबाव है, इसलिए निकट भविष्य में डीजल और पेट्रोल के दाम बढ़ने की गुंजाइश कम ही है। अगर अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के बेतहाशा दामों में वृद्धि होती है, तो तेल कंपनियों को होने वाला नुकसान भी बढ़ता जाएगा। ऐसे में घरेलू बाजार में कीमत बढ़ने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता।

निर्यात बढ़ाने किसानों को धान, गेहूं बुवाई बढ़ाने प्रोत्साहित करें राज्य: गोयल

नई दिल्ली ।

केंद्रीय खाद्य और उपभोक्ता मामलों के मंत्री पीयूष गोयल ने राज्यों से कहा कि वे किसानों को धान और गेहूं के लिए बुवाई का रकबा बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करें, क्योंकि घरेलू उत्पादन बढ़ने से देश का निर्यात भी बढ़ेगा। भारत में खाद्य और पोषण सुरक्षा पर राज्यों के खाद्य मंत्रियों के सम्मेलन को संबोधित करते हुए गोयल ने राज्य सरकारों से कहा कि वे पुराने खातों के त्वरित निपटान के लिए 2019-20 तक के वित्त वर्षों के लिए अपने लंबित खाद्य सब्सिडी दावों को जल्द से जल्द जमा कराएं। गोयल ने राज्य सरकारों से कहा कि पुराने खाद्य सब्सिडी दावों को निपटाने के लिए केंद्र के पास धन की कोई कमी नहीं है लेकिन देरी इसलिए हुई क्योंकि राज्य उचित दस्तावेजों के साथ अपने दावे दाखिल नहीं कर रहे हैं। केंद्रीय मंत्री ने सभी राज्यों से 15 अगस्त तक सभी सहायक कागजात और ऑडिट रिपोर्ट के साथ अपने दावे प्रस्तुत करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि 15 अगस्त तक दावा दायर करने वाले राज्यों को 15 अक्टूबर तक उनका बकाया मिल जाएगा। हालांकि अगर 30 सितंबर तक कागजात दाखिल किए जाते हैं, तो बिना किसी ब्याज के जनवरी, 2023 तक दावों का निपटारा किया जाएगा। अक्सर राज्य यह कहते हुए हमारे पास आते हैं कि हमारे पास पुराने लंबित सब्सिडी दावे हैं। बहुत बार सब्सिडी के दावे इसलिए नहीं लंबित रहते हैं क्योंकि धन उपलब्ध नहीं है, बल्कि ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उनके द्वारा जरूरी आंकड़े नहीं दिए जाते और वे जरूरी ऑडिट नहीं करा पाते हैं। उन्होंने कहा कि हम वर्ष 2019-20 तक सभी का बकाया चुकाने के लिए तैयार हैं।

30 अक्टूबर तक सौ फीसदी परिचालन शुरू हो जाएगा: सिंगापुर एयरलाइंस

सिंगापुर। सिंगापुर एयरलाइन्स (एसआईए) ने घोषणा की है कि वह 30 अक्टूबर तक भारत के लिए महामारी से पहले के स्तर तक का परिचालन शुरू कर देगी। कंपनी ने कहा कि हवाई यात्रा की मांग बढ़ने के मद्देनजर यह फैसला लिया गया है। कंपनी ने कहा कि चेन्नई तक सप्ताह में 17 उड़ानों का परिचालन धीरे-धीरे शुरू किया जाएगा जो अभी प्रति सप्ताह 10 उड़ान है। इस तरह कोच्चि के लिए अभी हर सप्ताह सात उड़ानें हैं जिन्हें बढ़ाकर 14 किया जाएगा, बेंगलुरु के लिए उड़ानें मौजूदा सात से बढ़ाकर 16 की जाएंगी। एसआईए ने कहा कि 30 अक्टूबर 2022 तक कंपनी भारत के लिए कोविड से पहले की अपनी लगभग 100 फीसदी क्षमता के साथ परिचालन करने लगेगी। सिंगापुर एयरलाइन्स में एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि भारत आवागमन के लिए मांग बढ़ी है जो इस महत्वपूर्ण बाजार में हमारी सेवाएं बढ़ाने के लिहाज से अनुकूल है। महामारी से पहले तक भारत के सात गंतव्यों तक एयरलाइन हर सप्ताह कुल 96 उड़ानों का संचालन करती थी।

शार्ट न्यूज

सिंधु दूसरे दौर में, सायना पहले दौर में बाहर

कुआलालम्पुर। पूर्व विश्व चैंपियन भारत की पीवी सिंधु ने बुधवार को तीन गेमों के कड़े संघर्ष में चीन की ही बिंग जियाओ को हराकर मलेशिया मास्टर्स बैडमिंटन टूर्नामेंट के दूसरे दौर में प्रवेश कर लिया जबकि सायना नेहवाल को पहले दौर में हार कर बाहर हो जाना पड़ा। सिंधु,के अलावा एच एस प्रणय, बी साई प्रणीत और परूपल्ली कश्यप ने मलेशिया मास्टर्स के दूसरे दौर में जगह बना ली है। सातवीं वरीय और दो बार की ओलंपिक पदक विजेता सिंधु ने लगभग एक घंटा चले मुकाबले में बिंग जियाओ को 21-13, 17-21, 21-15 से हराया। इस जीत के साथ दुनिया की सातवें नंबर की खिलाड़ी सिंधु ने पिछले महीने इंडोनेशिया ओपन सुपर 1000 टूर्नामेंट के बिंग जियाओ के खिलाफ पहले दौर में सीधे गेम में मिली हार का बदला चुकता कर दिया। सिंधु का अगला मुकाबला चीन की झांग यी मन से होगा। इस हार के बावजूद चीन की खिलाड़ी का हालांकि अब भी सिंधु के खिलाफ जीत-हार का रिकॉर्ड 10-9 है। सायना को कोरिया की किम गा उन ने 50 मिनट में 16-21, 21-17, 21-14 से हरा कर दूसरे दौर में जगह बना ली। पुरुष एकल में प्रणय ने फ्रांस के ब्राइस लेवेरदेज को 42 मिनट में 21-19, 21-14 से और प्रणीत ने एकतरफा मुकाबले में आधे घंटे से कम समय में गुआटेमाला के केविन कोर्डन को 21-8, 21-9 से हराया, जबकि कश्यप ने एक गेम से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए स्थानीय दावेदार टॉमी सुगियार्तो को 16-21, 21-16, 21-16 से शिकस्त दी। समीर वर्मा को हालांकि कड़े मुकाबले में चीनी ताइपे के चौथे वरीय चाउ तिएन चेन के खिलाफ 21-10, 12-21, 14-21 से हार झेलनी पड़ी।

छह साल में पहली बार टेस्ट रैंकिंग के शीर्ष-10 से बाहर हुए कोहली

दुबई। खराब फॉर्म से गुजर रहे भारत के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली छह साल में पहली बार आईसीसी टेस्ट रैंकिंग के शीर्ष-10 से बाहर हो गये हैं।आईसीसी की ओर से बुधवार को जारी ताजा रैंकिंग के अनुसार, कोहली चार पायदान फिसल कर 714 रेटिंग के साथ 13वें स्थान पर आ गये हैं। कोहली ने पहली बार 21 नवंबर 2016 को आईसीसी टेस्ट रैंकिंग के शीर्ष-10 में जगह बनायी थी। वह 2,053 दिनों तक शीर्ष 10 में बने रहे। खराब फॉर्म से जूझ रहे कोहली ने इंग्लैंड के खिलाफ पांचवें टेस्ट की दो पारियों में सिर्फ 31 (11, 20) रन बनाये थे। इसी बीच, भारतीय टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत ने एजबेस्टन टेस्ट में 146 और 57 रन के स्कोर के साथ रैंकिंग में बड़ी छलांग लगायी है। पंत पांच पायदान ऊपर उठकर 801 की रेटिंग के साथ टेस्ट रैंकिंग में पांचवें स्थान पर आ गये हैं। कोरोना के कारण इस टेस्ट से बाहर रहे रोहित शर्मा एक पायदान फिसल कर नौंवे स्थान पर आ गये हैं, जबकि पिछली पांच पारियों में चार शतक लगाने वाले इंग्लैंड के जॉनी बेयरस्टो ने 11 पायदान की छलांग लगाकर 10वां स्थान हासिल कर लिया है। पटौदी ट्रॉफी में इंग्लैंड के मैन ऑफ द सीरीज रहे जो रूट 923 रैंकिंग के साथ शीर्ष टेस्ट बल्लेबाज बने हुए हैं।

टी20 सीरीज में टेस्ट हार का बदला लेने में कामयाब होगी टीम इंडिया

साउथैंप्टन। इंग्लैंड दौरे पर गई भारतीय टीम को एजबेस्टन में खेले गए पांचवें और निर्णायक टेस्ट मैच में जीत के बेहद करीब पहुंचकर हार का सामना करना पड़ा। हालांकि भारतीय टीम के पास टी-20 और वनडे सीरीज के जरिये इस हार का बदला लेने के लिए पर्याप्त मैच हैं। भारत और इंग्लैंड के बीच गुरुवार से टी20 सीरीज खेली जानी है। इस सीरीज में 3 मैच होंगे। हालांकि, मुकाबले से पहले ही टीम इंडिया में रोहित की वापसी हो गई है, लेकिन इसके साथ ही अब कौन होगा बाहर, जैसे सवाल उठने लगे हैं। उल्लेखनीय कि टी20 सीरीज के बाद दोनों टीमें वनडे सीरीज के लिए आपस में भिड़ेंगी। टी20 और वनडे सीरीज मिलाकर भारत और इंग्लैंड के बीच 10 दिनों में कुल 6 मुकाबले खेले जाएंगे। जाहिर है एक हार को लेकर जहां भारतीय क्रिकेट प्रेमी थोड़ा निराश हैं, वहीं आगामी वाइट बॉल सीरीज को लेकर उत्सुक भी हैं। दिग्गज कमेंटेटर व पूर्व टेस्ट क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने अपने ऑनलाइन शो आकाशवाणी में टेस्ट मैच में भारत की शिकस्त की वजह और डब्लूटीसी के फाइनल्स में क्वॉलिफिकेशन का जिक्र करने के साथ नीली जर्सी में रोहित शर्मा की वापसी पर भी उत्सुकता जाहिर की है। आज की सआकाशवाणी के साथ एक कू पोस्ट शेयर करते हुए आकाश ने इंग्लैंड के तगड़े बैटिंग लाइनअप को भी सराहा, साथ ही भारतीय गेंदबाजों को सबक सीखने की सलाह भी दी।

करो या मरो मुकाबले में न्यूजीलैंड से भिड़ेगा भारत

एम्सटलवीन। भारतीय महिला हॉकी टीम एफआईएच महिला हॉकी विश्व कप में इंग्लैंड और चीन के खिलाफ लगातार दो ड्रॉ खेलने के बाद गुरुवार को करो या मरो मैच में न्यूजीलैंड का सामना करेगी। इससे पहले, भारत और इंग्लैंड के बीच खेला गया पूल बी मैच 1-1 पर समाप्त हुआ था। भारत और चीन के बीच खेला गया मैच भी इसी अंजाम पर पहुंचा था। भारत को राउंड रॉबिन लीग के अपने अंतिम मुकाबले में न्यूजीलैंड के विरुद्ध जीतना जरूरी है। चीन के खिलाफ टीम के प्रदर्शन पर मुख्य कोच जैनेक शॉपमैन ने कहा, हमने एक मजबूत चीनी डिफेंस के सामने अच्छी शुरुआत की। यह हमारा दुर्भाग्य रहा कि हम मैच के शुरुआती मिनटों में स्कोर नहीं कर पाए और चौकसी न बरतने के कारण विपक्षी टीम को एक गोल की बढ़त दे बैठे। हमने उसके बाद थोड़ा संघर्ष किया लेकिन जब हमें जगह मिली तो हम अच्छे मिश्रण के साथ खेले। उन्होंने कहा, पेनल्टी कॉर्नर गोल बहुत अच्छा था लेकिन ऐसा महसूस हुआ कि हम उसके बाद आगे बढ़ना भूल गए। चीन अंतिम चरण में अधिक आक्रामक था।

मैं वनडे में अधिकतर सिंगल लेने पर ध्यान दे रही हूं :शेफ़ाली

पल्लेकेल। भारतीय युवा ओपनर शेफ़ाली वर्मा लगातार स्ट्राइक बदलने और सिंगल लेने पर काम कर रही हैं। वह केवल चौके और छक्कों पर निर्भर नहीं रहना चाहती। उन्होंने यह बात पल्लेकेल में श्रीलंका के ख़िलाफ़ होने वाले आख़िरी वनडे मैच से पहले कही। भारत सीरीज में 2-0 से आगे है। शेफ़ाली ने दूसरे वनडे में 71 गेंदें खेली, जिसमें 37 सिंगल लिए गए थे। यह उनकी खेली गई गेंदों का 52 प्रतिशत है। इस पारी में उन्होंने अर्धशतक लगाया। शेफ़ाली ने कहा, मुझे लगता है कि वनडे में हमें और भी ज़्यादा सिंगल लेने पर ध्यान देने की ज़रूरत है और मैं इस पर काम कर रही हूं। मैंने अपने कुछ मैच देखे और पाया कि मैं कम सिंगल लेती हूं। मुझे लगा कि मुझे स्ट्राइक बदलने पर काम शुरू करना चाहिए और मैंने ऐसा किया। मैंने यह श्रीलंका के ख़िलाफ़ टी20 में भी किया, जहां मैंने अच्छी गेंदों पर सिंगल लिए। मैं लंबी पारी खेलने को देख रही हूं। पिछले साल अपनी पहली महिला बिग बैश लीग में शेफ़ाली ने सिडनी सिक्सर्स के लिए मध्य क्रम में बल्लेबाज़ी की थी, जहां वह ऐलीस पेरी, अलिसा हीली, ऐश्ली गार्डनर और निकोल बोल्टन के साथ खेली और यह उनके लिए सीखने वाला अनुभव रहा।

इंग्लैंड ने दिखाया है कि टेस्ट क्रिकेट कैसे खेला जाता है : बेन स्टोक्स

बर्मिंघम। एजबेस्टन टेस्ट में 378 रनों के लक्ष्य का सफलतापूर्वक पीछा करने के बाद इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने कहा कि इंग्लैंड ने दिखाया है कि टेस्ट क्रिकेट कैसे खेला जाता है और अब इंग्लैंड के प्रयासों से विरोधी टीमें तीसरी पारी में डरेंगी, यह सोचेंगी कि जो लक्ष्य दिया जाएगा वह कम ना पड़ जाए। स्टोक्स ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाज़ी का निर्णय लिया था, इंग्लैंड के ऐसे मैदानों पर जहां न्यूज़ीलैंड के ख़िलाफ़ उन्होंने तीन बार लगातार चौथी पारी में 277 और 299 के बीच का लक्ष्य हासिल किया। इस बार भी यह सात विकेट की जीत तब मिली जब पहली पारी में इंग्लैंड 132 रनों से पीछे थी। जब दूसरी पारी में भारत ने तीन विकेट पर 153 रन बना लिए थे तो लग रहा था कि भारत ने मैच पर पकड़ बना ली है लेकिन अगले दिन उन्होंने 92 रनों के अंदर ही सात विकेट गंवा दिए।

होण्डा रेसिंग इंडिया टैलेंट कप के दूसरे राउण्ड के लिए पहुंची चेन्नई

चेन्नई। इंडियन नेशनल मोटरसाइकल रेसिंग चैम्पियनशिप (आईएनएमआरसी) और आईडेमिट्सु होण्डा इंडिया टैलेंट कंप के 2022 सीज़न का दूसरा राउण्ड मद्रास मोटर रेसट्रैक (एमएमआरटी) पर शुरू होने जा रहा है, इस राउण्ड में अपनी प्रतिभा का एक बार फिर से प्रदर्शन करने के लिए होण्डा रेसिंग इंडिया के राइडर चेन्नई पहुंच गए हैं। आईडेमिट्सु होण्डा इंडिया एसके69 रेसिंग टीम के राजीव सेथु और सेंथिल कुमार तथा एएसके होण्डा रेसिंग टीम के अभिषेक वासुदेव प्रोस्टॉक 165 सीसी कैटेगरी में मुकाबला करने के लिए तैयार हैं, 20 नेक्स्ट-जैन मिलेनियल राइडर आईडेमिट्सु होण्डा इंडिया टैलेंट कप एनएसएफ250आर और सीबीआर150आर कैटेगरीज़ में

पॉइन्ट्स स्कोर करने के लिए मुकाबला करेंगे। वहीं होण्डा की होर्नेट 2.0 वन मेक रेस आईडेमिट्सु होण्डा इंडिया टैलेंट कप को सपोर्ट करेगी। यह राउण्ड होण्डा के 14 उपभोक्ताओं को होण्डा होर्नेट 2.0 रेस मशीन पर राइडिंग के रोमांच का अनुभव पाने का मौका देगा।

इस अवसर पर प्रभु नागराज-ऑपरेटिंग ऑफिसर, ब्राण्ड एण्ड कम्युनिकेशन, होण्डा मोटरसाइकल एण्ड स्कूटर इंडिया ने कहा, ''नेशनल चैम्पियनशिप के चुनौतीपूर्ण राउण्ड 1 ने हमें कई महत्वूर्ण पहलुओं को समझने तथा टीम को इस सप्ताहान्त आयोजित आगामी राउण्ड के लिए उन पर तैयारी करने का अवसर दिया। राजीव और सेंथिल अपने पिछले अनुभव का उपयोग करते हुए टॉप स्पॉट के लिए मुकाबला करेंगे, वहीं एएसके होण्डा रेसिंग टीम के अभिषेक वासुदेव भी रेसिंग के जोश को बढ़ाएंगे। वहीं दूसरी ओर, आईडेमिट्सु होण्डा इंडिया टैलेंट कप के हमारे 20 युवा राइडर भी टॉप स्पॉट के लिए मुकाबला करने को पूरी तरह से तैयार हैं। हमें विश्वास है कि यह राउण्ड हमारे लिए अच्छे परिणाम लेकर आएगा। मुझे खुशी है कि हमारे विशेषज्ञ कोच टाडायुकी ओकादा महामारी के चलते दो साल के अंतराल के बाद इस राउण्ड में शामिल होने जा रहे हैं।''

एमआरएफ एमएमएससी एफएमएससीआई इंडियन नेशनल मोटरसाइकल रेसिंग चैम्पियनशिप-प्रो-स्टॉक 165 सीसी- आईडेमिट्सु होण्डा एसके69 रेसिंग टीम कुल 25 पॉइन्ट्स के साथ दूसरे राउण्ड में प्रवेश कर रही है। राजीव के पास 15 पॉइन्ट्स और सेंथिल के पास 10 पॉइन्ट्स हैं, आगामी सप्ताहान्त के लिए यह जोड़ी अपनी पूरी क्षमता के साथ रेस के मैदान में शानदार परफोर्मेन्स के लिए तैयार है। वहीं दूसरी ओर एएसके होण्डा रेसिंग टीम के अभिषेक वासुदेव दूसरे राउण्ड के साथ चैम्पियनशिप में प्रवेश करने जा रहे हैं।

धीमी ओवर रेट के कारण विश्व टेस्ट चैंपियनशिप में भारत के दो अंक कटे

दुबई। एजबेस्टन टेस्ट में धीमी ओवर गति के कारण भारत को विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) में दो अंकों का नुकसान उठाना पड़ा है। भारत और इंग्लैंड के बीच खेली गई पटौदी ट्रॉफ़ी में भारत को पांचवें टेस्ट में हार का सामना करना पड़ा और सीरीज़ 2-2 के साथ समाप्त हुई। दो अंकों के नुकसान के परिणामस्वरूप भारत के पास वर्तमान में 52.08 प्रतिशत अंक हैं, जो पाकिस्तान के 52.38 से थोड़ा कम है। इसी के साथ अब भारत अंक तालिका में चौथे स्थान पर पहुंच गया है।

अंक की कटौती के अलावा भारतीय टीम के सभी खिलाड़ियों का लगभग 40 फ़ीसदी मैच फीस भी काटा गया है। इस सीरीज़ में ऐसा दूसरी बार हुआ है जब धीमी ओवर गति के कारण भारत के अंक काटे गए हैं। साथ ही वर्तमान डब्ल्यूटीसी चक्र में कुल मिलाकर तीसरी बार भारत के अंक काटे गए हैं। सबसे पहले नॉटिंघम टेस्ट में भारत ने दो अंक गंवाए थे। इसके बाद जनवरी में साउथ अफ़्रीका में सेंचुरियन में एक अंक काटा गया था। मौजूदा चक्र में भारतीय टीम के कुल पांच अंक काटे गए हैं।

इस घटना के कारण भारतीय टीम के लिए अब डब्ल्यूटीसी के फ़ाइनल में पहुंचने का रास्ता और कठिन हो गया है। पिछली डब्ल्यूटीसी में ऑस्ट्रेलिया की टीम के धीमी ओवर गति के कारण चार अंक काटे गए थे और वह फ़ाइनल में जगह नहीं बना पाए थे। भारत के साथ खेले गए बॉक्सिंग डे टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया के यह अंक काटे गए थे। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया की टीम दक्षिण अफ़्रीका के दौरे पर जाने वाली थी लेकिन कोविड के कारण वह सीरीज़ नहीं हो पाया और भारत फ़ाइनल में पहुंच गया।

ओवर रेट से संबंधित आईसीसी के नियमों के अनुसार खिलाड़ियों को उनकी टीम के द्वारा निर्धारित समय में गेंदबाजी करने में विफल रहने के बाद प्रति ओवर की दर से हर ओवर में मैच फ़ीस का 20त्न जुर्माना लगाया जाता है। वहीं अगर कोई टीम ओवर रेट से एक ओवर पीछे रहती है तो उसके एक अंक काटे जाते हैं और दो ओवर पीछे रहती है तो दो अंक काटे जाते हैं।

वेस्ट इंडीज दौरे पर धवन करेंगे वनडे टीम की कप्तानी

एजेंसी

मुंबई। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने बुधवार को वेस्ट इंडीज दौरे पर होने वाली एकदिवसीय श्रंखला के लिये टीम की घोषणा की, जिसमें शिखर धवन को कप्तान चुना गया है।

इससे पहले धवन जून 2021 में श्रीलंका के खिलाफ खेली गयी एकदिवसीय और टी20 श्रंखलाओं में भी टीम की कप्तानी कर चुके हैं।धवन की कप्तानी के साथ शीर्ष ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा को उपकप्तान चुना गया है।

कप्तान रोहित शर्मा, विराट कोहली, ऋषभ पंत और जसप्रीत बुमराह को इस श्रंखला में आराम दिया गया है। शुभमन गिल और संजू सैमसन को लंबे समय बाद एकदिवसीय मैचों के लिये तलब किया गया है।

गिल ने अपना आखिरी एकदिवसीय मुकाबला दो दिसंबर 2020 को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेला था, जबकि सैमसन ने अपना एकलौता एकदिवसीय मैच 23 जुलाई 2021 को श्रीलंका के विरुद्ध खेला था।

भारत को वेस्ट इंडीज के खिलाफ इस श्रंखला में तीन मैच खेलने हैं जो क्वीन्स पार्क ओवल, पोर्ट ऑफ स्पेन और त्रिनिदाद में आयोजित होंगे।

अब अजीबोगरीब शॉट खेलने में डर नहीं लगता: रूट

बर्मिंघम। यह अपने बचपन को फिर से जीने की तरह है। मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं पहली बार क्रिकेट खेल रहा हूं। प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह पहला जबाव देकर जो रूट ने साफ़ कर दिया कि वह और इंग्लैंड का पूरा ड्रेसिंग रूम कैसा महसूस कर रहा है।

माइक और कैमेरा के सामने बैठने के एक घंटे पहले नाबाद 142 रन बनाकर रूट ने 114 रन बनाकर उनका साथ दे रहे जॉनी बेयरस्टो के साथ 378 रनों के रिकॉर्ड लक्ष्य को आसानी से हासिल कर लिया।उन्होंने अंतिम दिन 119 रन महज़ 19.5 ओवरों में बना लिए गए। इस दौरान रूट और बेयरस्टो ने इस साल क्रमश: अपना पांचवां और छठा टेस्ट शतक पूरा किया। शुरू से ही कोई ख़तरा नहीं था और ना कोई चिंता थी। इंग्लैंड के ड्रेसिंग रूम में शांति थी क्योंकि वह इससे पहले तीन मैचों में 250 से अधिक का लक्ष्य हासिल कर चुके थे।

पिछले साल चार बार लक्ष्य को सफलतापूर्वक हासिल करने पर रूट ने कहा, मुझे लगता है कि जब आप एक बार ऐसा कर लेते हो, आपको पता चल जाता है और फिर आप खुद को साबित करने के लिए उसे दोहराना चाहते हो। इससे वह चीज़ आसान लगने लगती है और यह उसे थोड़ा और विश्वनीय बनाता है।

रूट ने आगे कहा, मेरा मानना है कि विश्व भर की टीमें हमारे खेलने के अंदाज़ को देखकर डर महसूस कर रहे हैं। आप अन्य टीमों के नज़रिए और खेलने के अंदाज़ के बारे में ज़्यादा सोच-विचार नहीं करना चाहते हैं। हालांकि यह आपके अंदर आत्मविश्वास पैदा करता है और आपको लगता है कि अन्य टीमें आपसे सावधान होने लगी हैं।

यहां अंतर यह था कि लक्ष्य कितना ही विशाल क्यों ना हो, इंग्लैंड ने उसका मानसिक दबाव नहीं लिया। ज़ैक क्रॉली और ऐलेक्स लीस की इंग्लैंड की ओर से पहले विकेट के लिए बनाई गई सबसे तेज़ शतकीय साझेदारी के बाद तीन ओवरों के भीतर तीन विकेट गंवाने के बाद स्थिति बिगड़ सकती थी।

टी के बाद रूट और बेयरस्टो ने पहले पारी को संभाला और फिर जोखिम लिए बिना तेज़ी से रन बटोरे। जीत के क़रीब पहुंचने और अपना शतक पूरा करने के बाद ही रूट ने रचनात्मक शॉट लगाए।

पहले शार्दुल ठाकुर की गेंद पर क़दमों का इस्तेमाल करते हुए उन्होंने सामने की तरफ़ चौका लगाया और उसके बाद रिवर्स स्कूप करते हुए उन्हें छक्का जड़ा।

कर्ज के लिए घुटनों पर पाकिस्तान

आईएमएफ की शर्त मानने को सेना का बजट भी घटाया; 20 पर्सेंट की कटौती

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की आर्थिक बदहाली लगातार बढ़ती जा रही है और अब इसका असर उसकी सेना पर भी दिखने लगा है। आईएमएफ की ओर से उसे दिए गए कर्ज के तहत एक शर्त यह भी रखी गई थी कि वह नए वित्त वर्ष में बजट सरप्लस की स्थिति बनाना है। इस शर्त को पूरा करने के लिए पाकिस्तान को अपने सैन्य बंजट में कटौती करनी पड़ी है। 10 जून को नेशनल असेंबली में पेश किए गए बजट में सेना पर 363 अरब रुपये खर्च करने का ऐलान किया गया था। लेकिन अब यह रकम घटाकर 291 अरब रुपये ही कर दी गई है। इस तरह से पाकिस्तान ने अपनी सेना के बजट में 20 फीसदी तक की कटौती कर दी है।

पाकिस्तान के वित्त मंत्रालय ने संशोधित बजट को संसद से मंजूरी मिलने के बाद यह जानकारी साझा की है। संशोधित बजट के तहत पाकिस्तान ने सेना के लिए आवंटित रकम में 72 अरब रुपये

यानी करीब 20 फीसदी तक की कमी कर दी है। यह आवंटन नियमित रक्षा बजट से इतर था। बीते कुछ सालों में यह दूसरा मौका है, जब पाकिस्तान को अपने रक्षा कार्यक्रमों में कटौती करनी पड़ी है। ऐसा वित्तीय संकट और आईएमएफ की ओर से तय की गई शर्तों के तहत करना पड़ा है। इससे पहले बीते साल सरकार की ओर से सेना के लिए 340 अरब रुपये का बजट आवंटित किया गया था, लेकिन खर्च 270 अरब रुपये ही किया गया था।

पेट्रोल और डीजल की कीमतों में भी करना पड़ा है इजाफा

पाकिस्तानी अखबार द ट्रिब्यून की रिपोर्ट के मुताबिक वित्त मंत्रालय के अधिकारियों का कहना है कि यह कटौती इसलिए की गई है ताकि आईएमएफ की ओर से तय किए गए टारगेट को हासिल किया जा सके। सरकार ने लक्ष्य तय किया है कि इस वित्त वर्ष में प्राइमरी बजट सरप्लस 153 अरब रुपये रहे। इससे पहले अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की शर्तों के चलते ही पाकिस्तान ने पेट्रोल और डीजल की कीमतों में एकमुश्त 35 रुपये तक का इजाफा कर दिया था। इस फैसले की आम लोगों ने काफी आलोचना की है और पूर्व पाक पीएम इमरान खान भी लगातार शहबाज शरीफ पर हमलावर हैं।

भ्रष्टाचार पर भी नकेल कसने की दी है आईएमएफ ने सलाह

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की ओर से पाकिस्तान को भ्रष्टाचार पर नकेल कसने की भी नसीहत दी गई है। आईएमएफ का कहना है कि पाकिस्तान को अपने भ्रष्टाचार निरोधक कानूनों की समीक्षा करनी होगी और उन्हें सख्त बनाना होगा। उसने सलाह दी है कि पाकिस्तान को इंटरनेशनल एक्सपर्ट्स से सलाह लेते हुए कानून बनाने चाहिए ताकि भ्रष्टाचार पर लगाम कसी जा सके।

पाकिस्तान में भारी बारिश से क्वेटा सबसे ज्यादा प्रभावित

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के बलूचिस्तान में भारी बारिश ने कहर बरपाया है। सरकार ने बुधवार को क्वेटा को आपदा प्रभावित क्षेत्र घोषित कर दिया और आपातकाल स्थिति लागू कर दी। जियो न्यूज के अनुसार भारी बारिश के कारण बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न होने के कारण कई घरों की दीवारें और छतें गिरने से 13 लोगों की मौत हो गई और 20 से ज्यादा लोग घायल हो गए हैं। बलूचिस्तान आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने बताया कि किला सैफुल्ला, झोब, पिशिन और हरनाई जिले भारी बारिश के कारण सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं जबकि मुस्लिम बाग, कमरुद्दीन और खुशनूब बाढ से प्रभावित हुए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, खुशनूब के कई गांवों में रात में अचानक बाढ़ आ गई और गांवों को जोड़ने वाला एक लिंक पुल बह गया।

तालिबान ने 21 साल बाद खोद निकाली मुल्ला उमर की कार, अमेरिका से बचने को गाड़कर भागा था

काबुल। तालिबान के संस्थापक मुल्ला उमर की 21 साल पुरानी कार को लड़ाकों ने खोद कर निकाला है। अमेरिका के हमलों से बचने के लिए मुल्ला उमर गायब हो गया था और इस कार को जमीन में गाड़ दिया गया था। अमेरिका में हुए 9/11 के हमलों के बाद अफगानिस्तान में अटैक हुए थे और तब अमेरिकी सेनाओं से बचने के लिए मुल्ला उमर छिप गया था। अब ठीक 21 सालों के बाद तालिबान लड़ाकों ने अपने कमांडकर की कार को जाबुल प्रांत में एक जगह से खोदकर निकाला है। इसकी तस्वीरें भी ,सोशल मीडिया में वायरल हो रही हैं। मुल्ला उमर टोयोटा की इसी कार से कंधार से जाबुल तक आया था और फिर इसे जमीन में गाड़कर लापता हो गया था।

अब जब इस कार को निकाला गया है तो दो दशकों के बाद भी यह पूरी तरह से सेफ है। इसकी वजह यह है कि इसे प्लास्टिक के कवर में बांधकर गाड़ा गया था।

हालांकि फ्रंट के शीशे को जरूर थोड़ा नुकसान पहुंचा है। अब इस कार को अफगानिस्तान के नेशनल म्यूजिमयम में रखा जाएगा। 1960 में कंधार में जन्मे मुल्ला उमर ने तालिबान का गठन किया था और 1980 के दशक में सोवियत के खिलाफ जंग का नेतृत्व किया था। इसी जंग के दौरान उसने गोली लगने के चलते अपनी दाईं आंख खो दी थी। कहा जाता है कि तालिबान के गठन के पीछे अमेरिका का ही हाथ था।

मुल्ला उमर ने खुद निकाल ली थी अपनी आंख?

कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जाता है कि मुल्ला उमर ने अपनी जख्मी आंख को खुद ही निकाल लिया था, जबकि कई लोगों का कहना है कि उसने किसी पड़ोसी मुल्क में इलाज कराया था। अफगानिस्तान से सोवियत के लौटने के बाद मुल्ला उमर कंधार में मौलवी के तौर पर काम करने लगा था। तब उसने एक संगठन बनाया था, जिसका नाम तालिबान रखा गया। तालिबान ने 1996 में अफगानिस्तान की सत्ता पर कब्जा कर लिया था, लेकिन 2001 में अमेरिकी हमले के बाद वह न सिर्फ बेदखल हुआ बल्कि तमाम कमांडर मारे भी गए।

पहली बार होगी गोर्गोसॉरस डायनासोर के जीवाश्म कंकाल की नीलामी

वाशिंगटन। पहली बार गोर्गोसॉरस डायनासोर के जीवाश्म कंकाल की नीलामी 28 जुलाई को न्यूयॉर्क में की जाएगी। बहुराष्ट्रीय कंपनी सूदबी द्वारा की गई एक घोषणा में बताया गया कि गोर्गोसॉरस डायनासोर लगभग 77 मिलियन वर्ष पहले पृथ्वी पर था। फिलहाल, डायनासोर को टायरानोसॉरस रेक्स का करीबी रिश्तेदार बताया जाता है। घोषणा में बताया गया कि इस जीव का जीवाश्म कंकाल, जो लगभग 10 फीट लंबी पूंछ और 22 फीट लंबा है। इस कंकाल की न्यूयॉर्क में नीलामी होगी। द इंडिपेंडेंट के अनुसार, इतिहास में पहली बार ऐसी नीलामी हो रही है, जिसकी अनुमानित कीमत पचास से अस्सी लाख डॉलर है। इसे बाजार में अब तक के सबसे मूल्यवान नीलमी में से एक माना जा रहा है। इस कंकाल को साल 2018 में हैवर, मोंटाना के पास जूडिथ रिवर फॉर्मेशन में खोजा गया था। द इंडिपेंडेंट ने बताया कि अमेरिका और कनाडा के संस्थागत संग्रह में डायनासोर के कंकालों को रखा गया है जिससे यह निजी स्वामित्व के लिए अपनी तरह का एकमात्र नमूना उपलब्ध है।

कैलिफोर्निया : हजारों एकड़ का क्षेत्र जंगली आग की चपेट में

कैलिफोर्निया। अमेरिका के कैलिफोर्निया में चार जुलाई को जंगल में लगी आग ने करीब तीन हजार एकड़ क्षेत्र को अपनी चपेट में लेते हुए बिजली ग्रिड को खतरे में डाल दिया है। 'द गार्जियन' ने वानिकी और अग्नि सुरक्षा विभाग के हवाले से बताया है कि तेज गति से फैलने वाली 'इलेक्ट्रा' आग ने पूर्व संक्रोमेंटो के सैंकड़ों लोगों ने घरों को छोड़कर अन्य स्थानों पर शरण ली है। समाचार पत्र के अनुसार, चार जुलाई को आग उत्तर के मोकेलुमने नदी के पास लगी थी जिसका दायरा दोगुना होकर तीन हजार एकड़ से अधिक क्षेत्रों में फैल गया।आग लगने के कारणों का फिलहाल पता नहीं चला है। अधिकारियों ने मंगलवार की रात कहा कि इलेक्ट्रा आग सक्रिय रूप से जल रही है और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की निगरानी की जा रही है। लॉस एजिंल्स टाइम्स ने मंगलवार रात बताया कि पांच प्रतिशत क्षेत्रों में आग पर काबू पा लिया गया है तथा करीब 3,900 एकड़ क्षेत्र इसकी चपेट में है।

चीन के शीआन में लगा एक सप्ताह का लॉकडाउन

बीजिंग। चीन के शीआन शहर में कोरोना वायरस महामारी के ओमिक्रोन वेरिएंट के नए स्वरूप के तेजी से फैलने के बाद शहर में आंशिक रूप से एक सप्ताह के लिए लॉकडाउन लगा दिया है। इस शहर की आबादी करीब 1.3 करोड़ है। स्थानीय संक्रमण नियंत्रण अधिकारी के अनुसार, शहर में सोमवार को ओमिक्रोन बीए.5.2 के 18 नए मामले दर्ज हुए। शीआन के अधिकारियों ने मंगलवार को कहा कि शहर के हिस्सों में आज से एक सप्ताह तक के लिए लॉकडाउन लागू रहेगा। शहर के अधिकारी झांग जुएदोंग के अनुसार इस दौरान मनोरंजन, खेल, सांस्कृतिक स्थल, बार, सिनेमा, जिम, पुस्तकालय और संग्रहालय बंद रहेंगे। शादियों से लेकर सम्मेलनों तक, रेस्तरां में भोजन और बड़े समारोहों पर रोक रहेगी। साथ ही सभी पूजा स्थल बंद कर दिए गए और धार्मिक गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इसके साथ ही किंडरगार्टन, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों को गर्मी की छुट्टियां जल्दी शुरू करने का आदेश दिया गया है और विश्वविद्यालय परिसरों को भी बंद मर दिया गया है।

भारत के लेफ्टिनेंट जनरल मोहन सुब्रमण्यम यूएनएमआईएसएस के नए फोर्स कमांडर

न्यूयार्क। भारत के लेफ्टिनेंट जनरल मोहन सुब्रमण्यम को दक्षिण सूडान में संयुक्त राष्ट्र मिशन सेना का नया कमांडर नियुक्त किया गया है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने बुधवार को इसकी घोषणा की। लेफ्टिनेंट जनरल सुब्रमण्यम भारत के लेफ्टिनेंट जनरल शैलेश तिनिकर का स्थान लेंगे। श्री सुब्रमण्यम का कैरियर पिछले 36 वर्षों से अधिक समय से भारतीय सेना में है तथा उन्होंने कमांड, स्टाफ और अन्य कई पदों पर काम किया है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं... से मुद्रित एवं , ब्लाक नं 23 मकान नं 399 त्रिलोक पुरी दिल्ली -91 से प्रकाशित
संपादकः प्रवीण कुमार सिंह, आरएनआई नं. ·DELHIN/2011/38334, किसी भी विवाद के लिए पीआरबी एक्ट अंतर्गत उत्तरदायी, टेलीफोन नं.: 011-26700510/11 , ई-मेल : info@gauravshalibharat.com, समस्त विवादो का न्यायलय दिल्ली होगा

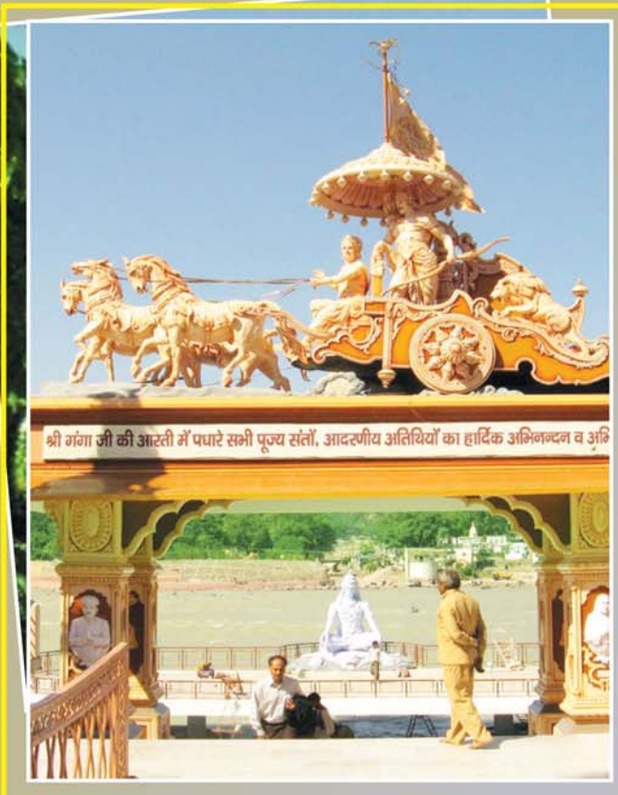

हिमालय का प्रवेशद्वार
ऋषिकेश

ऋषिकेश से संबंधित अनेक धार्मिक कथाएं प्रचलित हैं। कहा जाता है कि समुद्र मंथन के दौरान निकला विष शिव ने इसी स्थान पर पिया था। विष पीने के बाद उनका गला नीला पड़ गया और उन्हें नीलकंठ के नाम से जाना गया। एक अन्य अनुश्रुति के अनुसार भगवान राम ने वनवास के दौरान यहां के जंगलों में अपना समय व्यतीत किया था। रस्सी से बना लक्ष्मण झूला इसका प्रमाण माना जाता है।

हिमालय का प्रवेश द्वार, ऋषिकेश जहां पहुंचकर गंगा पर्वतमालाओं को पीछे छोड़ समतल धरातल की तरफ आगे बढ़ जाती है। हरिद्वार से मात्र 24 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ऋषिकेश विश्व प्रसिद्ध एक योग केंद्र है। ऋषिकेश का शांत वातावरण कई विख्यात आश्रमों का घर है। उत्तराखण्ड में समुद्र तल से 1360 फीट की ऊंचाई पर स्थित ऋषिकेश भारत के सबसे पवित्र तीर्थस्थलों में एक है। हिमालय की निचली पहाड़ियों और प्राकृतिक सुन्दरता से घिरे इस धार्मिक स्थान से बहती गंगा नदी इसे अतुल्य बनाती है। ऋषिकेश को केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री का प्रवेशद्वार माना जाता है। कहा जाता है कि इस स्थान पर ध्यान लगाने से मोक्ष प्राप्त होता है। हर साल यहां के आश्रमों के बड़ी संख्या में तीर्थयात्री ध्यान लगाने और मन की शान्ति के लिए आते हैं। विदेशी पर्यटक भी यहां आध्यात्मिक सुख की चाह में नियमित रूप से आते रहते हैं।

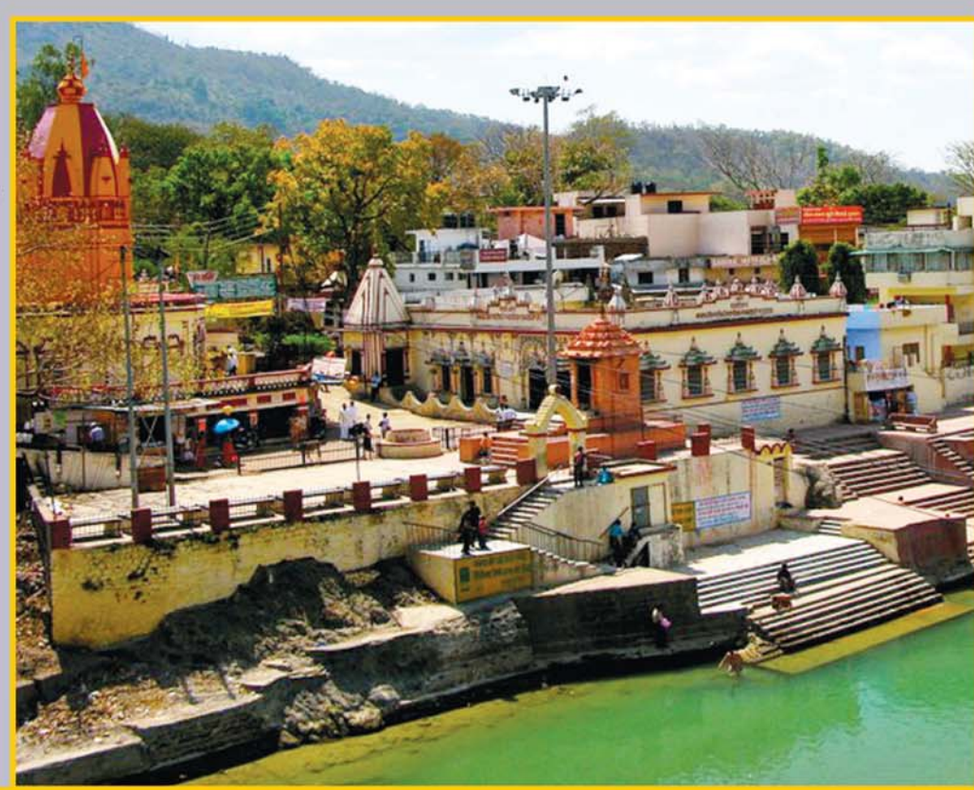

प्रचलित कथाएं

ऋषिकेश से संबंधित अनेक धार्मिक कथाएं प्रचलित हैं। कहा जाता है कि समुद्र मंथन के दौरान निकला विष शिव ने इसी स्थान पर पिया था। विष पीने के बाद उनका गला नीला पड़ गया और उन्हें नीलकंठ के नाम से जाना गया। एक अन्य अनुश्रुति के अनुसार भगवान राम ने वनवास के दौरान यहां के जंगलों में अपना समय व्यतीत किया था। रस्सी से बना लक्ष्मण झूला इसका प्रमाण माना जाता है। 1939 ई. में लक्ष्मण झूले का पुनर्निर्माण किया गया। यह भी कहा जाता है कि ऋषि राभ्या ने यहां ईश्वर के दर्शन के लिए कठोर तपस्या की थी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान ऋषिकेश के अवतार में प्रकट हुए। तब से इस स्थान को ऋषिकेश नाम से जाना जाता है।

लक्ष्मण झूला

गंगा नदी के एक किनार को दूसरे किनारे से जोड़ता यह झूला शहर की खास पहचान है। इसे 1939 में बनवाया गया था। कहा जाता है कि गंगा नदी को पार करने के लिए लक्ष्मण ने इस स्थान पर जूट का झूला बनवाया था। झूले के बीच में पहुंचने पर वह हिलता हुआ प्रतीत होता है। 450 फीट लंबे इस झूले के समीप ही लक्ष्मण और रघुनाथ मंदिर हैं। झूले पर खड़े होकर आसपास के खूबसूरत नजारों का आनंद लिया जा सकता है। लक्ष्मण झूला के समान राम झूला भी नजदीक ही स्थित है। यह झूला शिवानंद और स्वर्ग आश्रम के बीच बना है। इसलिए इसे शिवानंद झूला के नाम से भी जाना जाता है।

त्रिवेणी घाट

ऋषिकेश में स्नान करने का यह प्रमुख घाट है जहां प्रातः काल में अनेक श्रद्धालु पवित्र गंगा नदी में डुबकी लगाते हैं। कहा जाता है कि इस स्थान पर हिन्दु धर्म की तीन प्रमुख नदियों गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम होता है। इसी स्थान से गंगा नदी दायीं ओर मुड़ जाती है। शाम को होने वाली यहां की आरती का नजारा बेहद आकर्षक होता है।

राम झूला पुल

स्वामी विशुद्धानन्द द्वारा स्थापित यह आश्रम ऋषिकेश का सबसे प्राचीन आश्रम है। स्वामी जी को काली कमली वाले नाम से भी जाना जाता था। इस स्थान पर बहुत से सुन्दर मंदिर बने हुए हैं। यहां खाने पीने के अनेक रेस्तरां हैं जहां सिर्फ शाकाहारी भोजन ही परोसा जाता है। आश्रम की आसपास हस्तशिल्प के सामान की बहुत सी दुकानें हैं।

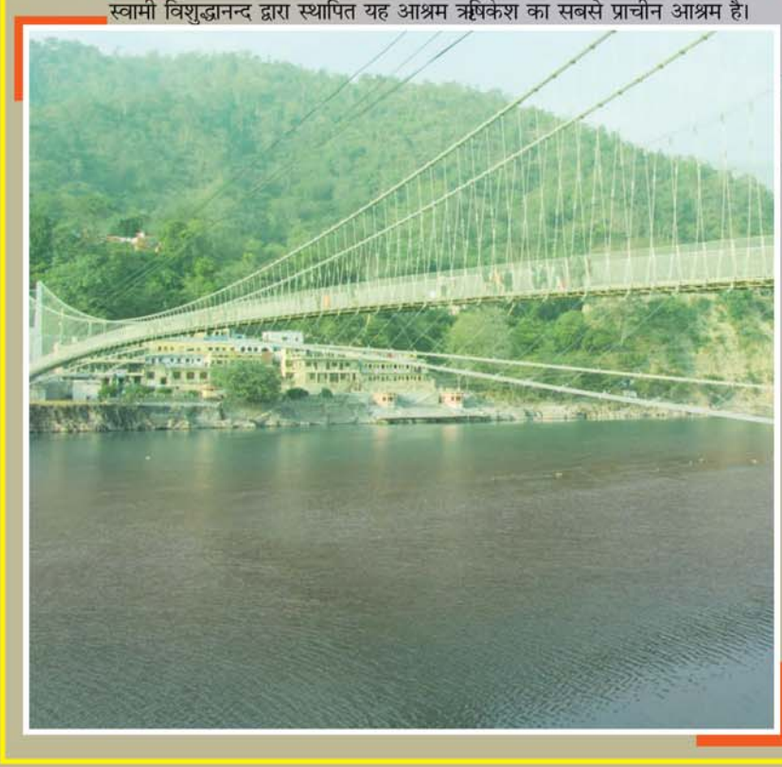

नीलकंठ महादेव मंदिर-

लगभग 5500 फीट की ऊंचाई पर स्वर्ग आश्रम की पहाड़ी की चोटी पर नीलकंठ महादेव मंदिर स्थित है। कहा जाता है कि भगवान शिव ने इसी स्थान पर समुद्र मंथन से निकला विष ग्रहण किया गया था। विषपान के बाद विष के प्रभाव के से उनका गला नीला पड़ गया था और उन्हें नीलकंठ नाम से जाना गया था। मंदिर परिसर में पानी का एक झरना है जहां भक्तगण मंदिर के दर्शन करने से पहले स्नान करते हैं।

भरत मंदिर-

यह ऋषिकेश का सबसे प्राचीन मंदिर है जिसे 12 शताब्दी में आदि गुरू शंकराचार्य ने बनवाया था। भगवान राम के छोटे भाई भरत को समर्पित यह मंदिर त्रिवेणी घाट के निकट ओल्ड टाउन में स्थित है। मंदिर का मूल रूप 1398 में तैमूर आक्रमण के दौरान क्षतिग्रस्त कर दिया गया था। हालांकि मंदिर की बहुत सी महत्वपूर्ण चीजों को उस हमले के बाद आज तक संरक्षित रखा गया है। मंदिर के अंदरूनी गर्भगृह में भगवान विष्णु की प्रतिमा एकल शालीग्राम पत्थर पर उकेरी गई है। आदि गुरू शंकराचार्य द्वारा रखा गया श्रीयंत्र भी यहां देखा जा सकता है।

कैलाश निकेतन मंदिर-

लक्ष्मण झूले को पार करते ही कैलाश निकेतन मंदिर है। 12 खंड़ों में बना यह विशाल मंदिर ऋषिकेश के अन्य मंदिरों से भिन्न है। इस मंदिर में सभी देवी देवताओं की मूर्तियां स्थापित हैं।

वशिष्ठ गुफा-

ऋषिकेश से 22 किमी. की दूरी पर 3000 साल पुरानी वशिष्ठ गुफा बद्रीनाथ-केदारनाथ मार्ग पर स्थित है। इस स्थान पर बहुत से साधु विश्राम और ध्यान लगाए देखे जा सकते हैं। कहा जाता है यह स्थान भगवान राम और बहुत से राजाओं के पुरोहित वशिष्ठ का निवास स्थल था। वशिष्ठ गुफा में साधुओं को ध्यानमग्न मुद्रा में देखा जा सकता है। गुफा के भीतर एक शिवलिंग भी स्थापित है।

गीता भवन-

राम झूला पार करते ही गीता भवन है जिसे 1950 ई. में श्रीजयदयाल गोयन्काजी ने बनवाया गया था। यह अपनी दर्शनीय दीवारों के लिए प्रसिद्ध है। यहां रामायण और महाभारत के चित्रों से सजी दीवारें इस स्थान को आकर्षण बनाती हैं। यहां एक आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरी और गीताप्रेस गोरखपुर की एक शाखा भी है। प्रवचन और कीर्तन मंदिर की नियमित क्रियाएं हैं। शाम को यहां भक्ति संगीत की आनंद लिया जा सकता है।

कैसे जाएं

वायुमार्ग-

ऋषिकेश से 18 किमी. की दूरी पर देहरादून के निकट जौली ग्रान्ट एयरपोर्ट नजदीकी एयरपोर्ट है। इंडियन एयरलाइन्स की फ्लाइटें इस एयरपोर्ट को दिल्ली से जोड़ती है।

रेलमार्ग-

ऋषिकेश का नजदीकी रलवे स्टेशन ऋषिकेश है जो शहर से 5 किमी. दूर है। ऋषिकेश देश के प्रमुख रलवे स्टेशनों से जुड़ा हुआ है।

सड़क मार्ग

दिल्ली के कश्मीरी गेट से ऋषिकेश के लिए डीलक्स और निजी बसों की व्यवस्था है। राज्य परिवहन निगम की बसें नियमित रूप से दिल्ली और उत्तराखंड के अनेक शहरों से ऋषिकेश के लिए चलती हैं।

तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए यहां सैकड़ों कमरे हैं।

खरीददारी

ऋषिकेश में हस्तशिल्प का सामान अनेक छोटी दुकानों से खरीदा जा सकता है। यहां अनेक दुकानें हैं जहां से साड़ियों, बेड कवर, हैन्डलूम फेबरिक, कॉटन फेबरिक आदि की खरीददारी की जा सकती है। ऋषिकेश में सरकारी मान्यता प्राप्त हैन्डलूम शॉप, खादी भंडार, गढ़वाल वूल और क्राफ्ट की बहुत सी दुकानें हैं जहां से उच्चकोटि का सामान खरीदा जा सकता है।

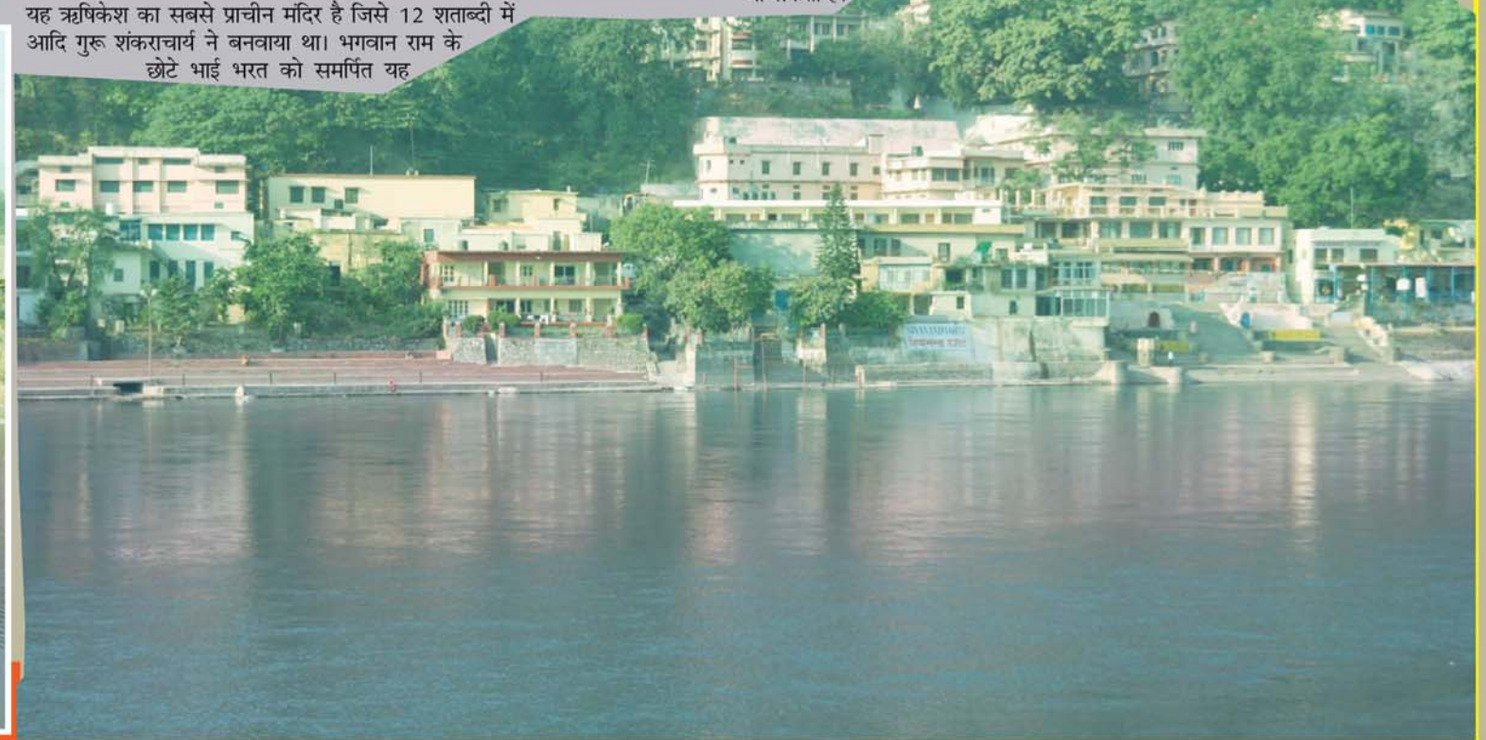

CMYK CMYK CMYK CMYK